चीन की लोक कथाएं–1

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Cheen Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of China-1)
Cover Page picture: Terracotta Warriors and Horses of China
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of China

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

चीन की लोक कथाऐं–1

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा। इस तरह एशिया संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसको सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते हैं जनसंख्या में दो देश – चीन और भारत और क्षेत्रफल में रूस। चीन अकेले की जनसंख्या **1355** मिलियन से ज़्यादा है।

इस देश की सभ्यता भी दूसरी सभ्यताओं, जैसे भारत की मोहनजोदड़ो सभ्यता, यूरोप की रोमन सभ्यता, दक्षिण अमेरिका की माया सभ्यता आदि की तरह बहुत पुरानी है। चीन में दो मुख्य नदियाँ हैं – यॉगट्सीक्यॉग और ह्वॉग हो[1] है। चीन की सभ्यता ह्वॉग हो नदी से शुरू होती है। इसको यहाँ की "पीली नदी" भी कहते हैं। इसमें हर साल बाढ़ आती है और उस बाढ़ में यहाँ के बहुत सारे लोग मारे जाते हैं।

चीन का मुख्य खाना चावल है शायद इसी लिये वहाँ चावल से सम्बधित कई लोक कथाऐं भी पायी जाती हैं। इस पुस्तक में भी चावल की एक लोक कथा दी जा रही है कि चावल का धरती पर पहले क्या रूप था और वह कैसे लोगों को मिलता था और लोग उसे कैसे खाते थे। चीन के मुख्य उद्योग रेशम और चीनी मिट्टी के बर्तन हैं।

चीन का साहित्य भी बहुत पुराना लिखा हुआ है। इनकी लोक कथाऐं और दंत कथाएँ **2000** साल से भी ज़्यादा पुरानी हैं। इनकी ये कथाऐं लिखे और कहे रूप में तबसे अभी तक चली आ रही हैं जब पिरैमिड की खबर बहुत नयी थी और स्टोनहैन्ज[2] का तो तभी हाल ही में पता चला था। चीन के साहित्य में ये कथाऐं बहुत मिल जाती हैं। चीन का पुराना साहित्य वहाँ के राजाओं के समय का है।

वहाँ के शुरू के लोग, ताओ और बौद्ध लोग[3], कहानियों के जरिये ही अपनी बातों को फैलाना ज़्यादा ठीक समझते थे। वहाँ की कहानियों में भूत, मरे हुए और स्वर्ग के जीव हमेशा से ही रहे हैं।

यहाँ इस पुस्तक के मुखपृष्ठ पर दी गयी तस्वीर के बारे में दो शब्द कहना अनुचित न होगा। चीन की दीवार को जो दुनियाँ के आठ आश्चर्यों में से एक है उसे कौन नहीं जानता। पर यह तस्वीर चीन के मशहूर पत्थर के **8000** से भी अधिक सैनिकों और घोड़ों की मूर्तियों की है। यह उस सेना की मूर्तियाँ हैं जो चीन के पहले बादशाह किन शी हुऑग[4] के साथ **210–209** बी सी में गाड़ी गयी थीं। उसी सेना की याद में ये मूर्तियाँ तीसरी सदी बी सी में बनवायीं गयीं थीं पर ये मिलीं **29** मार्च **1974** को। इसमें **8000** सिपाहियों, **150** घोड़ों और **130** रथों की मूर्तियाँ हैं। यह भी चीन की दीवार की तरह से एक प्रकार का आश्चर्य सा ही लगता है जैसे इन मूर्तियों को बनवाने की क्या जरूरत थी या फिर इनके संरक्षण की भी क्या जरूरत थी।

चाइनीज़ में एक कहावत है "बोले हुए शब्द गायब हो जाते हैं लिखे हुए शब्द रह जाते हैं"। इसी कहावत को सार्थक करते हुए यहाँ चीन की कुछ लोक कथाऐं दी जा रही हैं। अन्त में कुछ लोक कथाऐं लोमड़े से सम्बन्धित हैं। वे भी पढ़ने में आश्चर्यजनक लगती हैं। आशा है कि और लोक कथाओं की तरह से ये सब कथाऐं भी तुम लोगों को पसन्द आयेंगी।

---

[1] Yangtsikyang and Hwang Ho – Hwang Ho is the 6th largest river of the world. It is called "Yelow River" also. Since every year it brings flood there it is also known as "The Sorrow of China".

[2] Pyramids of Egypt and Stonehenge of Great Britain

[3] Tao people and Bauddh people

[4] Qin Shi Huang – the first Emperor of China

संसार के सात महाद्वीप

Some terms used in Chinese folktales –
--Crab Guard – these crabs are the guards of the Sea Dragon King who lives in the Sea
--Eastern Sea
--Jade – a semi-precious stone mostly found in South-eastern countries of Asia
--Jade Emperor – the Emperor of Sky
--Sea Dragon King – the King of the Eastern Sea

1 जादुई नाशपाती का पेड़[5]

यह बहुत समय पुरानी बात है कि एक बार चीन में एक किसान अपनी बहुत ही मीठी और रसीली नाशपातियाँ[6] बेचने के लिये बाजार गया। क्योंकि उसकी नाशपातियाँ बहुत ही मीठी और रसीली थीं इसलिये वह सोच रहा था कि उसको उनके बहुत अच्छे दाम मिल जायेंगे।

बाजार में जा कर वह एक अच्छी सी जगह देख कर अपनी नाशपातियाँ बेचने के लिये बैठ गया और आवाज लगाने लगा — "बढ़िया वाली नाशपाती ले लो, बढ़िया वाली नाशपाती ले लो।"

उसकी आवाज सुन कर एक फटे कपड़े पहने बूढ़ा साधु[7] उसके पास आया और उसने उससे एक नाशपाती माँगी।

किसान बोला — "मैं तुमको एक नाशपाती क्यों दूँ? तुम तो बहुत ही आलसी आदमी हो। और तुमने तो अपनी पूरी ज़िन्दगी में कभी एक दिन भी ईमानदारी से काम नहीं किया।"

यह सुन कर साधु को थोड़ा आश्चर्य तो हुआ पर फिर भी वह वहाँ से गया नहीं बल्कि उसने अपनी प्रार्थना फिर से दोहरायी।

[5] The Magic Pear Tree – a folktale from China, Asia. Translated from the Web Site : http://spiritoftrees.org/the-magic-pear-tree Retold by Alida Gersie

[6] Translated for the word "Pear". See its picture above

[7] Translated for the word "Monk" – this is a rank in Buddhist community

किसान उसकी इस हरकत से और गुस्सा हो गया और उसने उस साधु को और भी बुरा भला कहा।

साधु बोला — "ठीक है जनाब। मैं आपकी गाड़ी में लदी नाशपाती तो नहीं गिन सकता क्योंकि वे तो सैंकड़ों में हैं और मैंने तो आपसे केवल एक नाशपाती ही माँगी थी। फिर इतनी सी बात ने आपको इतना गुस्सा क्यों कर दिया?"

इस बीच उस किसान और साधु के चारों तरफ काफी लोग इकट्ठा हो गये। यह सोचते हुए कि उसके यह कहने से यह समस्या हल हो जायेगी उनमें से एक आदमी ने किसान से कहा — "तुम इस साधु को एक छोटी सी नाशपाती दे क्यों नहीं देते? यह बेचारा एक ही नाशपाती तो माँग रहा है। तुम्हारे पास तो सैंकड़ों में हैं।"

दूसरा बोला — "जैसा वह बूढ़ा कह रहा है वैसा ही कर दो न। केवल एक नाशपाती की ही तो बात है।"

पर किसान तो किसी की सुन ही नहीं रहा था – नहीं तो नहीं। बस।

साधु ने उस बूढ़े को सिर झुका कर धन्यवाद दिया और बोला — "तुमको तो मालूम है कि मैं एक साधु हूँ। जब मैं साधु बना था तो मैंने अपना सब कुछ छोड़ दिया था। अब न तो मेरे पास घर है और न ही मेरे पास कपड़े हैं जिनको मैं अपना कह सकूँ।

मेरे पास खाना भी नहीं है सिवाय उस खाने के जो लोग मुझे दे देते हैं। ऐसे आदमी को तुम एक नाशपाती देने से कैसे इनकार कर

सकते हो जबकि मैं तुमसे माँग रहा हूँ? मैं इतना मतलबी नहीं हो सकता जितना कि तुम मुझे समझ रहे हो।

मैं तुम सब लोगों को जो नाशपाती मैंने बोयी हैं उनको खाने का न्यौता देता हूँ। अगर तुम लोग मेरे न्यौते को स्वीकार कर लोगे तो मुझे बहुत खुशी होगी।"

यह सुन कर वहाँ खड़े सब लोग चौंक गये। वे सोचने लगे कि जब इस साधु के पास इतनी सारी नाशपाती थीं कि यह सबको खिला सकता है तो इसने इस आदमी से एक नाशपाती माँगी ही क्यों।

पर देखने में ऐसा नहीं लग रहा था जैसे उसके पास कुछ हो। तो फिर उसके कहने का मतलब क्या था?

फिर एक बड़ी उम्र वाले आदमी ने किसान से एक नाशपाती खरीद कर उसको दे दी। उस साधु ने अपनी नाशपाती बड़े ध्यान से खायी जब तक कि उसका एक बहुत ही छोटा सा बीज रह गया। नाशपाती खा कर उसने वहीं एक गड्ढा खोदा और उस बीज को उस गड्ढे में दबा दिया।

फिर उसने भीड़ से एक गिलास पानी माँगा तो एक आदमी ने उसको एक गिलास पानी दे दिया। वह पानी उसने उस बीज को दे दिया। देखते ही देखते उसमें से पहले कल्ला फूटा फिर कुछ हरी पत्तियाँ निकलीं और फिर वे पत्तियाँ भी बहुत जल्दी ही बढ़ती चली गयीं।

वहाँ खड़े लोगों को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। पर उनके आश्चर्य का तब तो बिल्कुल ही ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि उस बीज में से तो पत्तियाँ और शाखाऐं निकलती ही चली गयीं निकलती ही चली गयीं और कुछ पल में ही उनके सामने एक छोटा सा नाशपाती का पेड़ खड़ा था।

वह छोटा सा पेड़ वहीं नहीं रुका बल्कि और भी तेज़ी से बढ़ता ही जा रहा था और वे सारे लोग दम साध कर चुपचाप उस पेड़ को बढ़ता हुआ देख रहे थे।

पत्तियों और शाखाओं के बाद उसमें कलियाँ आयीं, फिर फूल आये, और फिर वह सारा पेड़ मीठी रसीली नाशपातियों से भर गया।

साधु का चेहरा खुशी से चमक उठा। उसने उस पेड़ से एक एक कर के नाशपाती तोड़ीं और भीड़ में खड़े सब लोगों को बाँट दीं। सब लोग वे नाशपाती खा कर ताज़ादम हो गये।

पर इससे पहले कि लोग यह जान पायें कि यह सब क्या हो रहा है उस साधु ने एक कुल्हाड़ी ली और उस पेड़ को काट डाला। पेड़ को उसने अपने कन्धे पर रखा और अपने रास्ते चला गया।

किसान तो यह सब देख कर बिल्कुल ही भौंचक्का रह गया। उसको तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि कुछ पल पहले एक पूरा बढ़ा हुआ नाशपाती का पेड़ उसकी अपनी नाशपाती की गाड़ी के पास खड़ा हुआ था और वह पूरा का पूरा पेड़

नाशपातियों से लदा हुआ था और अब वह पेड़ उस साधु के कन्धे पर रखा जा रहा था।

तभी उसकी निगाह अपनी नाशपाती की गाड़ी पर गयी तो उसने देखा कि उसकी अपनी गाड़ी तो खाली पड़ी थी। उसमें एक भी नाशपाती नहीं थी। बल्कि उसकी गाड़ी का एक हैन्डिल भी गायब था।

तब उस किसान को पता चला कि क्या हुआ था। उस बूढ़े साधु ने उसकी गाड़ी के एक हैन्डिल से अपनी नाशपाती का पेड़ उगाया और उसी की नाशपातियाँ उस पेड़ पर लगा दी थीं।

उसने उस साधु को इधर उधर देखने की कोशिश भी की पर वह तो उसे कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

नाशपाती का वह पेड़ जो वह साधु इतनी आसानी से काट कर ले गया था कुछ दूर जा कर सड़क के किनारे मिला। वह उसकी गाड़ी का गायब हुआ वाला हैन्डिल था।

किसान तो यह सब देख कर आग बबूला हो रहा था पर भीड़ थी कि इस पर हॅसे जा रही थी हॅसे जा रही थी।

2 जादुई तकिया[8]

बहुत पुरानी बात है कि एक दिन एक बौद्ध साधु तीर्थ यात्रा पर निकला तो रास्ते में वह एक सराय में रुका। वहाँ उसने फर्श पर बैठने के लिये अपनी चटाई बिछायी और अपना मिट्टी का खाना माँगने वाला कटोरा भी उसके पास ही रख लिया।

एक नौजवान आदमी उधर से गुजर रहा था तो वह उस साधु के उस कटोरे में एक सिक्का डालने के लिये रुका और बोला — "कितनी अजीब बात है। यह बड़ी अजीब सी बात है न कि मुझ जैसा गरीब और दुखी किसान तुम जैसे अमीर और सन्तुष्ट आदमी को दान दे रहा है?"

साधु बोला — "तुम तो अच्छे खाये पिये और काफी तन्दुरुस्त लगते हो फिर तुम दुखी क्यों हो?"

नौजवान बोला — "मैं सुखी कैसे हो सकता हूँ? मैं तो केवल एक साधारण किसान की तरह रोज सारा दिन जमीन जोतता हूँ और उसी से अपना और अपने परिवार का पेट पालता हूँ। मैं दुनियाँ में कुछ बनना चाहता हूँ, न कि साधारण किसान की तरह से जीना।" इतना कह कर उसने एक ठंडी साँस भरी।

[8] The Magic Pillow – a folktale from China, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=176
Retold and written by Mike Lockett

वह फिर बोला — “मैं एक बड़ा लड़ने वाला बनना चाहता हूँ, एक बड़ा जनरल। या फिर एक अमीर आदमी जिसके पास खूब बढ़िया खाना हो और खूब कीमती कपड़े हों। या फिर मैं राजा के दरबार में बहुत ऊँचा ओहदा पाना चाहता हूँ। बस मैं खूब बड़ा और कोई बहुत ही ऊँचा आदमी बनना चाहता हूँ।”

जब वह नौजवान ये सब बातें कर रहा था तो उसको नींद आने लगी सो वह उस साधु की चटाई पर ही बैठ गया। फिर वह कुछ झुक सा गया, फिर लेट गया और फिर जल्दी ही सो भी गया।

यह देख कर कि वह नौजवान वहीं सो गया है, उस साधु ने उसके सिर के नीचे एक तकिया रख दिया और बोला — “बुद्ध के एक शिष्य की तरफ से यह भेंट तुम्हारी सब इच्छाऐं पूरी करे। जब तुम इस तकिये पर लेटो तो यह तकिया तुम्हारी सब इच्छाओं को पूरा करे।”

जब वह नौजवान सुबह जागा तो वह तो बड़े आश्चर्य में पड़ गया। वह तो अपने घर में था। कुछ समय बाद उसने एक बहुत सुन्दर लड़की से शादी कर ली।

उस साधु की दुआओं से वह अपने खेत से पहले से कहीं बहुत ज़्यादा पैसा कमाने लगा। उस ज़्यादा पैसे से उसने और जमीन खरीद ली। अपनी सहायता के लिये खेत पर काम करने के लिये उसने और ज़्यादा मजदूर रख लिये।

धीरे धीरे वह एक बहुत बड़ा और एक बहुत अमीर आदमी बन गया। उसने अपना खाली समय पढ़ने में लगाया तो वह एक मजिस्ट्रेट बन गया और दूसरों के ऊपर राज करने लगा।

एक दिन राजा ने उसको अपने दरबार में काम करने के लिये बुला लिया। तो अब तो वह अपने शहर का एक बहुत ही खास आदमी बन गया था।

उसके बाद उसके साथ बुरी घटनाऐं घटनी शुरू हुईं। उसके ऊपर धोखाधड़ी का झूठा इलजाम लगाया गया। उसको दूसरे की गलतियों की सजा मिलने लगी। उसको मारने की सजा दे दी गयी। उसकी पत्नी और उसके दोस्त उसको छोड़ कर चले गये। उसको बहुत बुरा और अकेला लगने लगा।

जब उसको मारने के लिये ले जाया जा रहा था तो वहाँ उसने पत्थर पर झुक कर यह इच्छा की — "काश मैं एक साधारण सा किसान ही होता।"

उसकी गर्दन उस मारने वाले पत्थर पर थी और उसका सिर एक टोकरी के ऊपर लटका हुआ था। जल्लाद ने उसका गला काटने के लिये अपनी तलवार उठायी।

किसान ने डर कर अपनी आँखें खोलीं तो वह क्या देखता है कि वह तो उस बौद्ध साधु के सामने बैठा हुआ है जिसको उसने सिक्का दिया था।

वह फिर से जवान हो गया था। वह अब शाही कपड़े नहीं पहने था बल्कि वही अपने पुराने वाले साधारण किसान वाले कपड़े ही पहने था।

वह अब उस जल्लाद के सामने भी सिर नहीं झुकाये था। उसने सिर उठा कर ऊपर देखा तो उसके सिर पर अब तलवार भी नहीं थी। उसके सामने तो वह बौद्ध साधु मुस्कुराता हुआ अपनी सराय के सामने बैठा था।

तब उस नौजवान ने उस बौद्ध साधु को अपनी कहानी सुनायी और वह बौद्ध साधु उसकी कहानी मुस्कुराते हुए सुनता जा रहा था। जब उस नौजवान ने अपनी कहानी खत्म कर ली तभी उसको यह पता चला कि वह सब इसी साधु ने ही उसे दिया था।

उस साधु ने उसको फिर यह भी दिखाया कि अगर उसका सपना पूरा हो गया होता तो उसकी और आगे की ज़िन्दगी कैसी होती।

नौजवान ने उसको धन्यवाद दिया और बोला — "आपने मुझे इस जादुई तकिये को इस्तेमाल करा कर बहुत ही अच्छी सीख दी है। मैंने देख लिया कि बड़ा और अमीर आदमी बन कर क्या होता है और अब मुझे बड़ा और अमीर आदमी बनने की कोई इच्छा नहीं है।"

और वह उस साधु को सिर झुका कर खुशी खुशी अपने घर लौट गया।

3 चीते की गुरू[9]

चीता[10] उस जंगल का एक बहुत ही मजबूत जानवर था। वह बहुत तेज़ भागता था, वह बहुत ज़ोर से बोलता था पर बस शानदार तरीके से चल नहीं पाता था। अपनी ताकत और तेज़ भागने के बाद भी वह छोटे छोटे शिकार भी नहीं पकड़ पाता था।

अक्सर बहुत सारी रातों को वह बिना शिकार लिये ही घर वापस आ जाता और इस तरह वह बेचारा भूखा ही सो जाता।

एक दिन एक सुबह वह शिकार पर गया तो उसने एक बिल्ली को एक चूहे का पीछा करते और उसको पकड़ते देखा।

बिल्ली बहुत तेज़ थी और शानदार थी। वह बहुत ही शान से और शान्ति से चल रही थी और उसने अपना शिकार बहुत ही आसानी से पकड़ लिया था।

---

[9] The Tiger's Teacher – a folktale from China, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=224
Retold and written by Mike Lockett
[My Note: This story can be traced back to the stories – "Cat Teaches All Tricks Except One" and "Why Tiger Lacks Some Qualities of Cats"]

[10] Translated for the word "Tiger". See its picture above.

चीते ने सोचा — "काश वह भी इतनी ही शानदार तरीके से चल पाता और अपना शिकार पकड़ पाता जैसे यह बिल्ली पकड़ती है।" सो उसने यह सब बिल्ली से सीखने का इरादा किया।

वह उस बिल्ली के पास गया और बोला — "बिल्ली बहिन, क्या तुम मुझे इसी तरह से शानदार तरीके से चलना सिखाओगी जैसे तुम चलती हो? और क्या तुम मुझे इसी तरह से शिकार करना भी सिखाओगी जैसे तुम करती हो?"

बिल्ली बोली — "पर मुझे यह कैसे यकीन हो कि जो तरीके मैं तुम्हें सिखाऊँगी वह तुम अपने खाने के लिये मेरा ही शिकार करने के लिये इस्तेमाल नहीं करोगे?"

चीता बोला — "क्या तुम सोचती हो कि मैं अपने ही परिवार[11] के लोगों को नुकसान पहुँचाऊँगा? मैं उसको कैसे नुकसान पहुँचा सकता हूँ जो मेरा रिश्तेदार हो।

अगर तुम मेरी सहायता करोगी तो मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। मैं खुद तो क्या मैं तो किसी और को भी तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचाने दूँगा।"

चीते ने उससे प्रार्थना की — "तुम मेरी गुरू बन जाओ। और फिर अगर मैं तुम्हारे सिर के एक बाल को भी कोई नुकसान पहुँचाऊँ तो मैं जंगल के सारे जानवरों की बद्दुआ लूँ।"

[11] Cheeta, tiger, lion and cat are all counted in the family of cat.

उसने बिल्ली के सामने यह दिखाने की अपनी पूरी पूरी कोशिश की कि वह उससे सच बोल रहा था। आखिर बिल्ली ने उसकी बातों का विश्वास कर लिया और उसकी सहायता करने पर राजी हो गयी।

बिल्ली ने उसको शरीर को तोड़ने मरोड़ने[12] का अभ्यास कराया, उसको बिना आवाज किये चुपचाप चलना सिखाया। बिल्ली एक बहुत ही अच्छी गुरू थी। उसने चीते को शिकार करने की बहुत सारी चालें सिखायीं।

उसने चीते को जो कुछ भी वह जानती थी वह सभी कुछ सिखाने की पूरी पूरी कोशिश की, सिवाय एक होशियारी के – और वह थी पेड़ पर चढ़ने की कला।

उधर चीता भी एक अच्छा शिष्य था। उसने भी जो कुछ बिल्ली ने उसको सिखाया सब कुछ बहुत अच्छे तरीके से सीखा। बहुत जल्दी ही वह सब कुछ सीख गया और ताकतवर भी हो गया, तेज़ भी हो गया और अपनी चाल में भी बहुत शान्त हो गया।

अब वह एक बड़े शिकारी की तरह शिकार करने के लिये तैयार था। वह खाने के लिये तैयार था। उसने बिल्ली की तरफ देखा तो बिल्ली तो उसको देखने में ही बहुत स्वादिष्ट लगी – मोटी और मुलायम।

[12] Translated for the word “Gymnastics”

बिल्ली ने भी चीते की तरफ देखा तो चीता मुस्कुराया और उसने उसको अपने दाँत दिखाये। बिल्ली को देख कर चीते के मुँह में पानी आ रहा था और वह उसके मुँह के एक तरफ से बाहर भी बह रहा था।

बिल्ली जान गयी कि चीते के ऊपर अब विश्वास नहीं किया जा सकता था।

वह बोली — "अब तुम्हारे सब सबक खत्म हो गये हैं। मैंने तुमको जो कुछ भी मैं सिखा सकती थी सब कुछ सिखा दिया है।"

चीता बोला — "क्या तुमको पूरा यकीन है कि तुमने मुझे वह सब कुछ सिखा दिया जो कुछ तुम जानती थी, ओ मेरी गुरू? क्या अब तुम्हारे पास मुझे सिखाने के लिये और कुछ भी नहीं बचा?"

जैसे जैसे चीता यह सब उस बिल्ली से कह रहा था उसके पंजे आगे बढ़ रहे थे। वह बिल्ली के पास आता जा रहा था। तुरन्त ही चीते ने अपना मुँह खोला और हवा में कूद गया। ओह, चीता तो बहुत तेज़ था।

बिल्ली को भागने का समय ही नहीं मिला सो वह भागने की बजाय पास वाले पेड़ पर चढ़ गयी। वह उस पेड़ पर जितनी ऊँची चढ़ सकती थी चढ़ती चली गयी।

बिल्ली ने सोचा "यह तो बहुत ही अच्छा हुआ कि मैंने चीते को पेड़ पर चढ़ना नहीं सिखाया वरना मैं तो आज गयी थी।"

चीता बहुत कूदा, बहुत गुर्राया, उसने पेड़ पर चढ़ने के लिये पेड़ की छाल पर अपने पंजे भी मारे, उसने बिल्ली की सिखायी हर चाल आजमायी पर वह पेड़ पर न चढ़ सका।

बिल्ली भी एक शाख से दूसरी शाख पर और फिर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर भागती चली गयी जब तक कि उसने चीते को बहुत पीछे नहीं छोड़ दिया।

चीता बहुत शर्मिन्दा हुआ। जो कुछ उसका गुरू उसको सबसे अच्छा सिखा सकता था उसको सीखने के रास्ते में उसकी भूख और लालच आ गया था इसी लिये वह उससे सब कुछ नहीं सीख सका और अपना पहला शिकार भी खो बैठा।

इस कहानी से हमको दो सीख मिलती हैं। पहली यह कि विद्यार्थी को अपने सीखने के रास्ते में किसी भी चीज़ को नहीं लाना चाहिये वरना उसकी पढ़ाई अधूरी रह जाती है।

और दूसरी यह कि किसी को कुछ भी सिखाते समय अपने बचाव का तरीका अपने पास जरूर रखना चाहिये ताकि अपनी सुरक्षा अपने आप की जा सके।

4 नये जूते[13]

एक बार की बात है कि एक आदमी को नये जूते चाहिये थे। इस आदमी का हिसाब बहुत अच्छा था। उसको मालूम था कि अगर उसे ठीक जूता चाहिये तो उसे अपना पैर ठीक से नापना चाहिये।

अब इस आदमी को नापना भी बहुत अच्छा आता था और इसको चीज़ों की तस्वीर भी बहुत अच्छी बनानी आती थी। इसकी बनी हुई तस्वीर बहुत सही होती थी। सो बाजार जाने से पहले एक कागज पर उसने अपने पैर की एक बहुत ही बड़ी तस्वीर बनायी।

उसने अपना पैर ठीक से नापा और उस नाप को उस कागज पर ठीक से लिख दिया। और फिर घर से निकलने से पहले एक अच्छे हिसाब जानने वाले की तरह उसने उन संख्याओं को फिर से एक बार देख लिया कि वे ठीक हैं कि नहीं।

उसके घर से उस बाजार का रास्ता बहुत लम्बा था जहाँ से उसको जूता खरीदना था। जब तक वह बाजार पहुँचा तब तक दोपहर हो चुकी थी।

पर जब वह जूते वाले की दूकान पर पहुँचा तो उसे याद आया कि वह अपना वह कागज तो घर पर ही भूल आया है जिस पर

---

[13] The New Shoes – a story from China, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=81
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
Source – Story Arts Online by Heather Forest sites the original source to be Han Fei. Thanks to Heather and to Han Fei for preserving this tale.

उसने अपने पैर का नाप लिखा था। बिना उस कागज के वह जूता कैसे खरीदेगा यह सोच कर वह बेचारा उस कागज को लाने के लिये उलटे पैरों घर वापस लौट पड़ा।

जब वह दोबारा वापस बाजार लौटा तो शाम हो चुकी थी। बाजार भी बन्द हो रहा था। जूते वाली दूकान के मालिक ने अपने सारे जूते डिब्बों में बन्द कर दिये थे और अब घर जाने की तैयारी में था।

उसने जूते वाले से कहा कि वह अपने जूते खोले और उसको एक जूता बेचे। उसको जूता बहुत जरूरी चाहिये था।

जूते वाला बोला — "ओ बेवकूफ़ आदमी, जब तुम यहाँ पहली बार आये थे तभी तुमने मेरी दूकान में आ कर जूता क्यों नहीं खरीदा? तुमको अपने पैर का नाप का नक्शा लाने के लिये घर जाने की जरूरत ही क्या थी? तुम तो खुद ही यहाँ मौजूद थे।"

यह सुन कर उस आदमी ने शर्म से अपना सिर झुका लिया और बोला — "मुझे लगा कि मेरी समस्या को सुलझाने का केवल एक ही तरीका था। मुझे अपनी समस्या को सुलझाने के लिये दूसरों की भी राय ले लेनी थी कि शायद उनके पास मेरे हल से कोई और ज़्यादा अच्छा हल होता।"

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमको किसी एक सवाल को हल करने के कई तरीके आने चाहिये।

हमारी यह आगे बढ़ती दुनियाँ इतनी सारी समस्याओं से भरी हुई है कि हमको एक समस्या को कई तरीके से सुलझाना आना चाहिये ताकि उस समस्या को सुलझाने का अगर हमारा एक तरीका काम न करे तो दूसरा तरीका इस्तेमाल किया जा सके।

5 टिक्की टिक्की टैम्बो[14]

एशिया महाद्वीप के चीन देश के लोग पहले बहुत लम्बे लम्बे नाम रखते थे पर वहॉ की यह लोक कथा यह बताती है कि वहॉ के लोगों ने अपने नाम लम्बे लम्बे रखना क्यों छोड़ा। यह एक हॅसी की लोक कथा है। लो इसे पढ़ो और हॅसो।

एक बार बहुत पुराने समय में चीन देश में एक परिवार में दो बेटे रहते थे। उनमें से बड़े बेटे का नाम जिसको परिवार का सारा पैसा मिलने वाला था बहुत लम्बा रखा गया जैसा कि किसी बड़े बेटे का नाम होना चाहिये था।

उसका नाम था – टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो[15]। और दूसरे बेटे को जिसको दुनियॉ में अपनी रोजी रोटी खुद कमानी थी और जो इतना खास नहीं था उसको पिंग नाम दे दिया गया। पर यह इसलिये ऐसा नहीं था कि वह उनके बड़े बेटे जितना प्यारा नहीं था पर बस वहॉ की कुछ रीति ही ऐसी थी।

ये दोनों भाई आपस में बहुत अच्छे दोस्त भी थे और आपस में एक दूसरे के साथ खेलना भी बहुत पसन्द करते थे।

---

[14] Tikki Tikki Tembo – a folktale from China, Asia. Translated from the Web Site : http://americanfolklore.net/folklore/2012/07/tikki_tikki_tembo.html
Adopted, retold and written by SE Schlossler

[15] Tikki Tikki Tembo No Sarembo Hari Kari Pi Chi Pip Peri Pembo.

एक दिन वे दोनों भाई टेग का खेल खेल रहे थे कि छोटा पिंग नदी के पास भीगी जमीन पर फिसल गया और नदी में गिर पड़ा। यह देख कर टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो डर गया। दोनों में से किसी भी भाई को तैरना नहीं आता था।

टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो तुरन्त ही चिल्लाता हुआ घर दौड़ा गया — "माँ माँ, पिंग नदी में गिर पड़ा है।"

माँ यह सुन कर परेशान हो गयी और बोली — "चलो जा कर तुम्हारे पिता को बताते हैं।"

सो माँ और टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो दोनों पिता को ढूँढने खेत पर पहुँचे।

वहाँ पहुँच कर टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो चिल्लाया — "पिता जी पिता जी, पिंग नदी में गिर गया है।"

पिता भी परेशान सा चिल्लाया — "क्या? पिंग नदी में गिर गया है? चलो हमको अपने पड़ोसी की नाव ले कर उसको नदी में से निकालने के लिये जाना चाहिये।"

सो टिक्की टिक्की टैम्बो नो सैरेम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो, उसकी माँ और उसके पिता तीनों पड़ोसी की नाव लेने पड़ोसी के घर पहुँचे।

पिता बोला — "ओ पड़ोसी, हमारा पिंग नदी में गिर पड़ा है। क्या हम उसको निकालने के लिये तुम्हारी नाव उधार ले सकते हैं?"

पड़ोसी भी चिल्लाया — "क्या? पिंग नदी में गिर पड़ा है? यह तो बहुत बुरा हुआ। तुम मेरी नाव ले जाओ और तुरन्त जा कर पिंग को बचाओ।"

सो तीनों पड़ोसी की नाव ले कर नदी की तरफ गये और पिंग को जो करीब करीब डूब सा ही गया था बचा लिया।

कुछ हफ्ते बाद टिक्की टिक्की टैम्बो नो सैरेम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो और पिंग दोनों कुँए से पानी भर रहे थे कि टिक्की टिक्की टैम्बो नो सैरेम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो उस कुँए में बहुत नीचे तक झुक गया और कुँए में गिर गया।

यह देख कर पिंग को चिन्ता हो गयी क्योंकि दोनों भाइयों में से कोई भी तैरना नहीं जानता था। पिंग चिल्लाता चिल्लाता माँ के पास भागा गया — "माँ माँ, टिक्की टिक्की टैम्बो नो सैरेम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो कुँए में गिर गया है।"

मॉ चिल्लायी — "अरे, क्या टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो कुँए में गिर पड़ा है? चलो चल कर तुम्हारे पिता को बतायें।"

सो दोनों टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो के पिता को ढूँढने गये। उनके पिता अपने वर्कशाप में रसोईघर के लिये एक मेज बना रहे थे।

वहॉ जा कर उन्होंने पिता को बताया कि टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो कुँए में गिर पड़ा है।

यह सुन कर पिता भी चिन्तित हो कर बोला — "क्या? टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो कुँए में गिर पड़ा है? चलो हम अपने माली से सीढ़ी मॉगते हैं और टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो को बचाते हैं।"

तीनों माली से सीढ़ी मॉगने गये। वे माली से बोले — "टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो कुँए में गिर पड़ा है हमें अपनी सीढ़ी दे दो हमको उसे कुँए में से निकालना है।"

माली भी चिल्लाया — "अरे, क्या टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो कुँए में गिर पड़ा है। बड़ी खराब बात है। हॉ हॉ तुम मेरी सीढ़ी ले जाओ और उसको जल्दी से जा कर बचाओ।"

सो पिता ने माली की सीढ़ी उठायी और उसको टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो को बचाने के लिये कुॅए में लगायी।

पर टैम्बो का नाम लेने में सबको इतनी देर लगी कि पिता को वहॉ तक आने में ही देर हो गयी और तब तक तो टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो तो कुॅए में डूब चुका था।

तबसे चीन के लोग छोटे नाम ही रखते हैं।

6 एक चीनी परी कथा[16]

टिकीपू यों तो बहुत बड़ा बेवकूफ था परन्तु कला के लिये उसके दिल में बहुत प्रेम था। उसका मालिक जिसके यहाँ वह काम करता था वह एक बहुत बड़ा कलाकार था।

उसके पास कई विद्यार्थी आते थे जिनको वह कला सिखाता था। वे विद्यार्थी रोज वहाँ आते और उसका कमरा उसके विद्यार्थियों के नये नये चित्रों से जगमगाता रहता। उसके कमरे की दीवारों पर पुराने मरे हुए कलाकारों के चित्र भी टॅगे रहते थे।

टिकीपू इसी चित्रशाला में काम करता था। वह रोज उसकी झाड़ पोंछ और सफाई करता और जो लोग उसमें काम करते थे वह उनके रंग पीसता था, ब्रश साफ करता था और उनके दूसरे छोटे मोटे काम करता था। उनको बाहर की दूकान से खाने का सामान ला कर देता।

वह खुद डबल रोटी के टुकड़े खा कर रहता जो उसके मालिक के विद्यार्थी चित्रशाला में ले कर आते और फिर फर्श पर फेंक देते थे और फिर रात को वहीं उसी फर्श पर सो जाता।

टिकीपू अन्धों की सहायता करता, खिड़की और टूटे हुए शीशे ठीक करता जो विद्यार्थी लोग उस पर ब्रश मार मार कर तोड़ देते।

[16] A Chinese Fairy Tale – a folktale from China, Asia

वह उनके लिये चित्र बनाने के लिये कागज ले कर आता और किसी किसी आलसी विद्यार्थी के रंग भी मिलाता। उस समय उसको बड़ी खुशी होती और उसको भी लगता कि वह भी एक कलाकार है।

कभी पीला तो कभी हरा, तो कभी नीला और कभी जामुनी रंग जब वह बनाता तो वह खुद भी खुशी के मारे चिल्ला सा उठता।

यह सब करते समय वह अपने मालिक का भाषण भी सुन रहा होता। उसे सभी पेन्टरों और उनके स्कूलों के नाम जबानी याद हो गये थे जो उसका मालिक अपने भाषण में बोलता था।

उनमें से सबसे बड़ा पेन्टर वियोवानी[17] जो **300** साल पहले हुआ था वह उसको बहुत अच्छी तरह याद था। उसका एक चित्र भी उसके मालिक की चित्रशाला में टॅगा हुआ था।

वह चित्र उसको इतना अच्छा लगता था कि उस चित्र पर वह दुनियॉ भर की दौलत वार सकता था। उस चित्र की वह कहानी भी वह जानता था जो उसके बारे में कही जाती थी। वह कहानी उसके लिये उतनी ही पवित्र थी जितनी कि उसके पुरखों की कब्र।

वियोवानी ने उस चित्र को अपने जीवन के आखिरी दिनों में बनाया था। उस चित्र में एक बागीचा था जिसमें पेड़ ही पेड़ थे और थी धूप, ऊॅचे लगे फूल और हरे भरे रास्ते और इन सबके बीच में

[17] Viovanni – name of the artist

था एक महल। वियोवानी ने उस चित्र को पूरा करने के बाद कहा था — "यह वह महल है जहाँ मैं आराम करना चाहूँगा।"

वह चित्र इतना सुन्दर था कि चीन के बादशाह खुद उसको देखने आये थे और देर तक उस शान्त रास्ते को देखते रहे और फिर एक आह भर कर बोले — "काश, मैं भी किसी ऐसी ही जगह आराम कर सकता।" तब वियोवानी उस चित्र में घुसा और उस शान्त रास्ते पर दूर तक चलता चला गया।

दूर जा कर उसने महल का दरवाजा खोला और बादशाह को बुलाया मगर बादशाह नहीं गये तो वह खुद ही उसके अन्दर चला गया और इस दुनियाँ और अपने बीच का दरवाजा उसने हमेशा हमेशा के लिये बन्द कर लिया।

यह **300** साल पुरानी बात थी मगर टिकीपू को यह आज भी इतनी ताजा लगती थी जैसे कल की ही बात हो। जब वह अकेला चित्रशाला में होता था तो वह अक्सर उस चित्र को घूरता रहता जब तक कि बिल्कुल ही ॲधेरा नहीं हो जाता।

फिर उसकी ॲगलियाँ उस महल का दरवाजा खटखटातीं और टिकीपू पूछता — "वियोवानी, क्या तुम अन्दर हो?"

धीरे धीरे टिकीपू इस जीवन का आदी हो गया और वह सोचने लगा कि जो चित्रकला के सारे काम कर सकता था वह किसी दिन एक बड़ा चित्रकार जरूर बनेगा।

वह सुबह जल्दी ही उठ जाता और विद्यार्थियों के आने तक चित्र बनाने का अभ्यास करता। उसका अभ्यास दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा था यहाँ तक कि अब वह मोमबत्ती के टुकड़े चुराने लगा था जो विद्यार्थी वहाँ अँधेरे में काम करने के लिये लाया करते थे।

कोई विद्यार्थी कहता — "अरे, कल तो मैं अपनी जगह पर अपनी मोमबत्ती छोड़ कर गया था, कहाँ गयी वह? लगता है टिकीपू ने चुरा ली।"

इस पर वह जवाब देता — "हाँ हाँ मैंने ही उसे चुराया है। मुझे भूख लगी थी और मैंने उसे खा लिया।" उसकी बात का विश्वास कर लिया जाता पर कभी कभी उसे मार भी पड़ती।

अपने कोट के फटे अस्तर के अन्दर वह मोमबत्ती के छोटे छोटे टुकड़ों की खटपट सुनता रहता। कभी कभी वह डर जाता कि कहीं उसकी यह चोरी कि वह मोमबत्ती के टुकड़े इकट्ठे करता है, पकड़ी न जाये। लेकिन ऐसा कभी हुआ नहीं।

रात को जब वह देखता कि सब सो गये होंगे तब वह एक मोमबत्ती लगाता और उसकी रोशनी में चित्रकारी करता रहता जब तक कि सुबह न हो जाती।

टिकीपू अपनी होने वाले अभ्यास से बहुत सन्तुष्ट था फिर भी उसकी यह इच्छा थी कि अगर वियोवानी उसको सिखाने आये तो वह एक अच्छा चित्रकार बन सकता था।

एक दिन वह वियोवानी के चित्र के सामने बैठ गया और वैसा ही चित्र बनाने की कोशिश करने लगा। उसने अपनी ऑखों को काफी गड़ा गड़ा कर देखा परन्तु उसकी बारीकियॉ उसकी समझ से बाहर थीं।

किस प्रकार उस चित्र में पेड़ एक के पीछे एक खड़े थे जिनमें से धूप झॉक रही थी, कैसे वह रास्ता घूमता हुआ उस महल तक जाता था, आदि आदि देख कर उसकी ऑखों से ऑसू गिरने लगे।

तभी महल का दरवाजा खुला और उसमें से एक छोटा बूढ़ा आदमी उसी रास्ते से उसकी ओर आने लगा। टिकीपू के दिमाग में बिजली सी दौड़ गयी — "अरे यह तो वियोवानी ही हो सकता है और कोई नहीं।"

उसने तुरन्त अपनी टोपी फेंक दी और आदर से फर्श पर लेट गया।

जब उसने दोबारा सिर उठाया तो वियोवानी उसके पास ही खड़ा था, वह बोला — "टिकीपू, आओ मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें चित्रों में रंग भरना सिखाऊॅगा। मैं अपनी खिड़की से तुम्हें चित्र बनाते देख रहा था।"

वियोवानी और टिकीपू दोनों उस चित्र में चल दिये। महल के पास पहॅुच कर वियोवानी ने दरवाजा खोला। टिकीपू ने आश्चर्य से मॅुह फाड़ते हुए कहा — "क्या मैं कुछ पूछ सकता हॅू?"

"हॉ हॉ पूछो, क्या बात है?"

"क्या वह बादशाह पागल नहीं था जो आपके पीछे पीछे नहीं आया?"

"यह तो मैं नहीं जानता, पर हॉ मैं इतना जरूर कह सकता हूँ कि वह कलाकार नहीं था।"

दोनों महल के अन्दर चले गये और बाहर मोमबत्ती अपने आप बुझ गयी।

जब तक टिकीपू बाहर आया सुबह हो चुकी थी। वह भागा भागा हरे भरे रास्ते से हो कर आ रहा था, चौखटे में से कूद कर। उसने जल्दी जल्दी फर्श साफ करना शुरू किया। मालिक और विद्यार्थियों के आने से पहले ही उसने अपना काम खत्म कर लिया।

सारा दिन वे लोग अपना बॉया कान खुजाते रहे। उनको तो कुछ मालूम नहीं था कि वे ऐसा क्यों कर रहे थे मगर टिकीपू जानता था कि वे ऐसा क्यों कर रहे थे।

क्योंकि वह अपने आपसे ही उनके और उनके कीमती चित्रों के बारे में बातें करता रहा था और जैसे ही उसने उनके रंग पीसे, ब्रश धोये और डबल रोटी के टुकड़े खाये तो सारे विद्यार्थी पहचान गये कि आज टिकीपू कुछ बदला बदला सा है।

टिकीपू के मालिक ने भी टिकीपू में यह बदलाव देखा परन्तु यह बदलाव डॉटने फटकारने वाला बदलाव नहीं था इसलिये उसने सोचा "लगता है रात में इसका दिमाग खराब हो जाता है।"

पर एक रात मालिक को पता चल ही गया कि रात को उसकी चित्रशाला में क्या क्या होता है। एक रात मालिक लैम्प ले कर यह देखने के लिये बाहर निकला कि शायद रात को टिकीपू कहीं जाता हो।

पर कुछ देर बाद ही उसने देखा कि चित्रशाला की खिड़की से धीमी धीमी रोशनी आ रही थी इसलिये उसने पास आ कर खिड़की का शीशा ज़रा सा उठाया और उसके छेद में से अन्दर झॉका।

उसने देखा कि अन्दर एक मोमबत्ती जल रही थी और टिकीपू हाथ में रंग और ब्रश लिये वियोवानी के आखिरी चित्र के सामने खड़ा था।

मालिक सोचने लगा — "ओह मैंने अपनी आस्तीन में कितना बड़ा सॉप पाल रखा है। लगता है यह तो बहुत बड़ा चित्रकार बनने की सोच रहा है। फिर तो यह मेरी इज़्ज़त रोजी रोटी सब खत्म कर देगा।"

अब वियोवानी अपने महल के दरवाजे में से रास्ते पर आ रहा था जैसा कि वह हर रात करता था। वह आया और उसने टिकीपू को बुलाया।

और यह देख कर टिकीपू के मालिक की तो चीख ही निकलते निकलते बची जब उसने देखा कि टिकीपू वियोवानी का हाथ पकड़ कर चित्र के चौखटे में कूद गया और उसके साथ साथ हरे हरे रास्तों पर जाता हुआ महल के दरवाजे में घुस गया।

कुछ देर के लिये तो टिकीपू का मालिक डर के मारे जम सा गया — "अरे ओ जहरीले साँप, क्या तुम यही सीखते हो स्कूल में? तुम उस चित्र के अन्दर जाने की हिम्मत ही कैसे कर सके जो मैंने अपनी खुशी और फायदे के लिये खरीदा था। तुम्हें जल्दी ही पता चल जायेगा कि यह किसका चित्र है।"

मालिक खिड़की से कूद कर अन्दर पहुँचा और जल्दी जल्दी वियोवानी के उस चित्र पर काम करने लगा। रंग और ब्रश से उस ने महल के दरवाजे की जगह एक दीवार रंग दी जिससे महल का दरवाजा बन्द हो गया।

दीवार को एक बार रंग कर उसे सन्तुष्टि नहीं हुई सो उसने उसे दोबारा रंग दिया। अब वह दीवार दोहरी हो गयी थी। अब वह सन्तुष्ट था और टिकीपू को विदा कर घर वापस आ गया।

अगले दिन सभी विद्यार्थियों को बड़ा आश्चर्य हुआ जब उन्होंने टिकीपू को नहीं देखा। क्या हुआ टिकीपू का? परन्तु क्योंकि मालिक चुप था और उसने एक और नया लड़का वहाँ के कामों के लिये रख लिया था इसलिये वे सभी उसे जल्दी ही भूल गये।

अब चित्रशाला में मालिक आराम से बैठता था और कभी कभी चित्र में बनी उस दीवार पर नजर डाल लिया करता था जो उसने खुद बनायी थी। दिन बीतते गये और फिर इस बात को पाँच साल भी बीत गये।

एक दिन मालिक अपने विद्यार्थियों को वियोवानी की चित्रकारी के बारे में बता रहा था। अपनी बातों को ज़्यादा अच्छी तरह समझाने के लिये वह वियोवानी के उस चित्र के पास जा कर हाथ हिलाने लगा और उसके चारों ओर उसके विद्यार्थी खड़े थे कि यकायक वह बीच में ही रुक गया।

उसने देखा कि एक हाथ उस दीवार की सबसे ऊपर की ईंट हटा रहा था जो उसने खुद बनायी थी। अगले ही पल ईंटों की वह दोहरी दीवार गिर पड़ी। मालिक के मुँह से डर के मारे एक शब्द भी नहीं निकल पा रहा था। वह और उसके विद्यार्थी सभी चुपचाप खड़े दीवार गिरने का तमाशा देख रहे थे।

मालिक वियोवानी को पहचान गया। उसके पीछे पीछे उसको टिकीपू दिखायी दिया। टिकीपू अब बड़ा और सुन्दर हो गया था मगर उसके मालिक ने उसे फिर भी पहचान लिया।

मालिक उसको ईर्ष्या की नजर से देख रहा था क्योंकि उसकी दोनों बगलों में उसके बहुत सारे चित्र थे। और यह तो साफ ही था कि टिकीपू अब एक बड़ा चित्रकार हो गया था और अब इस संसार में वापस आ रहा था।

वे दोनों हरे भरे रास्ते से चले आ रहे थे। बुढ़ापा और जवानी का अच्छा साथ दिखायी दे रहा था। वियोवानी के हाथ में एक ईंट थी जिसको वह दरवाजे से ही अपने साथ ला रहा था।

उसने चौखटे के पास आ कर मालिक से पूछा — "तुमने वैसा क्यों किया?"

"मैंने? मैंने? कुछ भी तो नहीं।" मालिक जवाब देने वाला ही था कि उसकी बनायी ईंट उसी के सिर पर आ पड़ी।

चौखटे के अन्दर टिकीपू वियोवानी से विदा ले रहा था जिसने पॉच साल में ही उसको सारी कला सिखा दी थी — "अब मैं तुम्हारे अन्दर जन्म ले कर इस संसार में आ रहा हूँ। तुम थक जाओ तो मेरे पास चले आना मैं तुम्हें अन्दर बुला लूँगा।"

टिकीपू रो रहा था। उसके ऑसू उसके गालों से नीचे बहे जा रहे थे और एक बार फिर वह बगीचे से हो कर जमीन पर आ गया।

टिकीपू ने पलट कर देखा तो वह बूढ़ा वापस जा रहा था। दरवाजे पर पहुँच कर उसने टिकीपू से हाथ हिला कर विदा ली और दरवाजा बन्द हो गया। चित्र की पत्तियों ने उस दरवाजे को धीरे से ढक लिया था।

टिकीपू ने अपना भीगा चेहरा चित्र पर रगड़ा और उस दरवाजे को चूम लिया जिसने उसे आज यह दिन दिखाया था। वह ज़ोर से बोला — "वियोवानी, क्या तुम अन्दर हो?"

उसने कई बार वियोवानी को पुकारा पर उसे कोई जवाब नहीं मिला। वह वहाँ से रोता हुआ चला गया।

7 चिंग, चांग और सोने का टुकड़ा[18]

एक बार की बात है कि चीन में दो दोस्त रहते थे। एक का नाम था चिंग और दूसरे का नाम था चांग। दोनों ही बड़े बड़े टोप पहनते थे, दोनों ही नीला सूती कोट पहनते थे और दोनों ही नंगे पैर रहते थे। पर चांग गले में पीले मोतियों की माला पहनता था और चिंग हरे मोतियों की।

दोनों ही दोस्तों को अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये बहुत ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती थी इसलिये उनको ज़्यादा छुट्टियॉ नहीं मिल पाती थीं। परन्तु जब भी वे खाली होते तो एक दूसरे के साथ रहना ही पसन्द करते। किसी ने कभी उन्हें झगड़ते नहीं देखा।

वे एक रेशम बुनने के कारखाने[19] में काम करते थे। जब वहॉ का काम खत्म हो जाता तो वे अपना अपना चावल का कटोरा उठाते और किसी पेड़ की छॉह में जा बैठते। खाना खाते, हॅसते, बोलते, और गप हॉकते।

अगर उनमें से किसी के पास ज़्यादा चावल होता तो वह दूसरे को जरूर देता। दोनों ही को एक दूसरे का साथ बहुत पसन्द था।

एक दिन कारखाने के मालिक की शादी थी इसलिये उस दिन उसने अपने मजदूरों की छुट्टी कर दी और अपने खजांची को सभी

---

[18] Ching, Chang and a Piece of Gold – a folktale from China, Asia.

[19] Silk is a main product of China that is why there are many silk factories there.

को एक एक पैनी और देने का हुक्म दिया। मजदूर बड़े खुश हुए और लाइन बना कर अपनी अपनी पैनी लेने चल दिये।

मगर चांग और चिंग हाथ में हाथ डाल कर साथ साथ चल रहे थे। वे सबसे अन्त में थे। जब तक वे खजांची के पास अपनी पैनी लेने पहुँचे तब तक उसके पास सारी पैनी खत्म हो चुकी थीं और केवल एक ही पैनी बची थी।

यह देख कर खजांची बहुत शर्मिन्दा हुआ। शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया। उसने अपने बड़े से थैले में इधर हाथ डाला, उधर हाथ डाला परन्तु वहाँ तो केवल एक ही पैनी थी।

यह तमाशा देख कर पास में खड़े मजदूर हँस पड़े परन्तु चिंग और चांग ने सिर झुका कर खजांची से कहा — "मालिक, आप दुखी न हों। यह पैनी चाहे आप चांग को दें या चिंग को, बात एक ही है।

हम लोग पक्के दोस्त हैं — दो शरीर और एक जान, इसलिये एक ही हैं। इसी लिये आपके थैले में भी अब एक ही पैनी बची है और आपने वह एक पैनी जिस किसी को भी दी समझिये कि वह आपने दोनों को दी है।"

इतना कह कर चिंग ने उसके सामने अपना हाथ फैला दिया और चांग ने अपना हाथ उसके हाथ के ऊपर रख दिया और खजांची ने वह एक पैनी उन दोनों के हाथ पर रख दी।

खुशी खुशी वे दोनों दोस्त हाथ में हाथ डाले घूमते घूमते शहर में आये और फिर घूमते घूमते वे लोग खेतों की ओर निकल आये।

सूरज इतनी ज़ोर से चमक रहा था कि पहाड़ों की चोटियॉ सोने में नहायी सी लग रहीं थीं। कभी कभी ठंडी हवा आ कर उन दोनों को सहला जाती और कभी कभी फूल पेड़ों से झर कर रास्ते में उनका स्वागत करते।

वे चुपचाप चले जा रहे थे। चलते चलते वे चीड़[20] के जंगलों में आ पहॅुचे। वहॉ की हरियाली देख कर वे मोहित हो गये और सड़क छोड़ कर जंगल के अन्दर घुस गये।

अचानक एक चीड़ के फल जितने ही बड़े किसी टुकड़े की चमक देख कर वे रुक गये। उसकी चमक इतनी ज़्यादा थी कि वे अपनी ऑखें मलने लगे। वह टुकड़ा एक पेड़ की जड़ के पास पड़ा था। दोनों ने एक साथ एक दूसरे से पूछा “यह क्या है?”

चांग ने कहा — “चिंग, यह तो असली सोना है। दोस्त, मैं तुम्हारे भाग्य पर बहुत खुश हूॅ। यह तुम्हारा है क्योंकि इसे पहले

[20] Translated for the word “Pine trees”. See the picture of its jungle above

तुमने देखा है।" और चांग ने वह सोने का टुकड़ा उठा कर चिंग के हाथ पर रख दिया।

लेकिन चिंग हॅसा और बोला — "क्यों भाई, हम लोगों ने तो हमेशा ही अपनी हर चीज़ बॉटी है — अपना खाना, अपनी मजदूरी, अपनी छुट्टियॉ। फिर हम यह क्यों नहीं बॉटेंगे?"

चांग बोला — "नहीं चिंग, वे सब छोटी छोटी चीज़ें थीं मगर यह सोना तो बहुत कीमती है। मेरी बड़ी इच्छा है कि तू बहुत मालदार हो जाये। आज मेरी इच्छा पूरी हो गयी। ले तू ही इसे रख ले यह तेरा है।"

चिंग ने कहा — "मेरी भी यही इच्छा थी कि तू अमीर हो जाये। अब इस सोने ने चाहा तो तू खूब अमीर हो जायेगा। ले इसे तू ही रख ले, यह तेरा है।"

चांग का चेहरा तमतमा आया और वह ज़ोर से बोला — "मैं इसे नहीं रखॅूगा, तू रख।"

चिंग को भी गुस्सा आ गया और वह गुस्से में बोला — "मैं इसे नहीं रखॅूगा, तू रख।" चांग ने अपना पैर पटका और चिंग ने अपना सिर हिलाया।

यकायक दोनों ही आश्चर्य से एक दूसरे को देखने लगे। आज उन्हें यह क्या हो गया था। वे अपने जीवन में आपस में आज पहली बार लड़ रहे थे।

चिंग बोला — "ओह चांग, यह क्या हो रहा है?"

यह कह कर वह सोने का टुकड़ा उसने जहाँ से उठाया था वहीं फेंक दिया और अपने हाथ में रखी पैनी को खुशी से देखते हुए हाथ में हाथ डाले वे दोनों फिर आगे बढ़ गये। उन्हें ऐसा लगा मानो इस लड़ाई में वे एक दूसरे को खो चुके हों।

समय गुजर रहा था। शाम का साया बढ़ रहा था। सूरज जाने की तैयारी में था।

चांग ने कहा — "चिंग भाई, घर जाने से पहले आओ थोड़ी देर कहीं बैठ लें। इस समय मौसम बड़ा अच्छा हो रहा है।" सो दोनों ही एक चीड़ के पेड़ के नीचे बैठ गये और सुस्ताने लगे।

कुछ ही पलों बाद उन्हें किसी के कदमों की आहट सुनायी दी और उन्हें सामने से एक बूढ़ा आता दिखायी दिया। वह कह रहा था — "मेरे ऊपर दया कीजिये भाइयो। मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ।"

उसकी आँखें भारी सी और थकी सी दिखायी दे रही थीं। उसने अपना काँपता सा हाथ आगे बढ़ाया और बोला — "मुझे कुछ खाने के लिये चाहिये, बहुत भूखा हूँ।"

चांग और चिंग ने उसकी तरफ निराशा से देखते हुए कहा — "हमें बहुत दुख है कि हमारे पास केवल एक ही पैनी है।"

यकायक चिंग को कुछ याद आया और वह बोला — "रुको भाई, देखो उस चीड़ के पेड़ के नीचे चीड़ के फल जितना बड़ा एक

सोने का टुकड़ा पड़ा है तुम वह ले लो। तुम उसे पा कर बहुत अमीर हो जाओगे।"

वह बूढ़ा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उनको धन्यवाद देता हुआ उधर ही चल दिया जहाँ उन्होंने उसको वह सोने का टुकड़ा पड़ा बताया था। उसके जाने के बाद चिंग और चांग दोनों उस पेनी को खर्च करने के बारे में सोचते रहे।

कि एकाएक फिर एक ज़ोर की आवाज ने उनको चौंका दिया। वह बूढ़ा पैर पटकता हुआ चला आ रहा था — "ओ नालायक लड़को, तुमने मुझसे झूठ क्यों बोला? इतनी रात में मुझे जंगल में बेकार भेजने से तुम्हें क्या मिला? किसी भूखे गरीब को सताना क्या अच्छी बात है?"

चांग ने शान्त आवाज में कहा — "हमने झूठ नहीं बोला था भाई। जब हम इधर आ रहे थे तो हम उसे वहीं पेड़ की जड़ के पास ही छोड़ कर आये थे। अभी कुछ मिनटों पहले तो वह वहीं था।"

बूढ़े भिखारी ने कहा — "मगर वहाँ तो पुराना सा एक पीले रंग का सेब पड़ा था। भूख की वजह से मैंने उसे ही उठा कर काटा तो उसके बीच में तो एक कीड़ा बैठा था। तुम लोगों ने मुझे बहुत तंग किया यह अच्छा नहीं किया।"

चिंग ने कहा — "अच्छा भाई, यह लो तुम हमारी पैनी और आराम से खाना खाओ। लगता है तुम हमसे ज़्यादा भूखे हो।" बूढ़ा वह पैनी ले कर जल्दी से वहाँ से चला गया।

उसके जाने के बाद उन्होंने आपस में कहा — "आज रात के खाने की छुट्टी, चलो घर चलें।" और हाथ में हाथ डाल कर वे दोनों घर चल दिये।

चांग ने कुछ सोचते हुए कहा — "चिंग, कितनी अजीब सी बात है कि उस बूढ़े को वह सोना नहीं मिला।"

चिंग बोला — "सो तो है, पर हमने तो उसे वहीं छोड़ दिया था।"

इतना कह कर चिंग ने उधर देखा तो आश्चर्य से उसकी तो आँखें फैल गयीं। वैसा ही एक और सोने का टुकड़ा वहाँ पड़ा था।

दोनों ने झुक कर सोने के वे दोनों टुकड़े उठा लिये और एक दूसरे को देते हुए कहा — "प्यारे दोस्त, आखिर तुम्हें मैं यह कीमती भेंट देने में कामयाब हो ही गया।"
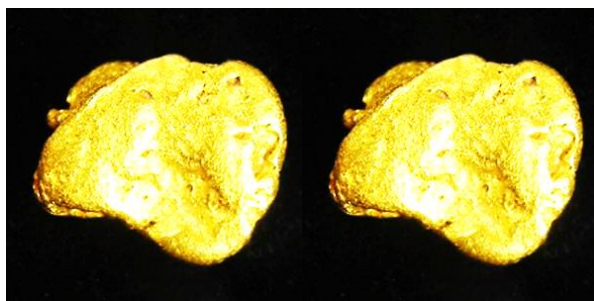
8 डोरोथी और सेब का बीज[21]

चीन के एक शहर में एक लड़की रहती थी। उसका नाम था डोरोथी। वह अकेली रहती थी और लोगों के कपड़े धो कर अपना गुजारा करती थी।

हफ्ते के आखीर में जब लोग उसे पैसा देते तब वह अपना खाने का सामान खरीदने जाया करती थी।

लेकिन वह अक्सर भूखी रहती थी। क्योंकि जब भी वह किसी दूकान से सामान खरीद कर बाहर निकलती तभी कोई न कोई भिखारी उसके सामने आ जाता और उससे खाना माँगता — "डोरोथी, मैंने आज सुबह से कुछ नहीं खाया, कल रात भी खाना नसीब नहीं हुआ। बहुत भूखा हूँ, कुछ खाने को दे दो।"

और डोरोथी जवाब देती — "हाँ हाँ, क्यों नहीं। तुम मेरे घर चलो मैं तुम्हें पेट भर खाना खिलाऊँगी।" और डोरोथी अपना खाना उस भिखारी के साथ बाँट लेती।

पर कभी कभी वह भिखारी इतना ज़्यादा खा जाता कि डोरोथी के लिये उसका बनाया खाना बहुत कम पड़ जाता और वह लगभग भूखी ही सो जाती।

[21] Dorothy and the Seed of Apple – a folktale from China, Asia

एक दिन खूब धूप निकल रही थी। डोरोथी धूप में कपड़े सुखा रही थी कि उसने चीं चीं की आवाज सुनी। उसने इधर उधर देखा पर उसे कोई दिखायी नहीं दिया। फिर किसी जानवर की नन्हीं चीख सुनायी पड़ी।

फिर उसने सुना कोई कह रहा था — "डोरोथी, इधर देखो, मैं हूँ, जल्दी आओ मैं मर रही हूँ। मेरे पंख गिर रहे हैं और मेरा एक पंख तो टूट भी गया है। अब मैं फिर कभी नहीं उड़ सकूँगी, गा भी नहीं सकूँगी।"

और डोरोथी के पैरों के पास एक घायल चिड़िया आ कर गिर गयी। उसने उसे उठाया और अपने घर ले गयी।

चिड़िया ने कहा — "डोरोथी, तुम मुझे अपने पास रख लो। मुझे ठीक कर दो, मैं तुम्हें इसका बदला जरूर चुका दूँगी। मेरे पंख गिर रहे हैं और मेरा एक पंख भी टूट गया है। मुझे उड़ने और गाने के लायक बना दो डोरोथी।"

डोरोथी ज़ोर से बोली — "देखो, मैं तुम्हें ठीक तो कर दूँगी पर तुम मुझसे कभी बदले की बात नहीं करना। मुझे तो वही खुशी काफी है जब मैं तुमको उड़ते और गाते देखूँगी।"

उसने उस चिड़िया को पानी में भिगो कर डबल रोटी खिलायी, पानी पिलाया। उसका टूटा पंख ठीक किया। डोरोथी की उँगलियाँ

इतनी नर्म थीं कि चिड़िया को उसके छूने से बिल्कुल भी तकलीफ नहीं हुई।

एक हफ्ते तक डोरोथी उसकी सेवा करती रही। एक दिन सुबह उठ कर उसने देखा कि चिड़िया की टोकरी खाली पड़ी थी। उसने खिड़की से बाहर झॉक कर देखा, सूरज चढ़ आया था, हवा शान्त थी और दूर कहीं कोई नन्हीं आवाज गा रही थी।

"डोरोथी, इधर देखो, मैं आकाश में उड़ती हुई तुम्हारे लिये गीत गा रही हॅू। तुमने मेरे पंख ठीक किये हैं इसलिये मैं अब उड़ सकती हॅू और गा सकती हॅू। तुमने रोज मुझे दाना पानी दिया मैं इसका बदला तुम्हें जरूर चुकाऊॅगी।"

डोरोथी हॅसी और बोली — "अरी ओ चिड़िया, मुझे कुछ भी देने की जरूरत नहीं है, मेरे लिये तो यही बहुत है कि तुम उड़ो और गाओ। पर अगर तुम्हें कभी भी मेरी जरूरत पड़े तो मुझे जरूर याद रखना।"

डोरोथी का पिछला हफ्ता चिड़िया की देख भाल में निकल गया था सो वह कपड़े ही नहीं धो पायी और इसलिये पैसे भी नहीं कमा पायी। और जब पैसा नहीं था तो खाना भी नहीं था। सो डोरोथी बेचारी बहुत भूखी थी।

उसने सारा दिन काम किया और सुस्ताने के लिये सीढ़ियों पर बैठ गयी।तभी उसने फिर चीं चीं की आवाज सुनी और एक चिड़िया उसकी गोद में सेब का एक बीज डाल गयी।

"डोरोथी, तुमने मेरे पंख ठीक किये थे न, इसी लिये अब मैं गा सकती हूॅ, उड़ सकती हूॅ। और मैंने कहा था न कि मैं इसका बदला जरूर चुकाऊॅगी।

देखो तुम्हारी गोद में सेब का एक बीज पड़ा है। इसे तुम अभी बो दो, इसकी देखभाल करो, पानी दो। शायद यह तुम्हारा भाग्य बना दे।"

डोरोथी यह सोच कर हॅसी कि यह सेब का बीज मेरा क्या भाग्य बनायेगा। पर वह चिड़िया के दिल को ठेस नहीं पहॅुचाना चाहती थी।

सो उसने उस सेब के बीज को वहीं एक गड्ढा खोद कर गाड़ दिया, पानी दिया और पहचान के लिये एक डंडी भी गाड़ दी। फिर वह जा कर सो गयी।

अगली सुबह चिड़िया के गीत से उसकी ऑख खुली — "डोरोथी डोरोथी, उठो, देखो मैंने तुम्हारा बदला चुका दिया है। आओ और अपने सेब इकट्ठे कर लो।"

अबकी बार डोरोथी को गुस्सा आ गया। वह बिस्तर से ही चिल्लायी — "अरे तुम मुझसे मजाक क्यों कर रही हो? मैं सेब तोड़ने कहॉ जाऊॅ? क्या बगीचे में?

अभी कल रात को ही तो मैंने सेब का बीज बोया था अभी उसमें सेब कहाँ से आ गये? अच्छा तुम कहती हो तो जाती हूँ।" कह कर वह बगीचे में दौड़ गयी।

उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि जहाँ उसने पिछले दिन अपना सेब का बीज बोया था वहाँ तो भरा पूरा सेब का पेड़ खड़ा था जिस पर लाल लाल सेब लदे हुए थे।

चिड़िया फिर भी गाती रही। डोरोथी खुशी से भर गयी। उसने चिड़िया को धन्यवाद दिया और उस पेड़ से सुबह के नाश्ते के लिये उचक कर एक सेब तोड़ लिया।

वह सेब कुछ बड़ा भी था और भारी भी सो वह उसे सँभाल कर घर के अन्दर ले गयी और चाकू से उसके दो हिस्से कर दिये।

पर यह क्या? जहाँ सेब के बीज होने चाहिये वहाँ तो हीरे, मोती, लाल और सोने के टुकड़े भरे हुए थे। डोरोथी ने ऐसा सेब पहले कभी नहीं देखा था। वह तो उस सेब को देखती ही रह गयी।

चिड़िया ने फिर गाया — "डोरोथी, जाओ, इन्हें बेच दो और अपना भाग्य बनाओ।" डोरोथी बहुत खुश हुई। उसके बाद से वह कभी भूखी नहीं रही। वह हमेशा गरीबों की मदद करती थी और भूखों को खाना खिलाती थी।

9 एक संत और एक विद्यार्थी[22]

एक बार एक स्कूल में एक संत पढ़ाया करते थे। उनको सबसे अच्छा यही लगता था कि वह कुछ थोड़ा सा खा लें और फिर थोड़ी देर के लिये सो जायें। पर वह हमेशा ही पढ़ाने से पहले इतना सारा खा लेते थे कि उनको हिलना भी मुश्किल हो जाता था।

खाने के बाद और पढ़ाने से पहले वह सो जाते और फिर तब तक सोते रहते जब तक कि उनके पढ़ाने के खत्म होने की घंटी नहीं बज जाती।

उसी स्कूल में एक बहुत ही गरीब आदमी का लड़का ली[23] भी पढ़ता था। एक दिन उसने उन संत जी से पूछा — "गुरू जी, मैं आपसे एक बात पूछूँ? आप हमारी पढ़ाई के हर घंटे में क्यों सोते हैं?"

संत ने बिना किसी झिझक के जवाब दिया — "मेरे दोस्त, मुझे ऐसे ही अच्छा लगता है। इस थोड़े से समय में बुद्ध जी से मिल लेता हॅू, कुछ उनके उपदेश सुन लेता हॅू।

इसी लिये मैं जितना ज़्यादा से ज़्यादा हो सके सोने की कोशिश करता हॅू ताकि मैं उनके ज़्यादा से ज़्यादा उपदेश सुन सकॅू।"

---

[22] A Monk and a Student – a folktale from China, Asia. Translated from the Web Site : http://www.worldoftales.com/Asian_folktales/Asian_Folktale_2.html

[23] Li – a name of a Chinese man

ली यह सुन कर चुप रह गया पर उसने यह बात अपने दिमाग में रख ली।

एक बार ली का पिता बीमार पड़ गया तो ली को रात में उसकी देखभाल करनी पड़ी।

अगले दिन सुबह जब वह स्कूल गया तो सुबह सुबह ही वहाँ जा कर सो गया और इतनी गहरी नींद सोया कि उसको तो पढ़ाई खत्म होने की घंटी भी सुनायी नहीं पड़ी जबकि घंटी सुन कर वह संत जाग गया था।

संत ने जब देखा कि ली अभी भी सो रहा है तो वह बहुत गुस्सा हुआ। उसने उसके कान पकड़े और चिल्लाया — "ओ कबूतर के बच्चे, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरी क्लास में सोने की?"

ली बोला — "गुरू जी, बस ज़रा मेरी ऑख लग गयी तो मैंने देखा कि मैं बुद्ध जी के साथ था और उनके उपदेश सुन रहा था।"

संत बोला — "और बुद्ध जी क्या कह रहे थे?"

ली बोला — "उन्होंने कहा कि तुम्हारा गुरू कौन है मैंने उसे ज़िन्दगी में कभी देखा नहीं।"

10 लालची आदमी और चावल का बड़ा दाना[24]

एक बार की बात है कि चीन में किसी जगह एक ऐसा गाँव था जहाँ के लोग कभी भूखे नहीं रहते थे। वे छोटे छोटे सुन्दर मकानों में रहते थे। उनके रहने के मकानों के साथ साथ एक एक झोंपड़ी भी हुआ करती थी जिसमें वे अपना चावल रखते थे।
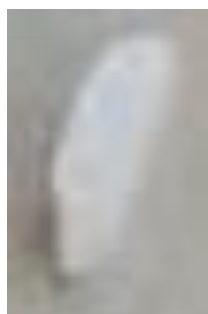
उनकी उस झोंपड़ी में कभी भी चावल के एक दाने से ज़्यादा नहीं रहता था मगर फिर भी लोग ख़ुश थे क्योंकि उस समय में चावल का एक दाना एक आदमी के साइज़ से भी बड़ा होता था।

जब कभी किसी को भूख लगती थी तो वह झोंपड़ी में जाता और उस चावल के दाने में से उसका कुछ हिस्सा खुरचता, उसके छोटे छोटे टुकड़े करता, पकाता और खा लेता।

लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि यह कोई नहीं जानता था कि वह चावल का दाना आता कहाँ से था।

हर साल जब गाँव वालों की झोंपड़ियाँ चावल से खाली हो जाती थीं और उनके पास कुछ भी खाने को नहीं होता था तब वहाँ के लोग धड़म धड़म की आवाज सुनते थे जैसी कि पहियों के चलने से आती है और गाँव में चावल लुढ़कता हुआ चला आता था।

[24] A Greedy Man and a Large Grain of Rice – a folktale from China, Asia

उस समय सभी गाँव वाले खुशी से तालियाँ बजाते और चिल्लाते — "देखो चावल लुढ़कता हुआ आ रहा है अपने अपने दरवाजे खोल दो और उसको अन्दर आने दो।"

एक के बाद एक दरवाजा खुलता और हर झोंपड़ी में चावल का एक दाना अन्दर चला आता था।

एक बार ऐसा हुआ कि किसी दूसरे गाँव से एक बूढ़ा और उसकी पत्नी उस गाँव में आये। वे कुछ थके थके से चल रहे थे क्योंकि वे बहुत दूर से आ रहे थे और भूखे भी थे। उन्होंने मकानों और झोंपड़ियों को देखा और देखा वहाँ के खुशहाल लोगों को भी।

पत्नी ने पति का कन्धा थपथपाया और बोली — "यह जगह अच्छी लगती है क्योंकि न तो कोई यहाँ भूखा दिखायी दे रहा है और न ही कोई थका हुआ। हम इन लोगों से पूछते हैं अगर ये हमको भी यहाँ रहने को मकान और खाना रखने को एक झोंपड़ी दे दें।"

इस पर आदमी ने अपनी पत्नी को घूर कर देखा और फिर अपने कन्धे से उसका हाथ हटाते हुए बोला — "ओह, मैंने ऐसी स्त्री से शादी क्यों की जिसे अक्ल ही नहीं है। एक खाली मकान और एक खाली झोंपड़ी, बस? पर हमारे पास खाना कहाँ है?"

उसी समय कहीं दूर से धड़म धड़म की आवाज सुनायी दी। पत्नी आश्चर्य से बोली — "यह आवाज किसकी हो सकती है। ऐसी आवाज तो मैंने पहले कभी नहीं सुनी।"

वह बूढ़ा भी उस आवाज को सुन कर कुछ परेशान सा दिखायी दिया और बोला — "यह आवाज तो ऐसी है जैसे सैकड़ों पहिये जमीन पर लुढ़कते चले आ रहे हों।"

तभी उन्होंने देखा कि वहाँ के लोग अपने अपने मकानों से बाहर आ गये और ताली बजा बजा कर नाचने लगे और गाने लगे "चावल आ रहा है, चावल आ रहा है, सब अपने अपने दरवाजे खोल दो और उसको अन्दर आने दो।"

और जब तक वह बूढ़ा और उसकी पत्नी सँभलते तब तक एक एक चावल का दाना एक एक झोंपड़ी में आ कर खड़ा हो गया और एक दाना बच गया जो लम्बाई में उस बूढ़े के बराबर ही लम्बा था और उसका सिर बूढ़े की पत्नी से भी लम्बा था।

जैसे ही वह चावल का दाना बूढ़े के सामने आ कर खड़ा हुआ तो बूढ़ा उसे आश्चर्य से देखने लगा। उसके मुँह से आवाज तक नहीं निकल रही थी। वह बहुत डर गया था। इतने में वह चावल बड़ी शान्ति से उसके पैरों पर झुक गया।

इतने में ही गाँव वाले भी दौड़े दौड़े वहाँ आ गये और बोले — "ओ अजनबी आओ, तुम्हारा स्वागत है। तुम भी हमारे साथ आ कर रहो। चावल ने भी तुम्हारा स्वागत किया है।"

उस आदमी को यह सब बड़ा अचम्भा सा लग रहा था। उसके मुँह से तो बोल भी न फूटा। वह तो केवल फटी फटी आँखों से

कभी चावल को, कभी अपनी पत्नी को और कभी गॉव वालों को देखता ही रह गया।

परन्तु उसकी पत्नी ने सहमते हुए चावल को छुआ और गॉव वालों से बोली — "क्या हम लोग यहॉ रह सकते हैं? क्या हम अपने रहने के लिये एक मकान और अपने चावल के लिये एक झोंपड़ी बना लें?"

इस सवाल के जवाब में गॉव वाले उनको उनका हाथ पकड़ कर गॉव के दूसरे कोने की ओर ले गये जहॉ एक खाली मकान पहले से ही बना हुआ था।

वहीं पास में बॉस का एक पेड़ लगा था जिससे चावल के लिये एक झोंपड़ी बनायी जा सकती थी। चावल भी उन लोगों के पीछे पीछे आ रहा था। वह भी उसी जगह आ कर रुक गया जहॉ वे लोग झोंपड़ी बनाने वाले थे।

उस बूढ़े ने बड़ी मेहनत से झोंपड़ी बनायी। जैसे ही वह झोंपड़ी बन कर तैयार हो गयी चावल के दाने ने एक कूद लगायी और वह झोंपड़ी के अन्दर।

बूढ़े की पत्नी को बहुत खुशी हुई। वह पति से बोली — "बस, अब हम यहीं शान्ति से रह सकते हैं क्योंकि अब हमें खाने के लिये दर दर नहीं भटकना पड़ेगा। हम इसमें से चावल खुरच लेंगे और पका कर बढ़िया खाना खायेंगे।

लेकिन उस बूढ़े ने अपने कन्धे उचकाये और बोला — “ओह, मैंने ऐसी स्त्री से शादी क्यों की जिसमें अक्ल का नाम ही नहीं है। अरे जब तक वह चावल चलेगा तब तक तो सब ठीक है पर अगले साल हम क्या करेंगे?”

“लेकिन अगला साल किसने देखा है? अभी तो हम आराम से रहें। जब अगला साल आयेगा तब की तब देखी जायेगी। यह भी तो हो सकता है कि यह चावल हर साल ऐसे ही लुढ़कता चला आता हो।” पत्नी ने पति को समझाते हुए कहा।

पति को यह बात कुछ जँच गयी। वह बोला — “शायद ऐसा ही हो। पर अगर चावल अगले साल नहीं आया तो हमें पहले की तरह भूखे रहना पड़ेगा।”

पर अगले साल उसी समय फिर धड़म धड़म की आवाज सुनायी दी जैसी कि सैंकड़ों पहियों के लुढ़कने से होती है और सबने देखा कि चावल फिर से लुढ़कता चला आ रहा है।

उस स्त्री के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि चावल का पहला दाना सारा गॉव पार कर के उसकी नये बॉस की झोंपड़ी में अपने आप आ कर लुढ़क गया।

कुछ पल के लिये तो वह चकित सी रह गयी पर फिर हॅसते हुए उसने चावल को थपथपाया और बोली — “तुम बहुत सुन्दर हो बिल्कुल बड़े आदमी जैसे, अच्छाइयों से भरे हुए, यहॉ के भूखे लागों का पेट भरने के लिये अपने आप ही चले आते हो। मैं तुम्हें

आशीर्वाद देती हूँ और तुम्हारे लिये शुभकामना करती हूँ कि तुम इसी तरह लोगों की भलाई करते रहो।"

फिर उसने अपने पति को भी बुला कर उसको चावल को धन्यवाद देने को कहा परन्तु वह बूढ़ा अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ।

वह झोंपड़ी के दरवाजे के पास खड़ा था वहीं से बोला — "मुझे तंग मत करो, मैं कुछ सोच रहा हूँ।"

"क्या तुम किसी इतने गम्भीर मामले पर सोच रहे हो कि तुम चावल को धन्यवाद भी नहीं दे सकते?"

"हॉ मैं चावल के बारे में ही सोच रहा हूँ। यहॉ झोंपड़ी में केवल एक ही चावल आता है।"

"हॉ यहॉ के लोगों ने मुझे बताया कि जब नये शादी शुदा लोग अपना घर बसाते है तो उनके लिये एक चावल आता है।"

"मैं इससे कुछ आगे की ही सोच रहा हूँ, मुझे जाने दो।" कह कर बूढ़ा अपने मकान के अन्दर चला गया।

उसकी पत्नी उसके इस बर्ताव से बहुत परेशान हुई पर क्योंकि वह अपने पति के स्वभाव को अच्छी तरह जानती थी इसलिये वह पड़ोस में बात करने चली गयी और फिर रात को ही लौटी।

जब वह वापस लौटी तो सोच रही थी कि उसका पति भूखा होगा और गर्म गर्म चावल खाने का इन्तजार कर रहा होगा परन्तु

ऐसा तो वहाँ कुछ भी नहीं था। मकान खाली पड़ा था और उसका बूढ़ा पति झोंपड़ी की दीवारें गज से नाप रहा था।

पत्नी को देखते ही वह चिल्लाया — "तुम्हें पुकारते पुकारते मेरा गला थक गया। कहाँ थीं तुम? आओ ज़रा मेरी मदद करो।"

"पर तुम यह कर क्या रहे हो?"

"मैं यह झोंपड़ी नाप रहा हूँ और मैं ऐसी ही एक झोंपड़ी और बनाऊँगा।"

"मगर हमारी यह झोंपड़ी तो अभी नयी ही है अभी हमें दूसरी झोंपड़ी की क्या जरूरत पड़ गयी?"

बूढ़े ने सिर पर हाथ मार कर कहा — "ओह, मैंने ऐसी स्त्री से से शादी ही क्यों की जिसमें अक्ल ही नहीं है। क्या तुम्हीं ने मुझसे नहीं कहा था कि हर झोंपड़ी के लिये एक चावल का दाना हमेशा रहता है।"

"हाँ कहा तो था। ऐसा मैंने अपने पड़ोसियों से सुना था।"

"तब कुछ अक्ल से काम लो। अगर हमारे पास दो झोंपड़ियाँ होंगी तो हमारे पास दो चावल के दाने होंगे। और अगर तीन झोंपड़ियाँ होंगी तो तीन चावल के दाने होंगे।"

यह दलील सुन कर तो वह स्त्री सकते मे आ गयी। तब बूढ़े ने उसके कन्धे पर हाथ रख कर कहा — "ओह, मैंने ऐसी स्त्री से

शादी ही क्यों की जो अपनी थोड़ी सी भी अक्ल का इस्तेमाल नहीं करती।

जो चावल हम नहीं खा पायेंगे उसे हम पास वाले उस गॉव में बेच देंगे जहॉ यह चावल नहीं आता। हमारे पास जितनी ज़्यादा झोंपड़ियॉ होंगी हम उतने ही ज़्यादा चावल के दाने रख सकेंगे।"

यह विचार बूढ़े की पत्नी को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। वह इतनी लालची नहीं थी जितना कि उसका पति। परन्तु पत्नी की बात सुनी अनसुनी कर के पति और झोंपड़ी बनाने के लिये नये बॉस काटने में लग गया।

कई दिनों की कड़ी मेहनत के बाद उसने आखिरकार चावल आने के दिन तक किसी तरह से एक नयी झोंपड़ी बनाने का सामान अपने घर में इकट्ठा कर लिया। यह सब काम उसने छिप कर किया ताकि पड़ोसी न देख लें।

चावल आने से पहली रात को बूढ़ा और उसकी पत्नी सोये ही नहीं। वे चॉदनी में ही झोंपड़ी बनाते रहे। सुबह हुई तो एक झोंपड़ी तो उनकी तैयार हो गयी थी मगर दूसरी झोंपड़ी की केवल तीन दीवारें थीं, तब तक न तो उस झोंपड़ी पर कोई छत थी और न ही उसमें कोई दरवाजा।

बूढ़ा अपनी पत्नी से बोला — "आओ, जल्दी करो। हमको जल्दी ही यह झोंपड़ी तैयार कर लेनी चाहिये। चावल आता ही होगा।"

पत्नी ने थकान भरी आवाज में कहा — "इतना ज़्यादा लालची होना भी ठीक नहीं। इसके अलावा काम करते करते मेरी उँगलियाँ भी अब अकड़ी जा रहीं हैं और मेरी पीठ भी दर्द कर रही है।"

पति ने जवाब दिया — "कोई बात नहीं, उँगलियाँ और पीठ बाद में देख लेना पहले मेरी झोंपड़ी तैयार करा दो।"

उसके इस काम से बेचारी पत्नी तो पहले से ही खुश नहीं थी फिर भी वह अपने पति की सहायता करने में लगी रही। पर दर्द के मारे उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे।

उसी समय धड़म धड़म की आवाज सुनायी देने लगी। पल भर में ही सारा गॉव गूँज उठा — "चावल आ रहा है, चावल आ रहा है, अपने अपने घर के दरवाजे खोल दो, और उसे अन्दर आने दो।"

चावल गॉव में आने लगा और उसको देख कर हर झोंपड़ी का दरवाजा खुलने लगा।

बूढ़ा और उसकी पत्नी अपनी तीसरी झोंपड़ी तैयार करने में लगे थे लेकिन चावल उनके सामने झोंपड़ी पूरी होने से पहले ही आ खड़ा हुआ था। पर वह बीच में ही रुक गया क्योंकि वह बूढ़ा रास्ते में आ गया।

बूढ़े की ऑखें गुस्से से लाल थीं और मुट्ठियाँ भिंची हुई थीं। उसने गुस्से में भर कर कहा — "तुमने बिना बुलाये यहाँ आने की

हिम्मत कैसे की? तुम हमारी झोंपड़ी तैयार होने तक इन्तजार क्यों नहीं कर सके? सुना नहीं तुमने? क्यों इन्तजार नहीं कर सके तुम?"

उसके इतना बोलते ही वह चावल का दाना पीछे की ओर लुढ़कना शुरू हो गया।

आदमी चिल्लाया — "हॉ, अब ठीक है। जाओ और बाहर जा कर तब तक इन्तजार करो जब तक हम तुम्हें न बुलायें।"

इतना कह कर वह अपने चावल के दाने के पीछे भागा और उसे एक लात मारी। जैसे ही उसने उस चावल में लात मारी पल भर में ही वह चावल उसके पैरों में टुकड़े टुकड़े हो कर बिखर गया।

उसी दिन से चावल हमेशा के लिये उतना ही छोटा हो कर रह गया। आज भी हम चावल को उसी रूप में देखते हैं।

क्योंकि चावल का बहुत बड़ा अपमान हुआ था इसलिये वह फिर कभी भी अपने आप झोंपड़ियों में लुढ़कता हुआ भी नहीं आया।

अब उसके बाद से आदमियों को उसे लाने के लिये खेतों में जाना पड़ता था, उसे बोना होता था, उसकी देखभाल करनी होती थी, उसे काटना होता था।

और यह सब उस बूढ़े आदमी के लालच की वजह से हुआ जो अपने हिस्से से अधिक चाहता था।

11 बन्दर का ढोल[25]

बहुत दिनों पहले की बात है कि चीन में एक बड़ा दयालु नौजवान रहता था जिसका नाम था यान[26]। वह अपने बड़ों की बहुत इज़्ज़त करता था और जानवरों के ऊपर बहुत दया करता था।

वह अकेला ही रहता था उसके कोई पत्नी तो नहीं थी क्योंकि अभी उसकी शादी नहीं हुई थी पर उसकी निगाह में एक बहुत ही सुन्दर लड़की थी जो उसको बहुत अच्छी लगती थी।

वह उससे शादी करना चाहता था पर वह एक बहुत ही अमीर आदमी की बेटी थी और उसका पिता अपनी बेटी की शादी किसी ऐसे आदमी से नहीं करता जो उसको ठीक से "दुलहिन की कीमत"[27] नहीं देता।

अमीर आदमी बोला — "कोई आदमी मेरी बेटी से शादी नहीं करेगा जब तक कि वह शादी की भेंट – एक लाल लिफाफे में काफी जवाहरात या फिर काफी पैसा मुझे नहीं देगा।"

"दुलहिन की कीमत" लेना चीन में एक रिवाज था जो चीन में हर लड़की का पिता मानता था। लेकिन यह कीमत इस बात से तय होती थी कि लड़के के पास कितना पैसा है।

---

[25] The Monkey's Drum – a folktale from China, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=111 Retold and written by Mike Lockett

[26] Yan – the name of the young man who wanted to marry

[27] Bride Price – is the money paid by the bridegroom to the bride's father to marry his daughter.

बहुत सारे परिवार इस बात का बहुत ध्यान रखते थे कि वे अपनी बेटी के लिये बहुत सारा पैसा न माँगें ताकि लोगों को ऐसा न लगे कि वे अपनी बेटी को बेच रहे हैं।

यान के पास केवल एक ही कीमती पत्थर था और वह उसकी अँगूठी में जड़ा हुआ था जो उसकी माँ ने उसको बरसों पहले दी थी।

वह उसको अपने गले में पहने रहता था कि एक दिन शायद उसकी पत्नी उसको पहनेगी। सो वह यह पत्थर इस लालची आदमी को देने वाला नहीं था।

एक दिन यान इस अमीर आदमी के घर काम करने की इच्छा से गया ताकि वह उसको यह दिखा सके कि वह बहुत मेहनती आदमी था और साथ में एक बहुत अच्छा दामाद[28] भी।

फिर भी उस आदमी ने यान के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया और अपने दूसरे काम करने वालों के मुकाबले में उससे बहुत ज़्यादा तो काम लिया और यान को उतना पैसा भी नहीं दिया जितना कि उसको उसे देना चाहिये था।

वह नहीं चाहता था कि यान जैसा गरीब आदमी उसकी बेटी से शादी करे।

एक दिन यान पहाड़ों की तरफ लकड़ी काटने गया। वह सारी सुबह बहुत मेहनत से काम करता रहा। जब उसने दोपहर का खाना

[28] Translated for the word "Son-in-law" – means daughter's husband

खाने के लिये अपना काम बन्द किया तो वह कुछ देर के लिये धूप में अपना सिर कर के लेट गया और ऑखें बन्द कर लीं।

जब वह वहॉ लेटा हुआ था तो उसने बन्दरों की चिचियाने की आवाजें सुनी। वे वहीं उसके पास वाले पेड़ों पर खेल रहे थे।

यान देखना चाहता था कि अगर वे बन्दर उसको इस तरह चुपचाप बिना हिले डुले पड़े देखते तो वे क्या करते सो वह वहॉ चुपचाप बिना हिले डुले पड़ा रहा।

कुछ ही देर में बन्दरों ने उसको चारों तरफ से घेर लिया पर फिर भी वह वहीं चुपचाप लेटा रहा और हिला भी नहीं।

एक बन्दर ने यान की एक बॉह में चिऊॅटी काटी और पूछा — "यह क्या है?" यान नहीं हिला।

दूसरा बन्दर बोला — "यह तो आदमी की तरह से नहीं हिल रहा।" उसने यान के बाल भी खींचे पर यान नहीं हिला।

वह बन्दर फिर बोला — "लगता है यह तो मूर्ति है।"

तीसरे बन्दर ने यान की पलक उठायी पर यान फिर भी नहीं हिला।

एक और बन्दर ने यान के कान में घास का एक तिनका घुसाया पर यान फिर भी नहीं हिला।

एक बन्दर ने यान का मुॅह खोला और उसकी जीभ बाहर खींची पर यान फिर भी नहीं हिला।

एक बन्दर ने यान की नाक में अपनी उँगली डाली पर यान फिर भी नहीं हिला।

बन्दर ने घोषित किया कि वह एक मूर्ति पड़ी थी क्योंकि अगर वह कोई आदमी होता तो वह जरूर ही हिलता।

एक बन्दर ने यान के पेट में मारा तो उसके पेट से हवा निकली जिससे यान के मुँह से निकला "उँह"। यह सुन कर वह बन्दर बोला — "अब मुझे पता चला यह तो मूर्ति भी नहीं बल्कि एक ढोल है।"

उसने यान को दोबारा मारा तो यान फिर से बोला "उँह"।

उसने यान को तिबारा मारा तो यान फिर से बोला "उँह"।

उसने यान को चौथी बारा मारा तो यान फिर से बोला "उँह"।

यान को उसने फिर पाँचवीं बार मारा तो यान फिर से बोला "उँह"।

बस अब वह यान को मारता रहा और उसमें से "उँह उँह" की आवाज आती रही।

बन्दर बोले — "वाह क्या ही अच्छा ढोल है। यह तो बड़ा आदमी वाला ढोल[29] है। चलो हम इसको अपनी गुफा में ले चलते हैं और वहाँ ले जा कर इसको बजायेंगे। अब तो हमारे पास यह बड़ा आदमी वाला ढोल है।"

और वे उसको अपने सिर के ऊपर उठा कर ले चले — "उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह. . . . । इसको हवा में उठाओ

[29] Translated for the words "Big Man Drum"

और सँभाल कर ले चलो।" और वे उसको इस तरह से उठा कर पहाड़ के ऊपर अपनी गुफा में ले चले।

एक बन्दर यान के पेट पर बैठ गया और उसको मारता चला गया जैसे ढोल को बजाते हैं — "हमारे बड़े आदमी ढोल को नीचे मत गिराना, हमारे बड़े आदमी ढोल को नीचे मत गिराना, उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह।"

अब बन्दरों ने एक बड़ी सी गहरी घाटी पार करनी शुरू की जिसमें नीचे नदी बह रही थी। जब वे उस घाटी के ऊपर वाला पुल पार कर रहे थे तो बन्दरों ने यान को बहुत सँभाल कर पकड़ा हुआ था। यान ने भी अपनी आँखें बन्द कर रखी थीं और वह बिल्कुल नहीं हिल रहा था।

पुल पार कर के बन्दर पहाड़ों में अपनी गुफा की तरफ चले। उन्होंने यान को अपनी गुफा में एक पत्थर की मेज पर लिटा दिया — "यह बड़ा आदमी ढोल तो हमारा है, हम इसको फूलों से ढक देते हैं। उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह।"

बन्दरों ने यान को फूलों से ढकना शुरू कर दिया। उन्होंने उसके बालों में फूल लगाये, कानों में फूल रखे, नाक में फूल रखा। उसी समय एक बन्दर ने वह चमकीली अँगूठी देखी जो यान ने अपने गले में पहनी हुई थी।

एक बन्दर बोला — "ओह, कितना सुन्दर पत्थर है।"

फिर वह अपनी सोने वाली जगह गया और वहाँ से कुछ लाल और हरे रंग के पत्थर उठा लाया और उसकी अँगूठी के पास ला कर रख दिये।

दूसरे बन्दर भी वहाँ से दूसरी रंगीन मोतियों की माला, जंजीरें और चमकीले पत्थर लाने के लिये दौड़ गये।

इस बीच यान ने अपनी आँखें ज़रा सी खोलीं तो देखा कि बन्दर उसके शरीर को कीमती पत्थरों, गले के हारों, कलाई के कंगनों से ढक रहे थे। उसने अपनी आँखें फिर से बन्द कर लीं और चुपचाप लेटा रहा।

"चलो अब अपना बड़ा आदमी ढोल बजाते हैं – उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह।"

बन्दर रात गये तक अपना ढोल बजाते रहे और नाचते रहे। फिर जब वे थक गये तो अपनी अपनी सोने की जगहों पर चले गये।

जब सारे बन्दर सो गये तो यान सावधानी से उस पत्थर के ऊपर से नीचे उतरा। उसने वहाँ से जितने जवाहरात उठा सकता था उतने जवाहरात उठाये और अपने गाँव की तरफ जल्दी जल्दी चल दिया। उसने उस घाटी के ऊपर का पुल बड़ी सावधानी से पार किया।

घर आ कर उसने कुछ जवाहरात बेच कर एक बड़ा सा खेत खरीद लिया और अपने लिये एक बड़ा सा मकान बना लिया। कुछ

पैसा उसने गॉव के गरीबों की सहायता करने में लगा दिया और कुछ जवाहरात उसने उस दिन के लिये अपने पास रख लिये जब उसकी शादी होगी।

जल्दी ही उसके पुराने लालची मालिक को उसके अमीर होने का पता चल गया। उसने यान से कहा — "अब तुम मेरी बेटी की "दुलहिन की कीमत" देने लायक हो गये हो। क्या मैं तुम्हारे लिये वह बड़ा वाला लाल लिफाफा ले आऊॅ ताकि हम तुम्हारी शादी के बारे में बात कर सकें?"

यान बोला — "नहीं धन्यवाद। मैं पत्नी खरीदना नहीं चाहता।"

पर वह लालची आदमी यान के पीछे पड़ा रहा जब तक कि यान ने उसको यह नहीं बता दिया कि वे जवाहरात और पैसे उसको कहॉ से मिले थे।

यान की कहानी सुनने के बाद वह लालची आदमी तुरन्त ही बड़े बड़े थैले लाने के लिये अपने घर गया ताकि वह वहॉ से यान से भी ज़्यादा जवाहरात ला सके। और फिर तुरन्त ही उस पहाड़ की तरफ चल दिया जहॉ यान बन्दरों से मिला था।

वह लालची आदमी भी यान की तरह से ऑखें बन्द कर के उस पहाड़ पर जमीन पर लेट गया। कुछ मिनटों में ही उसको भी बन्दरों की चिचियाहट की आवाज सुनायी पड़ने लगी।

वह वहॉ बिल्कुल नहीं हिला और चुपचाप पड़ा रहा।

जल्दी ही बन्दरों ने उसको घेर लिया। एक ने उसके बाल खींचे, दूसरे ने उसके कानों में, मुँह में, आँखों में उँगली घुसायी, पर वह नहीं हिला।

एक बन्दर बोला — "यह तो हमारा बड़ा आदमी ढोल है।"

फिर एक ने उसके पेट में मारा तो वह बोला — "आउ आउ।"

फिर दूसरे ने मारा, फिर तीसरे ने मारा तो वह बोलता रहा — "आउ आउ आउ आउ आउ।"

एक बन्दर बोला — "हमारा यह ढोल ठीक से नहीं बोल रहा। पर फिर भी हम इसको अपनी गुफा में ले चलते हैं इसको हम वहीं बजायेंगे।"

सो वे उस लालची आदमी को अपने सिर पर उठा कर पहाड़ की तरफ अपनी गुफा में ले चले — "इसको हवा में उठाओ और सँभाल कर ले चलो, आउ आउ आउ आउ आउ।"

एक बन्दर उसके पेट पर बैठ गया और उसके पेट पर मारता रहा। वह लालची आदमी वैसे तो चुपचाप लेटा रहा बस वह जभी बोलता था जब वह बन्दर उसके पेट पर मारता था।

"हमारे बड़े आदमी ढोल को नीचे नहीं गिराना, आउ आउ आउ आउ आउ।"

बन्दरों ने अब वह घाटी वाला पुल पार करना शुरू कर दिया था जिसके नीचे वह बहुत तेज़ नदी बह रही थी। जब वे पुल पार

कर रहे थे तो वे उसको बड़ी सावधानी से ले जा रहे थे पर उस लालची आदमी ने ऑख खोल कर नीचे देखा तो डर के मारे चिल्लाया — "ए तुम लोग गिरा मत देना मुझे।"

उसकी इस चिल्लाहट से बन्दर डर गये और उनके हाथों से वह आदमी छूट गया। वह नीचे पानी में जा गिरा जहॉ से वह तेज़ पानी उसको बहा कर ले गया।

यान ने वह ॲगूठी उस लालची आदमी की बेटी को दे दी। उस लालची आदमी के जाने के बाद वह लड़की यान की बहुत प्यारी पत्नी बन गयी। दोनों ख़ुशी से रहने लगे।

उसके बाद बन्दरों को अपना बड़ा आदमी ढोल फिर कभी नहीं मिला इसलिये वे फिर अपने पेट को ही बजा बजा कर गाते रहे — "हमारे पास एक बड़ा आदमी ढोल था, हमारे पास एक बड़ा आदमी ढोल था, आउ आउ आउ आउ आउ।"

12 चॉद की देवी[30]

यह तब की बात है जब सम्राट याऊ[31] एक राजकुमार था और उसका नाम हू प्रथम[32] था। वह एक बहुत ही ताकतवर हीरो और बहुत ही अच्छा तीर चलाने वाला था।

एक बार आसमान में दस सूरज एक साथ निकले और इतनी ज़ोर से चमके और इतने भयानक रूप से गर्म हुए कि धरती पर रहने वाले लोग उनकी चमक और गर्मी को सह नहीं सके। सो सम्राट ने अपने बेटे हू प्रथम को हुक्म दिया कि वह उनको मार गिराये।

हू प्रथम ने तीर मार कर उनमें से नौ सूरजों को आसमान में से नीचे गिरा दिया।

तीर कमान के अलावा हू प्रथम के पास एक घोड़ा भी था जो इतनी तेज़ दौड़ता था कि हवा भी उसको नहीं पकड़ सकती थी। जब वह शिकार करने के लिये जाता था तो वह उसी घोड़े पर बैठ

---

[30] Lady of the Moon – a folktale from China, Asia. Translated from the Web Site : http://www.worldoftales.com/Asian_folktales/Chinese_Folktale_34.htm
Taken from the Book "Chinese Fairy Book". Edited by R Wilhelm. NY, Frederick A Stikes Company. 1921. (74 Chinese folktales)
This fairy tale is traditional. Several tales are there in connection with Hou I. The Hare in the Moon is a favourite figure. He grinds the grains of maturity or the herbs that make the elixir of life. The Rain-toad Tschan, who has three legs, is also placed on the Moon. According to one version of the story, Tschang O took the shape of this toad. Tschang O is the wife of Hou I.

[31] Emperor Yau

[32] Hou I

कर जाता था। वह घोड़ा तुरन्त ही दौड़ जाता था और फिर उसको कोई नहीं पकड़ सकता था।

एक बार हू प्रथम कुनलुन पहाड़[33] पर गया। वहाँ उसकी मुलाकात जैस्पर समुद्र की रानी माँ[34] से हुई। उसने राजकुमार को एक बूटी दी जो उसको अमर बना देती।

वह उस बूटी को अपने साथ घर ले आया और उसको अपने कमरे में छिपा कर रख दिया। पर उसकी पत्नी जिसका नाम शैंगो[35] था उसने उसे देख लिया।

एक बार जब उसका पति घर में नहीं था तो चालाकी से उसने उसमें से कुछ बूटी खा ली। उस बूटी को खाते ही वह तो आसमान में उड़ गयी। जब वह चाँद के पास पहुँची तो वह उसके किले में घुस गयी और तब से वहाँ वह चाँद की देवी तरह रह रही है।

एक बार पतझड़ के मौसम में टैंग साम्राज्य का सम्राट[36] दो जादूगरों[37] के साथ बैठा हुआ शराब पी रहा था कि उन दोनों जादूगरों में से एक जादूगर ने अपना बाँस का डंडा उठाया और आसमान की तरफ फेंक दिया। वहाँ जा कर वह एक पुल बन गया।

---

[33] Kunlun Mountain

[34] Queen Mother of the Jasper Sea

[35] Tschang O – name of the wife of Hou I

[36] Emperor of the Tang Dynasty - Tang Dynasty reigned during 618-906 AD.

[37] Translated for the word “Sorcerer”

पुल बनने के बाद वे तीनों उस पुल पर चढ़ कर चॉद पर पहुँच गये। वहॉ उन्होंने एक बड़ा किला देखा जिस पर खुदा हुआ था – "बहुत ठंडे फैले हुए कमरे"[38]।

उसी के पास कैसिया[39] का एक पेड़ खड़ा था। उस पर बहुत सारे फूल खिले हुए थे और उनकी खुशबू चारों तरफ फैल रही थी। उसी पेड़ पर एक आदमी भी बैठा था जो कुल्हाड़ी से उस पेड़ से छोटी छोटी डंडियॉ काट रहा था।

उस आदमी को देख कर एक जादूगर बोला — "यह है वह आदमी जो चॉद में रहता है। यह कैसिया का पेड़ इतना ज़्यादा और इतनी जल्दी बढ़ता है कि कुछ ही दिनों में यह चॉद की सारी चमक को ढक लेता है इसलिये इसको हर एक हजार साल में काटना पड़ता है।"

इसके बाद वे "फैले हुए कमरों" में घुसे। किले की चॉदी की मंजिलें एक के ऊपर एक लगी हुई थीं। उसकी दीवारें और खम्भे द्रव क्रिस्टल[40] के बने हुए थे।

उसकी दीवारों में पिंजरे और तालाब बने हुए थे। उनमें चिड़ियें और मछलियॉ ऐसे घूम रही थीं जैसे कि वे ज़िन्दा हों। सारी चॉद की दुनियॉ ऐसी दिखायी दे रही थी जैसे मानो शीशे की बनी हुई हो।

---

[38] Translated for the phrase "Spreading Halls of Crystal Cold"

[39] Cassia Tree

[40] Translated for the words "Liquid Crystal"

वे लोग अभी उस सबको देख ही रहे थे कि चॉद की देवी बाहर निकल कर उनके पास आयी। उसने इन्द्रधनुषी पोशाक पहनी हुई थी और उसके ऊपर सफ़ेद रंग का शाल ओढ़ा हुआ था।

वह मुस्कुरायी और बादशाह से बोली — "तुम तो मिट्टी की बनी दुनियॉ के राजकुमार हो। तुम बहुत खुशकिस्मत हो जो यहॉ तक आ पहुॅचे।"

कह कर उसने अपनी दासियों को बुलाया जो तुरन्त ही चिड़ियों पर उड़ती हुई वहॉ आ पहुॅचीं। वे कैसिया के पेड़ के नीचे गाने और नाचने लगीं। उनका मीठा संगीत चारों ओर हवा में तैरने लगा।

कैसिया के पेड़ के पास ही सफ़ेद संगमरमर का बनी एक ओखली रखी थी जिसमें जैस्पर का एक खरगोश बैठा बैठा वहॉ उसमें कुछ बूटी पीस रहा था। यह चॉद का ॲधेरा वाला हिस्सा था।

जब गाना और नाचना खत्म हो गया तो बादशाह जादूगरों के साथ धरती पर आ गया। घर आ कर उसने जो गीत चॉद पर सुना था उसे लिख लिया और फिर उसने उसको अपने नाशपाती के बागीचे में जैस्पर की बॉसुरी के साथ गाया।

13 आउ और आउच[41]

एक बार की बात है कि चीन में एक नौजवान जमींदार ने अपने बागीचे में एक बहुत ही खास चिड़िया देखी। उसने देखा कि जब भी वह चिड़िया अपनी चोंच से आवाज करती तो उसके मुँह से एक सोने का सिक्का गिर जाता।

जब उस जमींदार ने यह देखा तो उसको पकड़ने के लिये उसने एक जाल बिछाया। उसने उसे पकड़ लिया और उसको घर के अन्दर एक पिंजरे में ला कर रख लिया।

उसने उस सोने से और बहुत सारी जमीन खरीद ली। फिर अपना काम करने के लिये और कई नौकर रख लिये। अब वह बहुत अमीर हो गया था।

ऐसा होता है कि पैसा मिलने पर कुछ अमीर आदमी अक्लमन्दी से रहना सीख जाते हैं और अपना पैसा भले के लिये लगाते हैं जबकि दूसरे अमीर आदमी लालची हो जाते हैं और जैसे जैसे उनके पास पैसा बढ़ता जाता है उनको और ज़्यादा पैसे की इच्छा होती जाती है।

इस आदमी के साथ यही हुआ। इसके पास जितना ज़्यादा पैसा बढ़ता गया इसको पैसे की इच्छा भी उतनी ही ज़्यादा बढ़ती गयी।

---

[41] Ow and Ouch – A folktale from China, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=70 As retold by Mike Lockett

इसके लिये उसने अपने नौकरों के साथ भी जो बेचारे अपने खून पसीना एक कर के अपनी रोजी रोटी कमाते थे छल करना शुरू कर दिया।

जब उनको उनकी तनख्वाह देने का समय आता तो वह उनको "आउ और आउच" खरीदने के लिये बाजार भेज देता। वह उनसे कहता — "अगर तुम इनको खरीदे बिना घर लौटे तो मैं तुमको बजाय तुम्हारी तनख्वाह देने के तुमको **100** डंडे मारूँगा।"

अब उनमें से किसी को यही नहीं मालूम था कि यह "आउ और आउच" क्या होता है। इसलिये वे बाजार जाने की बजाय घर चले जाते। और क्योंकि उन्होंने मालिक का हुक्म नहीं माना था इसलिये उनको तनख्वाह भी नहीं मिलती थी।

इस तरह से उसके वे नौकर गरीब से गरीब होते चले गये और वह खुद अमीर होता चला गया।

हुआ यह कि लोगों ने जब यह सुना तो उनमें से एक होशियार लड़का उस कंजूस अमीर के पास काम करने के लिये आया कि वह इसको सबक सिखायेगा।

जब तनख्वाह देने का समय आया तो उस अमीर आदमी ने हर बार की तरह से उस लड़के से भी यही कहा — "इससे पहले कि मैं तुमको तुम्हारी तनख्वाह दूँ तुम बाजार जाओ और मेरे लिये "आउ और आउच" ले कर आओ। अगर तुम नहीं लाये तो मैं तुमको तुम्हारी तनख्वाह देने की बजाय **100** डंडे मारूँगा।"

लड़का बोला — "अगर मैं आपके लिये वह ला दूँ जो आप माँग रहे हैं तो क्या आप मुझे मेरी तनख्वाह और वह जादुई चिड़िया दे देंगे?"

"यकीनन, खुशी से।" क्योंकि उसको मालूम था कि जो वह उससे मँगा रहा था वह तो बाजार में कहीं बिकता ही नहीं था।

सो जब वह लड़का वापस आयेगा तो वह उसको 100 डंडे भी मारेगा और उसको तनख्वाह भी नहीं देगा। बल्कि उसके दूसरे नौकर भी फिर उससे अपनी तनख्वाह कभी नहीं माँगेंगे।

उधर वह लड़का तुरन्त ही बाजार भाग गया। उसने बाजार से दो काशीफल[42] खरीदे और उनके अन्दर का गूदा निकाल कर उन्हें खोखला कर लिया।

फिर उसने उसमें से एक में शहद की मक्खी रख दी और दूसरे में ततैया[43] रख दिया और उनको ले कर मालिक के पास भाग लिया।

मालिक के पास आ कर वह उन दोनों काशीफलों को उसको देते हुए बोला — "मालिक मैं "आउ और आउच" ले आया।"

सारे नौकर खड़े उसको देखते रह गये कि उसको ये आउ और आउच कहाँ से मिल गये।

[42] Translated for the "Gourd". In fact gourd is any kind of fruit whose cover is very hard and can be used after hollowing it and drying the fruit. It may be white gourd too.
[43] Translated for the word "Wasp". See its picture below the picture of Bee.

वह अमीर आदमी बोला — "मुझे तो यहाँ केवल दो काशीफल ही दिखायी दे रहे हैं। क्या तुम मेरी चीज़ें न लाने के बदले में सजा पाने के लिये तैयार हो?"

लड़का बोला — "मालिक आप पहले अपनी उँगलियाँ इन काशीफलों डाल कर देखें तब मुझसे यह सवाल पूछें।"

यह सुन कर अमीर आदमी कुछ गुस्सा सा हुआ पर फिर उसने अपनी एक सबसे मोटी उंगली एक काशीफल के अन्दर डाल दी।

उसको अभी भी यकीन नहीं था कि वह लड़का उसकी बतायी चीज़ें ले आयेगा सो वह अपनी उँगली उसमें से निकाल कर अपना डंडा उठाने ही वाला था कि दर्द से चीखा "आउ"। उसने अपनी उँगली की तरफ देखा।

वह लड़का बोला — "देखा मालिक? इस काशीफल में आउ है। अब आप दूसरे काशीफल में हाथ डाल कर देखिये तो आपको वहाँ आउच मिल जायेगा।"

वहाँ खड़े सारे नौकर हँस पड़े। उन्होंने समझ लिया कि उस लड़के ने मालिक को वह दे दिया है जो वह चाहता था। मालिक को पहली बार में ही इतना दर्द हुआ कि दूसरे काशीफल में अपनी उँगली डालने की उसकी हिम्मत ही नहीं हुई।

उसने उस लड़के को और अपने दूसरे नौकरों को उनकी तनख्वाह दे दी। साथ में उसने उस लड़के को वह जादुई चिड़िया भी दे दी।

अमीर आदमी ने अपना सबक सीख लिया था। उसके पास उसकी अपनी सारी ज़िन्दगी के लिये बहुत पैसा था। उसने उस पैसे को फिर अपने और दूसरों के लिये अक्लमन्दी के साथ खर्च करना शुरू कर दिया।

पर उस लड़के और उस जादुई चिड़िया का क्या हुआ? न तो किसी ने यह पूछा कि वे कहाँ गये और न ही किसी को यह पता कि वे अब कहाँ हैं। हम आशा करते हैं कि वे जहाँ भी होंगे दोनों सुखी होंगे और वह लड़का भी अब खूब अमीर हो गया होगा।

14 बुलबुल[44]

चीन के बादशाह का नाम था "चीन का आदमी"[45]। हालाँकि बाकी सब भी "चीन के आदमी" ही थे।

यह बहुत साल पुरानी बात है जब यह कहानी चीन में घटी थी इसी लिये इसको यहाँ लिखना बहुत जरूरी हो गया है ताकि कहीं ऐसा न हो कि लोग इसे भूल जायें।

इस "चीन के आदमी" राजा का महल बहुत बढ़िया था या यों कहना चाहिये कि यह अपने में एक आश्चर्य था। यह सारा का सारा महल केवल पोर्सलेन[46] का बना हुआ था। बहुत कीमती था पर इतना कोमल था कि तुम उसको छूने की भी हिम्मत नहीं कर सकते।

उसके बागीचे में बहुत मुश्किल से मिलने वाले फूल लगे हुए थे। और उनमें से भी जो सबसे सुन्दर थे उनमें चाँदी की घंटियाँ लगी हुई थीं सो जब हवा चलती थी तो वे बजती थीं और कोई भी आदमी उनकी तरफ देखे बिना नहीं जा सकता था।

उसके बागीचे में सब कुछ उसके प्लान के अनुसार ही लगा हुआ था। वह बागीचा कितना बड़ा था यह तो बादशाह के माली

---

[44] The Nightingale – A folktale from China, Asia. Translated from the Web Site : http://www.andersen.sdu.dk/vaerk/hersholt/TheNightingale_e.html

[45] Chinaman

[46] Porcelain a material like china clay

को भी पता नहीं था। पर अगर तुम उसमें चलते जाओ चलते जाओ तो एक जंगल तक पहुँच जाओगे जिसमें बहुत ऊँचे ऊँचे पेड़ लगे हुए थे और बहुत गहरी गहरी झीलें थीं।

यह जंगल भी बहुत नीचे तक गहरे नीले समुद्र तक चला गया है – इतना नीचे तक कि समुद्र में से जाने वाले सब जहाज़ उसके पेड़ों की शाखों के नीचे से जा सकते थे।

इन्हीं पेड़ों में एक बुलबुल रहा करता था। वह इतना मीठा गाता था कि एक गरीब मछियारा भी जिसको अपना ही बहुत काम रहता था वह भी रात को जब अपना मछली पकड़ने वाला जाल समुद्र में डालने जाता तो उसका गाना सुनने के लिये रुक जाता।

उसके मुँह से निकलता "ओह कितना सुन्दर गाता है यह।"

पर उसको अपना काम देखना होता था सो वह वहाँ से चल देता और फिर उस चिड़िया का गाना भूल जाता। पर अगली रात जब वह उसका गाना फिर से सुनता तो फिर कहता "ओह कितना सुन्दर गाना है यह।"

बहुत से देशों से बहुत सारे लोग इस बादशाह के देश आते थे। वे उसके देश की तारीफ करते। वे उसके महल की और उसके बागीचे की तारीफ करते पर जब वे बुलबुल को सुनते तो कहते कि "बस यहाँ यही सबसे अच्छा है।"

जब वे यात्री अपने घर पहुँचते तो उसके बारे में बात करते। विद्वान लोगों ने बादशाह के देश के बारे में उसके महल और उसके बागीचे के बारे में कई किताबें लिखीं पर वे बुलबुल को नहीं भूले।

उन्होंने उन सब चीज़ों में बुलबुल की सबसे ज़्यादा तारीफ की। उनमें से भी जो अच्छे कवि थे उन्होंने उस बुलबुल के बारे में बहुत अच्छी अच्छी कविताऐं लिखीं।

वे किताबें दुनियाँ भर में फैल गयीं। उनमें से कुछ किताबें चीन के इस बादशाह के पास भी आयीं। वह अपने सोने के सिंहासन पर बैठ कर उन किताबों को पढ़ता।

उनमें लिखे अपने देश के, अपने महल के और अपने बागीचे के बारे में पढ़ कर वह बहुत खुश होता और हॉ में अपना सिर हिलाता। उसने उन किताबों में पढ़ा कि "मगर वहॉ का बुलबुल सबसे अच्छा है।"

बादशाह के मुँह से निकला — "अरे यह क्या है। मुझे तो इस बुलबुल का पता ही नहीं है? क्या मेरे राज्य में और मेरे ही बागीचे में ऐसी कोई चिड़िया है और मुझे उसका पता नहीं है। मुझे लगता है कि मुझे इस किताब से ही सीखना पड़ेगा।"

उसने अपने खास आदमी[47] को बुलाया तो वह तो अपने आपको बहुत ऊँचा समझने लगा क्योंकि जब उससे उसके नीचे

[47] Translated for the words "Lord-in-Waiting"

वाला कोई बात करता या सवाल पूछता तो वह बस एक ही जवाब देता "पी" जिसका अर्थ "कुछ नहीं" होता।

बादशाह ने उससे पूछा — "मैंने सुना है कि हमारे बागीचे में एक बुलबुल है। साथ में वे यह भी कहते हैं कि वह मेरे राज्य में सबसे अच्छा है। तो मुझे उसके बारे में क्यों नहीं बताया गया?"

उस खास आदमी ने कहा — "मैंने इसका नाम कभी नहीं सुना योर मैजेस्टी और इसको कभी दरबार में पेश भी नहीं किया गया।"

"मैं तुमको हुक्म देता हूँ कि आज शाम को इसको हमारे दरबार में पेश किया जाये और इसको गाने के लिये कहा जाये। कितनी अजीब बात है कि मेरी चीज़ के बारे में सारी दुनियाँ जानती है और बस मैं ही नहीं जानता।"

वह खास आदमी फिर बोला — "मैंने इसके बारे में कभी सुना नहीं पर मैं इसको ढूँढूँगा और इसके बारे में पता करूँगा।"

पर वह कहाँ पता करेगा। वह खास आदमी ऊपर दौड़ा नीचे दौड़ा सारे कमरे देखे सारे गलियारे[48] देखे पर उसे कोई ऐसा नहीं मिला जिसने ऐसे बुलबुल का नाम सुना हो।

वह खास आदमी वापस बादशाह के पास दौड़ा आया और बोला — "लगता है कि यह कहानी किताब लिखने वालों ने अपने मन से बना कर लिख दी है। योर मैजेस्टी को यह मुश्किल से विश्वास होगा कि इसमें कितनी सच्चाई है या कितनी कल्पना है।"

[48] Translated for the word "Corridor.

"पर यह किताब तो मुझे जापान के ताकतवर बादशाह ने भेजी है इसलिये यह किताब झूठ से भरी हुई नहीं हो सकती। मुझे इस बुलबुल को सुनना है। मुझे यह बुलबुल आज शाम को अपने दरबार में चाहिये। उसको मेरी बहुत ऊँची शाही कृपा मिलेगी।

और अगर वह नहीं आया तो मैं अपने सारे दरबार के लोगों को रात के खाने के बाद उनके पेट में घूँसे मारूँगा।"

"सिंग–पी।"[49] कह कर वह खास आदमी वहाँ से फिर से सारे कमरों और सारे गलियारों से हो कर सीढ़ियों से ऊपर की तरफ चला गया। आधा दरबार उसके पीछे पीछे गया क्योंकि कोई भी आदमी रात का खाना खाने के बाद अपने पेट में घूँसे लगवाना नहीं चाहता था।

इस बुलबुल के बारे में बहुत पूछताछ की गयी कि वह आखिर कहाँ है जो सिवाय घर के दुनियाँ भर में इतना ज़्यादा मशहूर है। आखिर उनको रसोई में काम करने वाली एक लड़की मिल गयी जिसने बताया —

"ओह वह बुलबुल? मैं जानती हूँ उस बुलबुल को। वह गा सकता है। हर शाम मैं खाने की मेज से बचा हुआ खाना अपनी बीमार माँ के लिये ले कर जाती हूँ। वह समुद्र के किनारे रहती है। तो जब मैं वहाँ से वापस आती हूँ तो मैं थक जाती हूँ तो जंगल में थोड़ा आराम कर लेती हूँ।

---

[49] Tsing-Pe

उस समय में उसका गाना सुनती हूँ तो उसको सुन कर मेरी ऑखों में ऑसू आ जाते हैं। उस समय मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरी मॉ मुझे चूम रही हो।"

बादशाह के उस खास आदमी ने उससे कहा — "ओ रसोई में काम करने वाली लड़की, मैं तुझे हमेशा के लिये रसोई में काम करने वाले से तरक्की करा कर रसोई में सहायता करने वाला[50] बना दूँगा।

मैं तेरे लिये बादशाह को खाना खाते देखने की इजाज़त भी दिलवा दूँगा अगर आज शाम को तू मुझे उस बुलबुल के पास ले चले क्योंकि उसको आज शाम को दरबार में हाजिर होना है।"

सो वे दोनों जंगल में उस जगह गये जहॉ वह बुलबुल अक्सर गाया करता था। आधे दरबारी भी उनके साथ गये। जब वे सब जंगल जा रहे थे तो एक गाय रॅभाने लगी।

एक दरबारी उसके रॅभाने को सुन कर चिल्लाया — "ओह वह बुलबुल यही होगा। वाह इस छोटे से प्राणी की कितनी तेज़ आवाज है। मुझे यकीन है कि मैंने इसको पहले भी गाते हुए सुना है।"

रसोई में काम करने वाली वह छोटी लड़की बोली — "नहीं यह तो गाय है जो रॅभा रही है। अभी तो हमें बहुत दूर जाना है।"

[50] Translated for the word "Scullion" which means "I will employ you as as a "kitchen helper" instead of kitchenmaid that you are now."

बीच में दलदल के मेंढक टर्राये तो एक दरबारी बोला — "ओह कितना सुन्दर। मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे चर्च के घंटे बज रहे हों।"

रसोई में काम करने वाली वह छोटी लड़की फिर बोली — "ओह ये तो मेंढक हैं पर हम अब उसे जल्दी ही सुनेंगे।"

उसके बाद बुलबुल के गाने की आवाज आयी तो रसोई में काम करने वाली वह छोटी लड़की बोली — "यह है वह देखो यह है वह। देखो वह उधर बैठा है।"

कह कर उसने एक भूरी चिड़िया की तरफ इशारा किया जो एक पेड़ पर एक ऊँची सी शाख पर बैठी थी।

बादशाह का वह खास आदमी चिल्लाया — "उफ़ क्या यह मुमकिन है? मैंने तो कभी यह सोचा भी नहीं था कि यह बुलबुल ऐसा दिखायी देता होगा। कितना अजीब सा है यह। पर शायद यह इतने सारे लोगों को देख कर पीला पड़ गया है।"

उसको देख कर रसोई में काम करने वाली वह छोटी लड़की चिल्लायी — "ओ छोटे बुलबुल। हमारे बादशाह तुम्हारा गाना सुनना चाहते हैं।"

बुलबुल बोला — "अच्छा। बड़ी खुशी से।"

और उसने गाना गाना शुरू कर दिया।

बादशाह का खास आदमी बोला — “अरे इसका गाना तो ऐसा है जैसे शीशे की घंटियाँ बज रही हों। और इसका छोटा सा गला तो देखो यह कितनी जल्दी जल्दी फड़क रहा है।

मुझे ताज्जुब है कि हमने इसे पहले कभी क्यों नहीं सुना। मुझे यकीन है कि इससे हमारे दरबार में चार चाँद लग जायेंगे।”

बुलबुल को लगा कि बादशाह वहीं हैं तो उसने पूछा — “क्या मैं बादशाह के लिये फिर से गाऊँ?”

बादशाह के खास आदमी ने कहा — “ओ मेरे छोटे बुलबुल मुझे तो यह हुक्म मिला है कि मैं तुमको आज शाम को बादशाह के दरबार में पेश करूँ जहाँ तुम अपने गाने से बादशाह का दिल बहलाओ।”

बुलबुल बोला — “मेरा गाना तो इस सारे जंगल में सबसे अच्छा है।” पर जब उसने सुना कि यह बादशाह की इच्छा है कि मैं उनके दरबार में गाऊँ तो वह उनके साथ चला गया।

इस मौके के लिये बादशाह का महल खास कर के पालिश किया गया था। पोर्सलेन की दीवारें और फर्श बहुत सारे सोने के लैम्पों की रोशनी में चमक रहे थे।

बादशाह के बागीचे में जिन फूलों पर चाँदी की घंटियाँ लगी हुई थीं उन फूलों को अन्दर लाया गया था। वहाँ इतने सारे लोग आ जा रहे थे कि उनके आने जाने से वे घंटियाँ बहुत ज़ोर ज़ोर से बज रही थीं।

बादशाह के राज दरबार के बीच में सिंहासन रखा था जहाँ बादशाह बैठते थे। उसके पास ही बुलबुल के बैठने की सोने की जगह बनवायी गयी थी। सारा दरबार वहाँ जमा था।

उन लोगों ने रसोई में काम करने वाली उस छोटी लड़की को भी दरवाजे के पीछे खड़े होने की इजाज़त दे दी थी। अब उसको शाही बर्तन धोने वाली बना दिया गया था।

सब लोग अपने सबसे अच्छे कपड़े पहिने हुए थे और सबकी निगाहें उस भूरी बुलबुल पर ही जमी हुई थीं। बादशाह भी उस चिड़िया को देख कर अपना सिर हिला रहे थे।

और तब बुलबुल ने अपना गाना शुरू किया तो बादशाह की आँखों में आँसू आ गये और वे उनके गालों तक बह आये। उसके बाद बुलबुल ने और ज़्यादा मीठे गाने गाये तो बादशाह का तो दिल भी पिघलने लगा।

वह बुलबुल का गाना सुन कर इतना खुश हुए कि उनका दिल चाहा कि इनाम के तौर पर वह अपना सोने का जूता उस बुलबुल के गले में पहना दें पर बुलबुल ने नम्रता से उनको यह करने से मना कर दिया। उसको अपने गाने का काफी इनाम मिल चुका था।

बुलबुल बोला — "मैंने बादशाह की आँखों में आँसू देखे इससे बड़ा इनाम मेरे लिये और क्या हो सकता है। एक बादशाह के आँसू तो बहुत ताकतवर होते हैं। मुझे मेरा इनाम मिल गया।" यह कह कर उसने फिर गाना शुरू कर दिया।

बादशाह की सेवा में रहने वाली स्त्रियाँ बोलीं — "हमारे अब तक के सुने हुए गानों में यह सबसे सुन्दर और मीठा गाना है।"

कह कर उन्होंने इस उम्मीद में अपने मुँह में पानी भर कर कुल्ले किये कि जब कोई उनसे बात करेगा तो वे भी शायद बुलबुल की तरह से मीठा बोल सकेंगी।

महल की दासियाँ भी बुलबुल के गाने से बहुत सन्तुष्ट थी क्योंकि उनको खुश करना भी बहुत मुश्किल काम था और वह उस बुलबुल ने कर दिया था। इस तरह उस बुलबुल का वहाँ खूब ज़ोर शोर से स्वागत हुआ और तारीफ हुई।

अब उसको बादशाह के दरबार में उसके अपने पिंजरे में ही रहना था। उसको घूमने के लिये दिन में दो बार और रात में एक बार बाहर जाने की इजाज़त थी।

बारह लोग उसकी सेवा में तैनात थे और हर एक के हाथ में उसके पैर में बँधी हुई रस्सी थी। पर इस तरह के बाहर जाने में कोई मजा नहीं था।

अब सारा शहर उस चिड़िया की बात करता था। अगर एक कहता "नाइट" तो दूसरा तुरन्त ही कहता "गेल"।[51]

ग्यारह सूअर काटने वालों के बच्चों के नाम बुलबुल[52] रखे गये पर उनमें से कोई गा भी नहीं सकता था।

---

[51] This bird is called "Nightinagale" in English that is why this word has been divided in these two words – Night and Gale

[52] Nightingale

एक दिन बादशाह को एक पैकेट मिला जिस पर "नाइटिन्गेल" लिखा हुआ था। बादशाह ने सोचा कि यह उनके बुलबुल के बारे में शायद कोई और किताब होगी। पर ऐसा नहीं था।

उसमें बुलबुल की शक्ल की एक मूर्ति रखी थी जो बिल्कुल असली बुलबुल लग रही थी सिवाय इसके कि वह मूर्ति हीरे लाल और नीलम से जड़ी हुई थी।

जब उसको चाभी लगायी जाती थी तो वह बुलबुल का गाया एक गाना गाती थी और सोने और चाँदी की बनी हुई पूँछ हिलाती थी।

उसके गले में एक रिबन से बँधे हुए कागज पर यह लिखा था "जापान के बादशाह का बुलबुल चीन के बादशाह के बुलबुल की तुलना में एक बहुत ही गरीब पक्षी है।"

हर एक के मुँह से निकला "अरे यह तो बड़ा अच्छा है।" और वह आदमी जो उस पैकेट को ले कर आया था उसको "शाही बुलबुल पकड़ने वाले का सरदार"[53] बना दिया गया।

दरबारियों ने कहा — "अब इन दोनों बुलबुलों को साथ साथ गाने दिया जाये तो कितना अच्छा दोगाना रहेगा।"

सो दोनों ने साथ साथ गाया पर बात कुछ जमी नहीं क्योंकि ज़िन्दा बुलबुल ने तो वही गाया जो उसके दिमाग में आया जबकि नकली बुलबुल ने वह गाया जो उसमें भरा हुआ था।

[53] Translated for the words "Imperial-Nightingale-Fetcher-in-Chief"

शाही गवैये ने कहा कि यह नकली बुलबुल का दोष नहीं था क्योंकि वह तो वही गा रहा था जो उसने उसे सिखाया था। तब उन्होंने उस नकली बुलबुल को अपने आप गाने दिया। इस बार उस नकली बुलबुल ने ठीक से गाया जैसा कि असली बुलबुल गा रहा था।

इसके अलावा वह असली बुलबुल से कहीं ज़्यादा सुन्दर था। उसके पंजों में गहने पड़े थे और छाती पर पिनें जड़ी थीं।

उसने अपने आप से तैंतीस बार बिना थके गाया।

दरबारी तो उसको फिर सुन लेते पर बादशाह ने कहा कि अब असली बुलबुल को भी तो मौका मिलना चाहिये। पर वह था कहाँ? किसी ने यह देखा ही नहीं कि वह खुली हुई खिड़की से बाहर जंगल में अपने घर की तरफ उड़ गया था।

बादशाह के मुँह से निकला "पर उसने ऐसा क्यों किया?"

सारे दरबारियों ने यह कह कर उसकी बेइज़्ज़ती की कि वह तो बहुत ही कृतघ्न नीच निकला। अच्छा है कि अब हमारे पास सबसे अच्छी चिड़िया है। और उन्होंने उस नकली बुलबुल से दोबारा गाना गवाया।

यह गीत वे चौंतीसवीं बार सुन रहे थे पर वे उसको याद नहीं कर सके क्योंकि वह बहुत ही मुश्किल धुन थी। संगीतज्ञ उस नकली बुलबुल की कुछ ज़्यादा ही तारीफ कर रहा था कि यह नकली बुलबुल उस असली बुलबुल से कहीं ज़्यादा अच्छा था।

वह केवल दिखने में और हीरे जड़े होने की वजह से ही ज़्यादा अच्छा नहीं था बल्कि उसके अन्दर की मशीन भी बहुत अच्छी थी।

वह फिर बोला — "देखो न स्त्रियों और पुरुषों और योर मैजेस्टी कि असली बुलबुल कब क्या करेगा यह पता नहीं चल सकता पर यह नकली बुलबुल अपने प्लान के अनुसार ही काम करेगा। इसमें कहीं किसी शक की कोई गुंजायश नहीं है।

मैं इस बात को आपको समझा सकता हूँ। पहले मैं इसके टुकड़े टुकड़े कर देता हूँ और फिर आप सबको समझाता हूँ कि इसमें इसकी मशीन के पहिये किस तरह से लगाये गये हैं। ये कैसे चारों तरफ घूमते हैं और कैसे एक दूसरे के पीछे चलते हैं।"

सबने कहा "यही तो हम जानना चाहते हैं।"

और उस संगीतज्ञ को अगले रविवार को यह सब दिखाने के लिये कहा गया। बादशाह ने अपने सभी लोगों से कहा कि उनको वह सब सुनना चाहिये जो वह उस दिन बतायेगा। और उसे केवल सुनना ही नहीं चाहिये बल्कि खुशी से सुनना चाहिये अगर चीन के फैशन के अनुसार उनको चाय के साथ कुछ खाना भी है।

सबने अपने अपने हाथ उठा कर हाँ कर दी।

पर जिस मछियारे ने उस असली बुलबुल को गाते सुना था बोला — "यह बुलबुल बहुत अच्छा है और असली बुलबुल जैसा ही लगता है पर फिर भी यह वैसा नहीं है। हालाँकि मैं यह नहीं बता सकता कि इसमें क्या कमी है।"

असली बुलबुल को देश से निकाल दिया गया। अब उसकी जगह वह नकली बुलबुल बादशाह के पास एक गद्दी पर बैठा करता था। उसके सारे जवाहरात उसके पास पड़े रहते और अब उसका नाम था "बादशाह को सुलाने वाल शानदार शाही गवैया"।

वह बादशाह के बॉयी तरफ उनके बराबर में बैठता था क्योंकि बादशाह अपने बॉये हाथ की जगह को अपना दिल उधर होने की वजह से बहुत बड़ा मानते थे।

उस संगीतज्ञ ने फिर उस नकली बुलबुल के बारे में **25** खंड की एक किताब लिखी। उसको लोगों को सीखने के लिये दिया गया। उसमें चीनी भाषा के बहुत सारे बहुत मुश्किल शब्द थे पर लोगों का कहना था कि उन्होंने उसको पढ़ लिया था और समझ भी लिया था। कहीं ऐसा न हो कि लोग उनको बेवकूफ समझें और उनके पेट में फिर घूँसा मारें।

एक साल के बाद बादशाह, उनके दरबारियों और दूसरे लोगों को सबको उस नकली बुलबुल के गीत याद हो गये थे। अब वे उनको और ज़्यादा अच्छे लगने लगे थे क्योंकि अब वे उनको खुद भी गा सकते थे।

और वे गाते भी थे। "ज़ीज़ीज़ी क्लक क्लक क्लक। ज़ीज़ीज़ी क्लक क्लक क्लक।" यहॉ तक कि बादशाह भी गाते थे इसी लिये वह इतना लोकप्रिय हो गया था।

लेकिन एक रात जब वह नकली बुलबुल बादशाह के बिस्तर के पास गा रहा था तो एक ट्वैंग की आवाज के साथ उस चिड़िया के अन्दर कुछ टूट गया। उसके पहिये रुक गये तो उसका संगीत भी रुक गया।

बादशाह तुरन्त ही अपने बिस्तर से कूद गये और अपने डाक्टर को बुला भेजा। पर वह बेचारा डाक्टर क्या करता। यह कोई ज़िन्दा चिड़िया तो थी नहीं।

फिर उसने एक घड़ीसाज़ को बुलवाया तो उसने उस चिड़िया की मरम्मत की पर साथ में बादशाह को यह चेतावनी भी दी कि उस चिड़िया से उसे बहुत काम नहीं लेना चाहिये क्योंकि उसके अन्दर के कॉटे अब काफी घिस गये हैं। और अगर उन कॉटों को बदलवाया गया तो उसकी धुन में फर्क आ सकता है।

अब यह तो बड़ी गड़बड़ बात थी कि वे उस चिड़िया को साल में केवल एक बार ही गवा सकते थे। और यह तो उनके लिये बहुत ज़्यादा था।

तब संगीतज्ञ ने मुश्किल चीनी भाषा में एक भाषण दिया जिसमें उसने यह कहा कि चिड़िया में कोई खराबी नहीं है वह पहले जैसी ही ठीक है।

फिर पॉच साल बीत गये। अबकी बार राज्य पर सचमुच का दुख आ पड़ा। चीन के लोग अपने बादशाह को बहुत प्यार करते

थे पर अब वह बीमार पड़े थे और ऐसा कहा गया कि उनके ठीक होने का कोई तरीका ही समझ में नहीं आ रहा था।

एक नया बादशाह चुन कर रख लिया गया था। लोग महल की सडकों पर खड़े हुए थे और बादशाह के खास आदमी से उनके बारे में पूछ रहे थे कि वह अब कैसे हैं।

उसने कहा "पी" और अपना सिर ना में हिला दिया।

बादशाह अपने शानदार बिस्तर पर पीले और ठंडे लेटे हुए थे। सारे दरबारियों को ऐसा लग रहा था जैसे कि वह मर गये हों सो वे नये बादशाह को बुलाने गये।

महलों में काम करने वाली स्त्रियों ने गपशप मारनी शुरू कर दी कौफी पार्टी शुरू कर दी क्योंकि यह तो एक खास मौका था। सारे कमरों और गलियारों में खूब मोटे मोटे कालीन बिछाये गये ताकि वहॉ से कोई चले तो उसके चलने की आवाज न हो। सारे महल में मौत का सा सन्नाटा छाया हुआ था।

पर बादशाह अभी मरे नहीं थे। उनका शरीर पीला हो गया था और अकड़ गया था पर वह अभी भी अपने शानदार बिस्तर पर लेटे हुए थे जिसके लम्बे मखमली परदे थे और उनमें सोने के भारी भारी फुँदने[54] लगे हुए थे।

[54] Translated for the word “Tassel”. See its picture above.

उस कमरे की दीवार पर ऊँचाई पर एक खिड़की थी जिससे चॉदनी अन्दर आ रही थी और बादशाह और उसकी नकली चिड़िया पर पड़ रही थी।

बेचारे बादशाह बड़ी मुश्किल से सॉस ले पा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे कोई उनकी छाती पर बैठा हो। उन्होंने ऑख खोल कर देखा तो मौत को वहॉ बैठा देखा।

उसने बादशाह का ताज पहन रखा था। उसके हाथ में बादशाह की सोने की तलवार थी और बादशाह का रेशम का झंडा था।

बादशाह के बिस्तर पर लगे मखमल के परदों की सिलवटों में कई अजीब से जाने पहचाने चेहरे थे। उनमें से कुछ भयानक थे और कुछ अच्छे थे। वे सब बादशाह के अपने कर्म थे – बुरे और अच्छे जो अब मौत के समय उनके पास आ गये थे।

"तुमको हमारी याद नहीं है।" "तुमको हमारी याद नहीं है।" वे बारी बारी से बादशाह से यह पूछ रहे थे जिससे बादशाह के माथे पर पसीना आ गया।

बादशाह बोले — "नहीं मुझे याद नहीं है। संगीत, संगीत, चीन के ढोल की आवाज बहुत है वह बजाओ। कहीं ऐसा न हो कि मैं वह सुन लूॅ जो वे कह रहे हैं।" और मौत ने हॉ में सिर हिलाया।

"संगीत संगीत। ओ मेरी छोटी कीमती चिड़िया गाओ। मैंने तुम्हें सोना दिया कीमती भेंटें दीं अपना सोने का जूता तुम्हारे गले में लटकाया। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूॅ कि गाओ।"

पर वह चिड़िया तो चुपचाप रही क्योंकि उसको चाभी लगाने वाला वहाँ कोई नहीं था। उसको गवाने वाला वहाँ कोई नहीं था। मौत बादशाह की खाली ऑखों में देखती रही।

मौत का सन्नाटा छा रहा था कि अचानक दीवार की ऊपर वाली खिड़की से एक गीत आया। यह उस ज़िन्दा बुलबुल का गीत था जो उस खिड़की के बाहर ही एक शाख पर बैठा था।

उसने बादशाह की हालत सुन ली थी इसलिये वह उनके लिये उम्मीद ले कर गाने चला आया था। जैसे ही उसने गाया तो वे अजीब से चेहरे जो बादशाह के बिस्तर के मखमली परदों की सिकुड़नों में दिखायी दे रहे थे पीले पड़ने लगे और बादशाह के शरीर में खून तेज़ी से दौड़ने लगा।

यहाँ तक कि मौत ने भी उसका गाना सुना तो बोली "गाते रहो गाते रहो ओ बुलबुल गाते रहो।"

बुलबुल बोला — "पर क्या तुम बादशाह की वह तलवार वह झंडा और उनका वह ताज वापस दे दोगी?"

और मौत ने उसको एक गीत के बदले में वह सब वापस कर दिया। बुलबुल गाता रहा। उसने उस शान्त चर्च के ऑगन के बारे में गाया जहाँ सफेद गुलाब उगते हैं। जहाँ ऐल्डर के फूल महक कर सारी हवा को खुशबूदार बनाते हैं। जहाँ घास हमेशा हरी रहती है और उनके ऑसुओं से गीली रहती है जो अभी भी ज़िन्दा है।

मौत को यह बागीचा बहुत अच्छा लगता था सो वह एक कोहरा बन कर खिड़की से हो कर बाहर निकल गया।

बादशाह बोले — "धन्यवाद धन्यवाद स्वर्ग से आयी ओ चिड़िया तुझे धन्यवाद। मुझे मालूम है कि एक बार मैंने तुझे अपने राज्य से निकाल दिया था पर तूने उन बुरे चेहरों को मेरे बिस्तर के पास से भगा दिया और मौत को भी मेरे दिल से। मैं तुझे इसका बदला कैसे चुकाऊँ।"

बुलबुल बोला — "आपने तो मुझे पहले ही बहुत कुछ दे दिया है। जब मैंने पहली बार गाया था तो मैं तो आपकी ऑखों में ऑसू ले आया था। किसी गाने वाले के दिल के लिये वे किसी भी कीमती पत्थर से भी ज़्यादा कीमती चीज़ थे।

पर अब आप सो जाइये और मेरा गाना सुन कर तरोताजा और ताकतवर हो जाइये।"

और फिर वह बुलबुल वहॉ तब तक गाता रहा जब तक बादशाह गहरी नींद नहीं सो गया।

जब बादशाह सो कर उठे तो सुबह हो चुकी थी सूरज निकल आया था और वह उनकी खिड़की से चमक रहा था। बादशाह अब बिल्कुल ठीक थे। उनका कोई भी नौकर वहॉ नहीं था क्योंकि उन्होंने सोचा कि वह मर गये थे पर बुलबुल अभी भी गा रहा था।

बादशाह बुलबुल से बोले "तुम हमेशा मेरे साथ रहना और तुम तभी गाना जब तुम्हारी इच्छा हो। मैं इस नकली चिड़िया के हजारों टुकड़े कर के फेंक दूँगा।"

बुलबुल बोला — "नहीं योर मैजेस्टी। उसने जो कुछ उससे हो सकता था किया। उसे आप अपने पास ही रखें। मैं अपना घोंसला यहाँ नहीं बना सकता और न ही मैं महल में रह सकता हूँ सो जब भी मैं चाहूँगा यहाँ आ जाऊँगा।

यहाँ आ कर मैं आपकी इस खिड़की के पास की शाख पर बैठ जाऊँगा और फिर आपको ऐसी ऐसी चीज़ें सुनाऊँगा जिनसे आप खुश भी होंगे और दूसरों की परवाह भी करेंगे।

मैं आपको उनके गीत सुनाऊँगा जो खुशदिल हैं और जो दुखी हैं। मेरे गीत आपको उन सब अच्छे और बुरों के बारे में बतायेंगे जो आपको मालूम नहीं हैं।

एक छोटी सी गाने वाली चिड़िया बहुत दूर दूर तक जाती है – मछियारे की झोंपड़ी तक, किसान के घर तक और आपसे और आपके दरबार से भी बहुत दूर दूर तक।

मुझे आपके ताज से आपका दिल ज़्यादा पसन्द है पर फिर भी आपका ताज भी तो आपके लिये एक आशीर्वाद है। मैं आऊँगा और आपके लिये गाऊँगा अगर आप मुझसे एक बात का वायदा करें तो।"

बादशाह अपनी शाही पोशाक पहिने खड़े थे वह पोशाक उन्होंने खुद ही पहनी थी। अपनी सोने की तलवार को अपने सीने से लगाते हुए वह बोले — "मेरा जो कुछ है वह तुम्हारा है। बोलो तुम्हें क्या चाहिये।"

बुलबुल बोला — "केवल एक बात। वह यह कि आप किसी से यह नहीं कहना कि एक छोटी सी चिड़िया आपसे सब कुछ कहती है तब और ज़्यादा अच्छा रहेगा।" और यह कह कर वह उड़ गया।

उसके बाद बादशाह के नौकर अपने मरे हुए बादशाह को देखने के लिये आये तो वे तो वहाँ खड़े के खड़े ही रह गये।

बादशाह बोले — "गुड मौर्निंग।"

15 नुंग ग्वामा[55]

चीन की यह कहानी एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी है। लीजिये आज आप इसे पढ़िये हिन्दी में।

यह बहुत दिनों पहले की बात हे कि चीन में एक स्त्री ने अपने माता पिता के लिये चावल के कुछ केक बनाये। वह उनको उनके घर देने जाना चाहती थी।

उसके माता पिता काफी दूर रहते थे। उनके घर का रास्ता एक अँधेरे घने बाँस के जंगल से हो कर जाता था। लोगों का कहना था कि वहाँ नुंग ग्वामा नाम का एक बड़ा राक्षस[56] रहता था।

वे उसके बारे में यह भी कहते थे कि वह सब तरह के जानवर और आदमी खाता था। पहले वह उनकी हड्डियाँ तोड़ देता था और उन सबको तोड़ कर फिर उनका सब कुछ खा जाता था – बाल, हड्डी हर चीज़।

उस स्त्री ने पहले कभी राक्षस देखा नहीं था पर फिर भी वह जब उस जंगल में से जाने लगी तो उस जंगल में से जल्दी जल्दी चली।

[55] Nung Gwama: a Chinese Folktale – a folktale from China, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=208 Retold by Mike Lockett.
[56] Translated for the word "Monster"

वह वह बाँस का जंगल करीब करीब सारा पार कर गयी थी कि उस जंगल के आखीर में वह राक्षस उसके सामने कूद कर आ खड़ा हुआ।

उसका शरीर बैल का था और उसका सिर इतना बड़ा था जितना कि कोई ओवन[57]। वह अपने दाँत पीस रहा था और अपने भयानक पंजे आगे की तरफ बढ़ा कर चलता चला आ रहा था। चलते समय उसके बड़े बड़े पैर फ्लिप फ्लौप फ्लिप फ्लौप की आवाज कर रहे थे।

वह बोला — "आर्ग आर्ग, मुझे वह चावल की केक दो मुझे वह खाने हैं।"

वह स्त्री डर गयी पर फिर भी बोली — "नहीं ये केक तो मेरे माता पिता के लिये हैं मैं इनको तुमको नहीं दे सकती।"

भयानक नुंग ग्वामा बोला — ठीक है ठीक है। मान लिया कि माता पिता बहुत जरूरी होते हैं पर आज रात मैं तुम्हें खाने आ रहा हूँ।"

वह स्त्री बहुत डरी हुई थी सो उसने उसे वह केक उसे दे दिये और घर वापस चली गयी पर सारे रास्ते वह डर के मारे काँपती ही रही। वह चलती जा रही थी और कहती जा रही थी —

ओह यह भयानक नुंग ग्वामा यह भूखा नुंग ग्वामा आज मुझे खाने मेरे घर आ रहा है

---

[57] An oven is a thermally insulated chamber used for the heating, baking or drying of a substance, and most commonly used for cooking. Kilns and furnaces are special-purpose ovens, used in pottery and metalworking, respectively.

उसी रास्ते से एक और आदमी जा रहा था। उसने जब यह सुना तो उसके मुँह से निकला — "ओह मेरे भगवान।"

फिर वह उस स्त्री से बोला — "यह भयानक नुंग ग्वामा तो हड्डियाँ तक खा जाता है। तुम ये सुई और पिनें रख लो। तुम इनको अपने दरवाजे के ताले के पास रख देना। हो सकता है कि वह अपनी उंगलियाँ उसमें घुसाये तो शायद इनके चुभने के दर्द की वजह से वह चला जाये।"

स्त्री बोली — "हो सकता है कि वह चला जाये और अगर वह नहीं गया तो।" कह कर वह स्त्री फिर रोने लगी और बोली —

ओह यह भयानक नुंग ग्वामा यह भूखा नुंग ग्वामा आज मुझे खाने मेरे घर आ रहा है

उधर से एक किसान जा रहा था। यह सुन कर वह भी बोला — "ओह मेरे भगवान वह भयानक नुंग ग्वामा तो हड्डियाँ तक खा लेता है।"

वह अपनी गाड़ी में सूअर की टट्टी की खाद धकेलता चला जा रहा था। उसने अपनी गाड़ी में से सूअर की टट्टी की एक टोकरी खाद उस स्त्री को दी और कहा — "लो तुम यह खाद ले जाओ और इसको अपने दरवाजे के पास रख देना। अगर उसके हाथ इससे गन्दे हो जायेंगे और उनमें बदबू आ जायेगी तो शायद वह चला जाये।"

स्त्री बोली — "हो सकता है कि वह चला जाये और अगर वह नहीं गया तो।" कह कर वह स्त्री फिर रोने लगी और बोली —

ओह यह भयानक नुंग ग्वामा यह भूखा नुंग ग्वामा आज मुझे खाने मेरे घर आ रहा है

तभी वहाँ से एक साँप बेचने वाला जा रहा था। उस स्त्री की आवाज सुन कर वह भी बोला — "ओह मेरे भगवान वह भयानक नुंग ग्वामा तो हड्डियाँ तक खा लेता है।"

उसकी झोली में कई साँप थे। उसने उनमें से दो साँप निकाले और उस स्त्री को देते हुए कहा — "लो तुम ये दो साँप ले जाओ और इनको अपने हाथ धोने के बर्तन के पास रख देना। हो सकता है कि नुंग ग्वामा अपने खाद लगे हाथ धोना चाहे तो ये साँप उसको काट लेंगे। तो शायद वह चला जाये।"

स्त्री बोली — "हो सकता है कि वह चला जाये और अगर वह नहीं गया तो।" कह कर वह स्त्री फिर रोने लगी और बोली —

ओह यह भयानक नुंग ग्वामा यह भूखा नुंग ग्वामा आज मुझे खाने मेरे घर आ रहा है

तभी वहाँ से एक मछियारा जा रहा था। उस स्त्री की आवाज सुन कर वह भी बोला — "हे भगवान वह भयानक नुंग ग्वामा तो हड्डियाँ तक खा लेता है।"

उसने अपने पास से उस स्त्री को दो काटने वाली मछलियाँ दे कर कहा — "इन मछलियों को किसी हलके गर्म पानी की बालटी में

रख देना। अगर नुंग ग्वामा को सॉप काटेगा तो हो सकता है कि वह गर्म पानी में अपने हाथ रखना चाहे तब यह मछली उसे काट लेगी। इससे शायद वह चला जाये।"

स्त्री बोली — "हो सकता है कि वह चला जाये और अगर वह नहीं गया तो।" कह कर वह स्त्री फिर रोने लगी और बोली —

ओह यह भयानक नुंग ग्वामा यह भूखा नुंग ग्वामा आज मुझे खाने मेरे घर आ रहा है

तभी वहॉ से एक अंडा बेचने वाला जा रहा था। उस स्त्री को सुन कर उसके मुँह से भी निकला — "हे मेरे भगवान वह भयानक नुंग ग्वामा तो हड्डियॉ तक खा जाता है।"

उसने उस स्त्री से कहा — "लो तुम मेरे ये कुछ अंडे ले लो और इनको गर्म राख में रख देना। अगर सॉप और मछली उसको काटेंगे तो उसकी उॅगलियों में से खून निकल आयेगा।

उस समय शायद वह अपना खून रोकने के लिये उनको गर्म राख में रखना चाहे तो ये अंडे फूट कर उसके चेहरे पर बिखर जायेंगे जो उसके चेहरे को तकलीफ पहुॅचायेंगे। तब शायद वह चला जाये।"

स्त्री बोली — "हो सकता है कि वह चला जाये और अगर वह नहीं गया तो।" कह कर वह स्त्री फिर रोने लगी और बोली —

ओह यह भयानक नुंग ग्वामा यह भूखा नुंग ग्वामा आज मुझे खाने मेरे घर आ रहा है

तभी एक आदमी उधर से चक्की के बड़े बड़े पाट ले कर जा रहा था जो अनाज पीसने के काम आते हैं।

उसने जब उस स्त्री को यह कहते सुना तो उसके मुँह से भी निकला — "ओह मेरे भगवान वह भयानक नुंग ग्वामा तो हड्डियाँ तक खा जाता है।"

फिर उसने उस स्त्री से कहा — "लो इनमें से चक्की का एक पाट तुम लुढ़काती हुई अपने घर ले जाओ। घर ले जा कर इसको एक रस्सी के सहारे अपने बिस्तर के ऊपर लटका देना।

जब वह तुम्हारे घर आये तो उसको इस पत्थर के नीचे खड़े होने के लिये कहना और जब वह इसके नीचे खड़ा हो जाये तो इसकी रस्सी काट देना। बस यह पत्थर उसके ऊपर गिर पड़ेगा और वह मर जायेगा।"

उस स्त्री ने सोचा शायद नुंग ग्वामा इस पत्थर के नीचे दब कर मर जाये। पर अगर वह इसके नीचे भी आ कर न मरा तो। पर फिर भी वह उस पत्थर को अपने घर ले आयी।

घर आ कर उसने सुइयाँ अपने घर के दरवाजे के पास रखीं। बदबूदार खाद सुइयों के पास डाला। साँप उसने अपने हाथ धोने वाले टब में डाले और मछली गर्म पानी में डालीं। अंडे उसने गर्म राख में रखे और वह चक्की का पाट उसने अपने बिस्तर के ऊपर रस्सी से लटका दिया।

यह सब कर के उसने अपना लैम्प बुझा दिया और नुंग ग्वामा का इन्तजार करने लगी।

फ्लिप फ्लौप फ्लिप फ्लौप। उसने नुंग ग्वामा के बड़े बड़े पैरों की आवाज सुनी।

"आर्ग, ओ औरत तू तो बड़ी नीच है। तूने ये सुइयॉ यहॉ इसलिये रखी हैं ताकि वे मेरी उॅगलियों में चुभ जायें।"

वह फिर बोला — "उॅह, तूने मेरे सूॅघने के लिये यह बदबूदार भी कुछ बिखेरा है। पर मैं तुझे आज छोड़ने वाला नहीं मुझे तो आज तुझे खाना ही है। मैं ज़रा इस हाथ धोने वाले टब में पहले अपने हाथ धो लूॅ।"

सो जैसे ही उसने अपने हाथ धोने के लिये उस टब में डुबोये तो वह चिल्लाया — "अरे मुझे तो सॉप ने काट लिया।"

सो वह अपने दर्द भरे हाथों को गर्म पानी के बर्तन में डुबोने के लिये गया तो वहॉ गर्म पानी में हाथ डुबोते ही वह चिल्लाया — "अरे यहॉ तो मुझे मछली ने काट लिया। ओ औरत तू बड़ी नीच है पर फिर भी मैं तुझे खाऊॅगा। मैं ज़रा अपने इन हाथों को गर्म राख में थोड़ा सा आराम दे दूॅ।"

लेकिन ऐसा करते ही उस राख में रखे अंडे फूट कर उसके चेहरे पर जा पड़े सो वह फिर चिल्लाया — "उफ़ इस सबके लिये मैं तेरी हड्डियॉ तक कुचल कर खा जाऊॅगा। तू है कहॉ। मेरे सारे चेहरे पर अंडा पड़ा हुआ है मुझे तो तू दिखायी ही नहीं दे रही।"

स्त्री बोली — "मैं यहाँ हूँ तू आ कर मुझे ज़रा खा कर तो दिखा।"

फ्लिप फ्लौप फ्लिप फ्लौप। स्त्री ने फिर उसके पैरों की आवाज सुनी और अब तो नुंग ग्वामा बिल्कुल उसके सोने वाले कमरे में था।

कुछ न दिखायी देने की वजह से वह उसके पलंग से टकरा गया और उसके बिस्तर पर गिर पड़ा बस उसी समय उसने उस पत्थर की रस्सी काट दी और वह राक्षस मर गया।

उसके बालों और हड्डियों के उसको बहुत अच्छे पैसे मिले। उतने पैसे में वह और उसके माता पिता बहुत अच्छी तरह से बहुत दिनों तक रहे।

16 एक चरवाहे और एक जुलाही की कहानी[58]

एशिया महाद्वीप के चीन देश की यह प्रेम लोक कथा करीब **2000** साल से वहाँ कही सुनी जाती रही है।

एक बार की बात ही कि एक बहुत ही गरीब लड़का था। उसका नाम था नियू लैंग[59]। उसके माता पिता तभी मर गये थे जब वह बहुत छोटा था सो वह अपने जीजा के साथ नान्यांग[60] के पश्चिम में रहता था।

उसका जीजा बहुत नीच किस्म का आदमी था। वह उससे घर का सारा काम करवाता था। एक बार पतझड़ के मौसम में नियू लैंग के जीजा ने उसको दस गाय चराने के लिये भेजा पर वह केवल नौ गायें ही घर वापस ला सका।

यह देख कर नियू लैंग बहुत चिन्तित हुआ। उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। वह जब परेशान सा इधर उधर घूम रहा था तो उसको एक बूढ़ा मिल गया। उस बूढ़े ने उससे पूछा कि वह इतना उदास क्यों है।

यह जान कर कि वह इतना उदास क्यों है उस बूढ़े ने उसे बताया कि फू नियू[61] पहाड़ी पर एक बूढ़ी बीमार गाय पड़ी है। जब

---

[58] The Story of the Cowherd and the Weaver Girl – a folktale from China, Asia. Translated from the Web Site : http://leverettfolktales.blogspot.ca/2015/12/the-story-of-cowherd-and-weaver-girl.html
[59] Niu Lang – the name of the poor boy
[60] Nanyang – a place in China
[61] Fu Niu hill

वह थोड़ी ठीक हो जाये तो वह उसे वहॉ से घर ले आये। सो नियू लैंग उस पहाड़ी पर गया और उस गाय को ढूँढा। वह गाय उसको वहॉ मिल गयी। नियू लैंग ने उसको तीन दिन तक खूब खिलाया पिलाया और ठीक कर लिया।

चौथे दिन गाय ने उसे बताया कि वह तो स्वर्ग में एक परी थी पर उसको मनुष्यों की दुनियॉ में गाय बनने की सजा दे दी गयी थी। महीने में एक बार ओस से नहाने से वह तन्दुरुस्त हो सकती थी।

नियू लैंग ने उसकी ठीक से देखभाल की। उसको रोज नहलाया और रोज उसके पास ही सोता था। कुछ दिनों में ही गाय तन्दुरुस्त हो गयी और नियू लैंग उसको घर ले आया।

पर जब वह उसको ले कर घर आया तो उसके जीजा ने उसको घर से बाहर निकाल दिया। नियू लैंग ने अपनी वह बूढ़ी गाय अपने साथ ली और उसका घर छोड़ दिया।

एक दिन उसने कई सुन्दर लड़कियॉ एक नदी में खेलती देखीं। उनमें एक लड़की ज़ी नू[62] थी। अपनी जादुई गाय की सहायता से वह उससे मिला तो उसको पता चला कि वह स्वर्ग के बादशाह की कई बेटियों में से एक थी।

दोनों को एक दूसरे से देखते ही प्यार हो गया और वे साथ साथ रहने लगे। ज़ी नू कपड़ा बुनती थी। यही काम वह स्वर्ग में भी

[62] Zhi Nu – the name of the girl

करती थी और नियू लैंग खेत पर काम करता था। वे बहुत दिनों तक खुशी खुशी साथ साथ रहे। उनके दो बच्चे हुए।

पर स्वर्ग की देवी ज़ी नू की माँ को पता चल गया कि उसकी बेटी ज़ी नू ने धरती के एक लड़के से शादी कर ली थी। वह बहुत गुस्सा हुई और उसने ज़ी नू को स्वर्ग वापस आने का हुक्म दिया। ज़ी नू को स्वर्ग वापस जाना पड़ा।

नियू लैंग ने जब ज़ी नू को घर में नहीं देखा तो वह बहुत परेशान हुआ कि ज़ी नू कहाँ चली गयी। कि अचानक उसकी गाय ने कहा कि अगर वह उसको मार दे और उसकी खाल ओढ़ ले तो वह अपनी पत्नी को ढूँढने के लिये स्वर्ग तक जा सकता था।

नियू लैंग अपनी गाय को मारना नहीं चाहता था पर फिर रोते हुए उसने गाय को मार दिया उसकी खाल ओढ़ ली और अपने दोनों बच्चों को ले कर ज़ी नू को ढूँढने स्वर्ग चल दिया।

ज़ी नू की माँ को यह भी पता चल गया कि वह लड़का जिससे उसकी बेटी ने शादी की थी उसको ढूँढता हुआ स्वर्ग तक आ पहुँचा है। तो वह यह देख कर और भी बहुत गुस्सा हुई।

सो उसने आसमान में एक बहुत चौड़ी नदी बनायी ताकि वह दोनों प्रेमियों को हमेशा के लिये अलग कर सके। यह नदी "आकाश गंगा" थी।

नियू लैंग उस नदी को पार नहीं कर सका। अब ज़ी नू उस आकाश गंगा के एक तरफ बैठी रहती है और दुखी सी कपड़ा

बुनती रहती है जबकि नियू लैंग अपने दोनों बच्चों को लिये हुए आकाश गंगा के दूसरी तरफ बैठा हुआ उसको देखता रहता है।

पर साल में एक बार दुनियाँ की सारी मैनाऐं[63] उन दोनों पर दया करती हैं। वे वहाँ तक उड़ कर जाती हैं सिगनस नक्षत्र[64] के डैनैब तारे पर उस नदी पर एक पुल बनाती हैं जिससे कि वे प्रेमी एक रात के लिये मिल पाते हैं।

यह सातवे चाँद की सातवीं रात होती है। इस रात वे दोनों मिलते हैं और एक साथ बैठ कर रोते हैं। इस दिन धरती पर बारिश होती है और लोग समझते हैं कि वह बारिश उन दोनों के आँसू हैं।

उस दिन से हर सातवें चाँद के महीने में सातवीं रात को इस कहानी के अनुसार लड़कियाँ घर से बाहर निकलती हैं तारों की तरफ देखती हैं आकाश गंगा के डैनैब तारे के दोनों तरफ देखती हैं और भगवान से प्रार्थना करती हैं कि उनका वैवाहिक जीवन सुखी रहे। चीन में यह दिन किक्सी त्यौहार[65] के नाम से मनाया जाता है।

[63] Translated for the word “Magpie”. See its picture above

[64] Deneb star of Cygnus constellation

[65] Qixi Festival

17 सूरज का टापू[66]

एक बार की बात है कि चीन के एक गाँव में एक किसान रहता था जिसके दो बेटे थे। उसका बड़ा बेटा बहुत ही मतलबी और लालची था जबकि उसका छोटा बेटा बहुत दयालु और दानवीर था।

कुछ समय बाद किसान मर गया। उसके बड़े बेटे ने उसकी सारी जमीन ले ली और छोटे भाई के लिये एक टोकरी और एक तेज़ चाकू छोड़ दिया जिससे वह आग जलाने के लिये लकड़ी काट सके।

सो वह अब जंगल जाता आग जलाने के लिये लकड़ी काटता और थोड़े से चावल के लिये बाजार में बेच देता। वह गरीब था उसके पास और कुछ नहीं था।

एक दिन वह छोटा भाई जंगल से होता हुआ पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया। वहाँ जा कर वह एक चट्टान पर जा कर बैठ गया और डूबते हुए सूरज को देखने लगा।

जब वह वहाँ अकेला बैठा था तो उसने अपने ऊपर हवा का एक बहुत ज़ोर का झोंका महसूस किया तो उसने ऊपर देखा तो उसने देखा कि एक बहुत ही चमकीला चिड़ा बहुत जल्दी से उसी की तरफ उड़ता हुआ नीचे चला आ रहा है। उसने हवा के झोंके की

[66] The Island of the Sun – A folktale from China, Asia. Translated from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/382/preview By David Heathfield

तेज़ी महसूस की और अगले ही पल वह चिड़ा उसके सामने बैठा था।

चिड़े ने उससे पूछा — "तुम यहाँ बिल्कुल अकेले क्यों बैठे हो?"

लड़का बोला — "मैं बहुत गरीब हूँ मेरे पास कुछ नहीं है।"

चिड़ा बोला — "यह सच है या झूठ?"

लड़का बोला — "मैं सच कहता हूँ मैं बहुत गरीब हूँ मेरे पास कुछ नहीं है।"

वह ताकतवर चिड़ा बोला — "तब तुम मेरी पीठ पर चढ़ जाओ और मैं तुमको सूरज के टापू पर ले चलता हूँ। वहाँ से तुम चलने से पहले सोने एक टुकड़ा उठा लेना।"

सो वह लड़का उस चिड़े की पीठ पर बैठ गया और चिड़ा उसको ले कर उड़ चला। चिड़ा पहाड़ से दूर उड़ चला। वह जंगलों के ऊपर उड़ा। वह पानियों के ऊपर उड़ा। वह सूरज के टापू की तरफ उड़ा।

जैसे ही वह चिड़ा सूरज के टापू पर आ कर उतरा तभी वहाँ सूरज डूबा तो वह टापू सूरज की सुनहरी चमकीली रोशनी में डूब गया। लड़के ने वहाँ से एक सोने का एक टुकड़ा उठा लिया और उसको अपनी टोकरी में रख लिया। वह फिर से बड़े चिड़े की पीठ पर बैठ गया और चिड़ा उड़ चला।

बड़ा चिड़ा अब टापू से दूर उड़ चला। बड़ा चिड़ा पानियों के ऊपर उड़ा। बड़ा चिड़ा जंगलों के ऊपर उड़ा। बड़ा चिड़ा पहाड़ पर वापस आया।

लड़का उस सोने के टुकड़े को ले कर जंगल के बाहर आया। वहॉ आ कर उसने उससे एक छोटी सी जमीन खरीदी। उस जमीन पर उसने सूअर गाय और मुर्गियॉ पालीं। फिर वह वहॉ मेहनत करता रहा और अच्छी तरह रहने लगा।

एक दिन उसका बड़ा भाई वहॉ आया तो उसने उससे पूछा कि उसको वह धन और वह जमीन कहॉ से मिली। छोटे भाई ने उसे सब बता दिया।

"मुझे भी यह चाहिये। तुम मुझे अपनी टोकरी और वह चाकू दो।" छोटे भाई ने उसको अपना चाकू और टोकरी दे दी। बड़े भाई ने वह चाकू और टोकरी उठायी और उसी पहाड़ की तरफ चल दिया जिसकी तरफ उसका भाई गया था।

वहॉ जा कर वह भी एक चट्टान पर बैठ गया और उस चिड़े का इन्तजार करने लगा।

जब वह वहॉ बैठा हुआ था तो उसने भी अपने ऊपर से हवा का एक बहुत ज़ोर का झोंका महसूस किया तो उसने ऊपर देखा तो उसने देखा कि एक चमकीला चिड़ा बहुत जल्दी से उसी की तरफ उड़ता हुआ नीचे आ रहा है। उसने भी हवा के झोंके की तेज़ी महसूस की और अगले ही पल वह चिड़ा उसके सामने बैठा था।

चिड़े ने उससे पूछा — "तुम यहाँ बिल्कुल अकेले क्यों बैठे हो?"

बड़ा भाई बोला — "मैं बहुत गरीब हूँ मेरे पास कुछ नहीं है।"

चिड़ा बोला — "यह सच है या झूठ?"

बड़ा भाई बोला — "यह सच है कि मैं बहुत गरीब हूँ मेरे पास कुछ नहीं है मुझे सोना चाहिये।"

वह ताकतवर चिड़ा बोला — "तब तुम मेरी पीठ पर चढ़ जाओ और मैं तुमको सूरज के टापू पर ले चलता हूँ। वहाँ से तुम चलने से पहले सोने का एक टुकड़ा उठा लेना।"

सो वह लड़का उस चिड़े की पीठ पर बैठ गया और चिड़ा उसको ले कर उड़ चला। चिड़ा पहाड़ से दूर उड़ चला। वह जंगलों के ऊपर उड़ा। वह पानियों के ऊपर उड़ा। वह सूरज के टापू की तरफ उड़ा।

जैसे ही वह चिड़ा सूरज के टापू पर आ कर उतरा तभी वहाँ सूरज डूबा तो वह टापू सूरज की सुनहरी चमकीली रोशनी में डूब गया। सारा टापू सुनहरा हो गया। बड़े भाई ने वहाँ से सोने का एक टुकड़ा उठा कर अपनी टोकरी में रख लिया।

पर उस एक टुकड़े को देख कर उसे लगा कि उसकी टोकरी तो अभी खाली है वह तो उसमें अभी काफी सोना भर सकता था सो उसने एक और टुकड़ा उठा कर रख लिया। उसको अभी भी अपनी

टोकरी खाली लगी तो उसने फिर तीसरा टुकड़ा उठा लिया फिर चौथा फिर पाँचवाँ।

इस तरह से वह तब तक उन सोने के टुकड़ों को उठाता रहा जब तक कि उसकी टोकरी उनसे भर नहीं गयी। जब उसकी टोकरी भर गयी तो वह वापस जाने के लिये मुड़ा और जैसे ही वह मुड़ा तो उसने देखा कि वह चिड़ा तो उड़ कर चला गया है और सूरज निकल रहा है।

वह वहीं खड़ा रह गया और जल कर बिल्कुल कड़क हो गया।

छोटे भाई ने बड़े भाई की जायदाद भी ले ली। उसने जमीन को बहुत मेहनत और प्यार से जोता। उसकी जमीन में बहुत पैदावार हुई जिसको उसने अपने गाँव वालों के साथ भी बाँटा। सच है लालच बुरी बला है।

18 एक भयानक सूअर[67]

यों तो सूअर की बहुत सारी कहानियॉ हैं लेकिन क्या तुमको पता है कि सूअर चीन के लोगों के एक साल का निशान भी है – "ब्राउन अर्थ पिग"[68] और यह निशान है एक मादा सूअर का।[69]

तो लो पढ़ो यह कहानी उस सूअर की जो चीन के कैलेन्डर से सम्बन्धित है।

एक बार की बात है कि एक बुढ़िया अपनी पोती के साथ रहती थी। एक दिन वे जंगल में आग के लिये लकड़ियॉ इकट्ठी करने गयीं। वहॉ उनको एक ताजा गन्ना भी मिल गया तो और लकड़ियों के साथ उन्होंने उसको भी उठा कर अपनी चुनी हुई लकड़ियों के साथ रख लिया।

---

[67] Dreadful Boar – a folktale from China, Asia. By Adele M Fielde in his "Chinese Fairy Tales". Taken from the Web Site : http://www.storytellingresearchlois.com/search/label/Chinese%20folklore
[This story is like "Nung Gwama", No 15 in this book.

[68] "Brown Earth Pig"

[69] Pig is the last animal sign of 12 Earthly Branches. Pig is in the Water Group in the theory of Chinese Five Element Theory. Pig has wisdom, initiative and energy. Pig is not lazy. Pig Month is November, the first month of the winter. So Pig is the cold water in the winter. In Chinese I-Ching, Water is connected to the danger. When river water is overflowing, it might cause flooding. The sign of Pig is offensive and encroachment. Pig contains mainly Yang Water with some Yang Wood. Yang Wood is related to tall tree, landmark, boss or leader. The characteristics of Pig are kind, generous, magnanimous, warm-hearted and considerate with Leadership skill.

उसी समय उसको एक एल्फ़[70] मिल गया जो उस समय एक जंगली सूअर के रूप में था। उसने बुढ़िया से एक गन्ना माँगा पर बुढ़िया ने उसे उसको यह कह कर देने से मना कर दिया कि उसकी उम्र में नीचे झुकना और फिर उसे उठा कर उठना ठीक नहीं है।

वह अपना गन्ना घर ले कर जा रही है। वह चाहती है कि उसकी पोती यह गन्ना चूसे।

बुढ़िया से मना सुन कर सूअर गुस्सा हो गया उसने कहा कि वह अगली रात आ कर गन्ने की जगह बुढ़िया की पोती को खा जायेगा और यह कह कर जंगल चला गया।

बुढ़िया जब अपने केबिन पहुँची तो वह दरवाजे के पास बैठ कर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी क्योंकि वह जानती थी कि उसके पास जंगली सूअर से बचने का कोई तरीका नहीं था।

जब वह बैठी बैठी रो रही थी तभी वहाँ से एक सुई बेचने वाला जा रहा था। उसने बुढ़िया से पूछा कि वह क्यों रो रही थी। सुई बेचने वाले ने कहा कि मैं आपके लिये बस इतना कर सकता हूँ कि मैं आपको एक डिब्बा सुइयों का दे दूँ। उसने ऐसा ही किया और वहाँ से चला गया।

---

[70] Elf a supernatural creature of folk tales, typically represented as a small, elusive figure in human form with pointed ears, magical powers, and a capricious nature.

बुढ़िया ने वे सुइयाँ अपने घर के दरवाजे के बाहर की तरफ उसके नीचे वाले आधे हिस्से में लगा दीं। यह कर के वह फिर रोने लगी। उसी समय एक आदमी टोकरी भर के केंकड़े लिये जा रहा था। उसने भी बुढ़िया का रोना सुना उसने भी उससे पूछा कि वह क्यों रो रही थी।

उसने केंकड़े वाले को बता दिया तो केंकड़े वाला बोला कि वह उसके लिये कुछ नहीं कर सकता था सिवाय इसके कि मैं अपने आधे केंकड़े आपको दे दूँ। यह कह कर उसने अपने आधे केंकड़े बुढ़िया को दे दिये और चला गया।

बुढ़िया ने वे केंकड़े एक चीनी के बर्तन में रख दिये। चीनी का बर्तन दरवाजे के पीछे रख दिया और उसने फिर से रोना शुरू कर दिया।

जल्दी ही एक किसान अपने बैल के साथ अपने खेत से वापस आता हुआ वहाँ से गुजरा तो उसने भी बुढ़िया से पूछा कि वह क्यों रो रही थी। बुढ़िया ने उसे भी अपनी दुखभरी कहानी सुना दी।

उसकी कहानी सुन कर किसान बोला "मैं आपकी मुसीबत से आपको छुटकारा दिलाने के लिये आपके लिये इससे ज़्यादा कुछ नहीं कर सकता कि मैं आपके लिये रात भर के लिये यह बैल आपके पास छोड़ जाऊँ। इस तरह से कम से कम यह अपके अकेलेपन में आपके साथ रहेगा। उसने अपना बैल बुढ़िया के पास छोड़ा और वहाँ से चला गया।

बुढ़िया बैल को अपने केबिन में ले गयी और उसको अपने बिस्तर के सिरहाने बाँध दिया। उसको खाने के लिये कुछ भूसा दे कर वह फिर बाहर आ कर रोने लगी।

तभी एक हरकारा पास के शहर से अपने घोड़े पर सवार हो कर लौट रहा था कि वह उसके केबिन के सामने से गुजरा। उसने भी बुढ़िया को वहाँ रोते देखा तो उसने भी उससे पूछ लिया कि वह क्यों रो रही थी। उसने हरकारे को भी अपनी कहानी सुना दी।

हरकारा भी सुन कर परेशान हो गया कि वह उस बुढ़िया की सहायता कैसे करे फिर कुछ सोच कर बोला — "मुझे पता नहीं कि मैं आपके इस दुख में आपकी सहायता कैसे करूँ पर मैं यह घोड़ा आपके पास छोड़े जाता हूँ ताकि आपको सन्तुष्टि रहे।"

वह अपना घोड़ा छोड़ कर वहाँ से चला गया। उसने उस घोड़े को अन्दर ले जा कर अपने बिस्तर के पायताने बाँध दिया और सोचने लगी कि वह नीच अब उसके घर कैसे आयेगा। वह फिर से रोने लगी।

तभी एक लड़का अपने एक कछुए के साथ वहाँ आ गया जो उसने अभी अभी पकड़ा था। उसने बुढ़िया को रोते देखा तो उसने भी उससे पूछा कि वह क्यों रो रही थी। बुढ़िया ने उसको भी अपनी दुखभरी कहानी सुना दी। लड़का बोला — "आत्माओं से बचने का तो कोई तरीका नहीं हाँ मैं अपना यह कछुआ आपके पास छोड़ जाता हूँ।"

बुढ़िया ने उसका कछुआ लिया और उसको अपने बिस्तर के सामने बाँध दिया और बाहर आ कर फिर रोने लगी।

लड़के के बाद कुछ लोग चक्की लिये उधर से गुजरे और बुढ़िया से उसकी परेशानी के बारे में पूछा तो बुढ़िया ने उनको भी सब बता दिया।

उन्होंने भी कहा कि वे उसकी कोई सहायता नहीं कर सकते थे सिवाय इसके कि वे अपनी एक चक्की उसके पास छोड़ जायें। उन्होंने वह चक्की उसके घर के पीछे खिसका दी और चले गये।

बुढ़िया फिर घर के सामने बैठ कर रोने लगी। अबकी बार एक आदमी कुछ हल और कुल्हाड़ियाँ ले कर जा रहा था। उसने भी बुढ़िया को रोते देखा तो पूछा कि वह क्यों रो रही थी। उसकी दुखभरी कहानी सुन कर वह बोला कि मैं आपकी सहायता जरूर करता पर मैं तो केवल एक कुँआ खोदने वाला हूँ आपके लिये एक कुँआ खोद सकता हूँ।

बुढ़िया ने घर के पीछे उसको एक जगह दिखा दी तो वह वहाँ गया और जल्दी से एक कुँआ खोद दिया।

उसके जाने के बाद बुढ़िया फिर से रोने बैठ गयी। फिर एक कागज बेचने वाला आया और उससे पूछा कि वह क्यों रो रही थी। बुढ़िया ने उसे बताया तो उसने उसको एक बहुत बड़ा सफेद कागज दे दिया। बुढ़िया ने उस कागज को सावधानी से कुँए के मुँह पर बिछा दिया।

रात आयी। बुढ़िया ने अपने केबिन का दरवाजा बन्द किया। अपनी पोती को बिस्तर के दीवार की तरफ वाले हिस्से में सुला दिया। खुद वह उसके पास लेट कर अपने दुश्मन का इन्तजार करने लगी।

आधी रात को सूअर आया और दरवाजे को खोलने के लिये उसमें अपने शरीर से धक्का मारा तो वहॉ लगीं सुइयों से उसका शरीर घायल हो गया।

सो जब वह घर के अन्दर घुसा तो उसको बहुत गर्मी लग रही थी और प्यास लग रही थी तो वह पानी के बर्तन के पास पानी पीने के लिये गया।

जैसे ही उसने अपनी थूथनी पानी पीने के लिये उसमें डाली तो केंकड़ों ने उसे काट लिया। वे उसके बालों पर चिपक गये और उसके कानों को नोचने लगे। उनको हटाने के लिये वह बेचारा जमीन पर लोटने लगा।

गुस्से के मारे वह बिस्तर की तरफ बढ़ा तो बिस्तर के सामने पहुॅचते ही कछुए ने अपनी पूॅछ उसे मार कर उसे पीछे जाने पर मजबूर कर दिया जिससे वह घोड़े के पैरों के पास पहुॅच गया।

घोड़े ने उसको एक ठोकर मारी तो वह बैल के पास पहुॅच गया। बैल ने उसे फिर से घोड़े की तरफ उछाल दिया। इस बीच वह वहॉ से बच निकलने में कामयाब हो गया। वह आराम करने के

लिये और इन हालातों पर सोचने के लिये सीधा केबिन के पीछे की तरफ भाग गया।

वहाँ जा कर उसने देखा कि वहाँ तो एक साफ सफेद कागज बिछा हुआ है तो वह उसको देखने में बहुत अच्छा लगा। वह जा कर उस पर बैठ गया। पर यह क्या जैसे ही वह उसके ऊपर पहुँचा तो वह तो कुँए में गिर गया।

बुढ़िया ने उसके कुँए में गिरने की आवाज सुन ली तो वह तुरन्त भाग कर आयी और चक्की को उस कुँए में धकेल दिया। इससे वह कुचल कर मर गया।

यह कहा जाता है कि बिखरे हुए दूध पर क्या रोना। पर बुढ़िया का रोना तो काम कर गया। यह ठीक है कि उसको सूअर को खाने को नहीं मिला पर सूअर को उसकी बेटी भी तो खाने को नहीं मिली।

19 एक बड़ा घंटा[71]

ताकतवर बादशाह युंग लो[72] अपने बड़े सिंहासन पर बैठा हुआ था। उसके चारों तरफ सैंकड़ों नौकर खड़े हुए थे। पर वह बहुत दुखी था क्योंकि वह देश के लिये कोई अच्छा काम नहीं कर पा रहा था। वह परेशानी में पड़ा अपने रेशमी पंखे के साथ खेल रहा था और अपने हाथ के लम्बे नाखूनों को बड़ी बेचैनी से काट रहा था।

आम तौर पर वह एक खुश रहने वाला बादशाह था पर इस समय वह बहुत दुखी था। वह बोला — "देखो तो, दक्षिण से हटा कर पेकिंग ला कर मैंने कितनी बड़ी राजधानी चुनी है और उसे बहुत अच्छी बनाया है। इसके चारों तरफ मैंने दीवार बनवायी है जो "चीन की दीवार" से भी मोटी और बड़ी है। इसमें मैंने बीसियों मन्दिर और महल बनवाये हैं।

मैं इसमें अक्लमन्द और विद्वानों को चीन की बुद्धिमानी भरी किताबें लिखने के लिये लाया जिन्होंने अब तक **23** हजार किताबें लिख दी हैं और जो कहीं भी आदमियों के द्वारा लिखा जाने वाले विद्या के संग्रहों में सबसे बड़ा संग्रह है।

---

[71] The Great Bell. A Chinese Folktale from the Book "A Chinese Wonder Book", by Norman Hinsdale Pitman, edited by Andrew Lang. NY : EP Dutton. 1922. Available at : https://www.gutenberg.org/cache/epub/18674/pg18674.txt

[72] Yung-Lo

मैंने कितने घंटाघर बनवाये कितने पुल और कितने बड़े बड़े स्मारक बनवाये। पर अफसोस की बात यह है कि अब जब मैं मध्य चीन के राजा की हैसियत से बुढ़ापे की ओर बढ़ रहा हूँ तो अब मेरे पास अपनी जनता के लिये करने के लिये कुछ और नहीं है।

इससे तो अच्छा यह है कि अब मेरी ऑखें बन्द हो जायें और मैं ऊपर के ड्रैगन का मेहमान बन जाऊँ बजाय इसके कि मैं इस आलसीपने में जी कर अपने बच्चों के लिये एक आलसी निकम्मे राजा का उदाहरण छोड़ कर जाऊँ।"

यह सुन कर युंग लो का एक बहुत ही वफादार दरबारी मिंग लिन[73] घुटनों के बल बैठ गया और जमीन से तीन बार सिर छुआ कर बोला — "यौर मैजेस्टी, अगर आप अपने वफादार नौकर की कुछ सुनने की कोशिश करें तो मैं आपको एक बहुत ही बढ़िया सलाह देने की हिम्मत करूँ जिसके लिये पेकिंग के बहुत सारे लोग, आपके बच्चे और आने वाली पीढ़ियाँ खड़े हो कर आज भी और आगे भी आपको दुआ देंगे।"

बादशाह बोले — "मुझे बस एक बार ऐसी भेंट के बारे में बता दो। मैं न केवल उसे इस शाही शहर को दे दूँगा बल्कि इतनी अच्छी सलाह के बदले में धन्यवाद के तौर पर तुम्हें शाही मोर का पंख भी दे दूँगा।"

[73] Ming Lin – name of one of the most faithful courtiers of Yung-Lo

दरबारी ने खुश हो कर कहा — "यह पंख पहनना मेरे इस छोटी सी बात के लिये ठीक नहीं होगा जबकि मुझसे ज़्यादा अक्लमन्द लोगों को इससे वंचित रखा गया है।

पर अगर यह बात आपको खुश करे तो यौर मैजेस्टी याद करिये कि इस राज्य के उत्तरी जिले में एक घंटाघर बनवाया गया था जो अभी तक खाली पड़ा है। उस शहर की जनता को वहाँ एक बहुत बड़ा घंटा चाहिये जो दिन में उन्हें हर घंटे की आवाज सुना सके और उन्हें उनके काम के घंटे बता सके ताकि उस समय में वे खाली न बैठें।

हालाँकि पानी वाली घड़ी घंटों का समय बताती है पर वहाँ कोई ऐसी घड़ी नहीं है जिससे सारी जनता को समय का पता चल जाये।"

बादशाह बोले — "यह तो बड़ा अच्छा सुझाव है तो अब बताओ कि हममें से कौन सबसे अच्छा घंटा बना सकता है ताकि तुम्हारा बताया हुआ यह काम पूरा कराया जा सके। मैंने सुना है कि हमारे शाही शहर के लायक घंटा बनाने वाले में किसी कवि की चतुराई और तारों की विद्या की जानकारी होनी चाहिये।"

दरबारी बोला — "हाँ यह सच है ओ ताकतवर बादशाह। तो मेरी सलाह यह है कि क्वान यू[74] जिसने शाही तोप बनायी थी वह इस बड़े घंटे को भी बनाने लायक है। आपके सब लोगों में वही

[74] Kwan-Yu

एक आपका यह काम करने लायक है क्योंकि वही अकेला इस काम को न्यायपूर्वक कर सकता है।”

उस दरबारी ने जिसने इस काम के लिये क्वान यू का नाम सुझाया था उसके दिमाग में उसका नाम सुझाने के दो उद्देश्य थे। एक तो वह बादशाह युंग लो का दुख दूर करना चाहता था जो केवल इसलिये दुखी था क्योंकि वह अपनी जनता के लिये कुछ कर नहीं पा रहा था।

और दूसरे वह क्वान यू को ऊँचा पद दिलवाना चाहता था। क्योंकि क्वान यू की एकलौती बेटी की शादी मिंग लिन के एकलौते बेटे से कई साल पहले ही तय हो चुकी थी। मिंग लिन के लिये यह बहुत बड़ी बात होती अगर उसकी बहू का पिता बादशाह के नीचे काम करने लगता तो।

मिंग लिन ने फिर से तीन बार झुकते हुए कहा — “आपके सारे राज्य में क्वान यू सब लोगों से अच्छा काम कर सकता है।”

“ठीक है तब क्वान यू को मेरे पास जल्दी से ले कर आओ ताकि मैं उसे उसका काम ठीक से समझा सकूँ।”

बहुत खुश हो कर मिंग लिन उठा और बादशाह के सोने के सिंहासन से कुछ पग पीछे गया क्योंकि अगर वह बादशाह के सामने पीठ कर के गया तो यह उसके लिये उचित नहीं था। पर क्वान यू ने यह काम यानी घंटा बनाने का काम बड़े डर के साथ लिया।

जब मिंग लिन ने उसे यह खबर सुनायी तो उसने कहा — "क्या कोई बढ़ई जूता बना सकता है?"

मिंग लिन जल्दी से बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। अगर वे टापू पर रहने वाले छोटे छोटे बौनों के पैर के नाप के और लकड़ी के हों तो। घंटा और तोप दोनों ही एक सी धातु के बनते हैं। तुम इस नये काम को आसानी से कर लोगे।"

जब क्वान यू की बेटी को पता चला कि उसका पिता किस नये काम को लेना चाहता है तो वह बहुत डर गयी। वह बोली — "आदरणीय पिता जी। इस काम को करने की हामी भरने से पहले अच्छी तरह सोच लीजिये। तोप बनाने में तो आप सफल रहे पर दूसरे कामों के बारे में कौन जानता है। अगर आप इसमें असफल रहे तो आप बड़े बादशाह जी के गुस्से के भागी बनेंगे।"

उसकी महत्वाकांक्षी मॉ बीच में बोली — "ओ लड़की सुन। सफलता और असफलता के बारे में तू क्या जानती है। तू अपना मन खाना बनाने और बच्चों के कपड़े सिलने में लगा।

अब तेरी शादी होने वाली है। और जहॉ तक तेरे पिता का सवाल है उनको अपने काम की चिन्ता करने दे। बेटियों को अपने पिता के मामले में टॉग नहीं अड़ानी चाहिये।"

सो बेचारी को आई[75] को क्योंकि यही उसका नाम था चुप कर दिया गया। वह भी अपने गालों पर ऑसू की एक बूॅद छिपाये हुए

[75] Ko-ai – name of the daughter of Kwan-Yu

वहाँ से अपना काम करने चली गयी। वह अपने पिता को बहुत प्यार करती थी। यह सब सुन कर उसके दिल में अपने पिता के लिये किसी खतरे की आशंका जाग गयी थी।

इस बीच क्वान यू को मना किये गये शहर[76] में बुलाया गया जो पेकिंग के बीच में था और जहाँ बादशाह का शाही महल था। वहाँ पहुँच कर उसने स्वर्ग के बेटे से अपने लिये आदेश सुने।

अपनी बात कह कर युंग लो ने आखीर में कहा — "और याद रखना कि घंटा इतना बड़ा हो कि उसकी आवाज हर घंटे पर **33** मील दूर तक जानी चाहिये। इस काम के लिये तुम्हें सोना और पीतल उचित मात्रा में मिलाने होंगे क्योंकि वे दोनों मिल कर आवाज को ताकत और गहराई देंगे।

इसके बाद यह कि इतने बड़े घंटे की आवाज बहुत मीठी भी होनी चाहिये। इसके लिये तुम इनमें ठीक अनुपात में चाँदी भी मिलाना। इसके अलावा इसके चारों तरफ संतों की कहावतें खुदी होनी चाहिये।"

अब जब क्वान यू ने बादशाह से अपनी हिदायतें ले लीं तो वह शहर की किताबों की दूकानों पर गया कि कहीं से उसे कोई ऐसी किताब मिल जाये जिसमें ऐसे घंटे को बनाने का तरीका लिखा गया हो। उसने उन सब लोगों को अच्छी मजदूरी देने का भी वायदा

[76] Translated for the words "Forbidden City"

किया जिनका ऐसी चीज़ बनाने में जैसी कि वह बना रहा था कोई अनुभव हो।

बहुत जल्दी ही उसका घंटा बनाने का काम शुरू हो गया। उसके कारखाने में बड़ी बड़ी आग जलने लगीं। सोने चॉदी पीतल और और भी कई धातुओं के ढेर वहॉ दिखायी देने लगे जिन्हें घंटा बनाने के लिये उसे तौल कर मिलाना था।

जब भी कभी क्वान यू बाजार में चाय पीने जाता तो उसके सारे दोस्त उसके बड़े घंटे के बारे में उससे कई सवाल पूछते। "क्या वह दुनियॉ का सबसे बड़ा घंटा होगा?"

वह जवाब देता — "नहीं नहीं रे। यह कोई जरूरी नहीं है पर हॉ उससे सबसे मीठी आवाज निकलनी चाहिये क्योंकि हम चीनी लोग साइज़ को ज़्यादा महत्व नहीं देते बल्कि शुद्धता को ज़्यादा महत्व देते हैं। हम बड़ेपन को नहीं बल्कि गुणों को ज़्यादा महत्व देते हैं।"

"वह कब खत्म होगा?"

"देवता ही जानते हैं कि वह कब खत्म होगा क्योंकि मैं इस काम में कम अनुभवी हूॅ। हो सकता है कि मैं धातुऐं ठीक से न मिला पाऊॅ।"

हर कुछ दिन बाद स्वर्ग का बेटा बादशाह खुद भी अपने कुछ लोगों को उससे ऐसे ही कुछ सवाल पूछने के लिये भेजा करता था क्योंकि बादशाह को भी उसके साथियों की तरह से उत्सुकता होती

थी। परन्तु क्वान यू उन्हें बड़ी नर्मी से जवाब देता कि उसे खुद को यह पता नहीं था कि घंटा कब तक तैयार होगा।

आखिर एक ज्योतिषी से पूछने के बाद क्वान यू ने उसे बनाने का एक दिन निश्चित किया। तब एक दूसरा दरबारी आया जिसने बहुत शानदार कपड़े पहन रखे थे वह बोला कि ठीक समय पर बादशाह क्वान यू के घर आयेंगे और उस घंटे का बनाना देखेंगे जिसे उन्होंने अपनी जनता के लिये बनवाया है।

यह सुन कर क्वान यू तो बहुत डर गया क्योंकि उसे लगा कि उसके सब कुछ पढ़ने के बावजूद अपनी शुभ इच्छा रखने वालों की सलाह लेने के बाद भी उसके धातु के मिश्रण में कहीं कुछ गड़बड़ रह गयी है जिसे वह अभी साँचे में पलटने वाला था।

थोड़े में कहो तो उसे अभी अभी एक सच पता चला था कि इस दुनियाँ में लोग हजारों सालों से सीख रहे हैं कि केवल पढ़ने और सलाहों से किसी आदमी को किसी काम में कुशलता नहीं आती।

कुशलता केवल सालों के अभ्यास और अनुभव से आती है। सो इस निराशा के कगार पर खड़े क्वान यू ने एक आदमी को पैसे दे कर मन्दिर भेजा कि वह वहाँ जा कर देवताओं से हर भाषा में उसकी सफलता की प्रार्थना करे।

उसकी बेटी को आई भी अपने पिता की तरह डरी हुई थी जब उसने अपने पिता के चेहरे पर डर के भाव देखे क्योंकि केवल एक वही थी जिसने उसको बादशाह का यह काम लेने के लिये सावधान

किया था। देवताओं की प्रार्थना करने लिये पिता के वफादार नौकर के साथ वह भी मन्दिर गयी थी।

वह बड़ा दिन आया। बादशाह और उनके दरबारी लोग इकट्ठा हुए। इस मौके के लिये बादशाह एक मंच पर बैठे। तीन नौकर बादशाह को सुन्दर पेन्ट किये हुए पंखे झल रहे थे क्योंकि कमरा बहुत गर्म था। नक्काशी किये गये पीतल के एक कटोरे में एक बहुत बड़ा बर्फ का टुकड़ा पिघल रहा था जो वहाँ की गर्म हवा को बादशाह के पास तक पहुँचने से पहले ही ठंडा कर देता था।

क्वान यू की पत्नी और बेटी उसी कमरे में पीछे खड़े हुए थे। वे उस बड़े से बर्तन को ध्यान से देख रहे थे जिसमें घंटा बजाने वाली धातु पिघल रही थी। उनको यह अच्छी तरह मालूम था कि क्वान यू का भविष्य इस काम के सफलतापूर्वक पूरा हो जाने पर ही आधारित था।

दीवार के चारों तरफ क्वान यू के दोस्त लोग और नगर के दूसरे उत्सुक लोग इकट्ठा थे। बादशाह के नौकर लोग भी थे जो अपनी गर्दनें उठा उठा कर अन्दर की तरफ होने वाली क्रिया को देखने की कोशिश कर रहे थे। डर के मारे वे बात करने से भी घबरा रहे थे।

क्वान यू भी इस सिलसिले में इधर उधर भागा फिर रहा था। अपना अन्तिम हुक्म दे कर वह कभी खाली साँचे की तरफ ध्यान से

देख लेता था। फिर बादशाह के सिंहासन की तरफ देख लेता था कि कहीं बादशाह के चेहरे पर बेचैनी का कोई चिन्ह तो नहीं है।

आखिर सब कुछ तैयार हो गया। सब सॉस रोके हुए खड़े थे और इस इन्तजार में थे कि कब क्वान यू पिघली धातु को सॉचे में डालने का इशारा करेगा – धीरे से सिर को झुकायेगा और उंगली उठायेगा। और फिर चमकती हुई धातु अपनी जेल से मुक्त हो कर उस रास्ते से गुजरेगी जो उसे मिट्टी के सॉचे की जगह ले कर जायेगा।

घंटा बनाने वाले ने अपनी ऑखें ढक लीं क्योंकि वह इतनी तेज़ी से बहती हुई धातु को देखने में डर रहा था। कहीं ऐसा न हो कि उसकी सारी आशाऐं अचानक से ही धातु के ठीक से ठंडा न होने में ही टूट जायें।

उसने एक लम्बी सॉस ली और फिर नजर उठा कर ऊपर की तरफ देखा तो वहॉ सचमुच में कुछ तो गलत हो गया था। यह बात उसने पल भर में ही जान ली थी कि बस अब बदकिस्मती का साया उसके ऊपर आ पड़ा था।

हॉ यकीनन। जब मिट्टी का वह सॉचा टूट गया। छोटे से छोटा बच्चा भी यह देख सकता था कि बड़ा घंटा एक सुन्दर चीज़ बनने की बजाय धातु का एक भद्दा सा ढेर बन कर रह गया था।

युंग लो बोला — "अफसोस यह तो बहुत ही बड़ी असफलता हो गयी पर इस निराशा में भी मैंने एक सीख सीखी है जो कि

सचमुच सोचने लायक है कि देखो इसमें वे सारी धातुऐं हैं जिनसे यह देश बना हुआ है – सोना चाँदी और दूसरी धातुऐं।

उन्हें सबको ठीक अनुपात में मिलाया गया था ताकि उनसे एक सुन्दर घंटा बन सके एक शुद्ध घंटा बन सके जिसे पश्चिम के लोग भी देखने और सुनने के लिये रुक जायें। पर अगर उन्हें अलग कर दिया जाये तो वह एक ऐसी चीज़ होगी जो आँखों और कानों से छिपी रहेगी।

ओह मेरे चीन। समय समय पर यहाँ आपस में कितनी लड़ाइयाँ होती रही हैं जिन्होंने देश को कमजोर और गरीब बना दिया है। अगर ये सब आदमी चाहे वह छोटे हों या बड़े सोना हों या चाँदी या कोई साधारण धातु एक साथ मिल जायें तो यह भूमि अपने नाम "मध्य साम्राज्य" को सार्थक कर देगी।"

सब दरबारियों ने बादशाह युंग लो के इस भाषण पर खूब तालियाँ बजायीं पर क्वान यू तो बस जमीन पर बैठा ही रह गया जहाँ वह बादशाह के पैरों पर गिर कर लेट गया।

उसका सिर झुका हुआ था वह सिसकते हुए बोला — "आह यौर मैजेस्टी। मैंने पहले ही कहा था कि इस काम के लिये आप मुझे नियुक्त न करें। अब आपको मेरी अयोग्यता का पता चल गया होगा। इस असफलता के लिये आप चाहें तो मेरी जान ले लें।"

बादशाह ने कहा — "उठो क्वान यू। मैं एक नीच मालिक कहलाया जाऊँगा अगर मैं तुम्हें एक और मौका नहीं दूँ। उठो और

जा कर देखो कि इस असफलता की सीख से तुम्हारी दूसरी कोशिश असफल न हो।"

सो क्वान यू उठा क्योंकि जब बादशाह कुछ कहता है तो उसकी आज्ञा का पालन तो होना ही चाहिये।

अगले दिन उसने अपना काम फिर से शुरू कर दिया पर उसका दिल अभी भी बहुत भारी था क्योंकि उसे अपनी गलती ही पता नहीं थी इसलिये वह यही नहीं जानता था कि वह अपने काम में किस गलती को सही करे।

कई महीनों तक वह दिन रात कोशिश करता रहा। अपनी पत्नी से एक शब्द भी नहीं बोला और जब उसकी बेटी ने उसे सूरजमुखी के बीज खिलाने की कोशिश की जो उसने खुद भूने थे तो वह उसकी तरफ देख कर केवल एक दुखभरी मुस्कान से मुस्कुरा दिया। वह किसी भी तरह उसके साथ हॅस नहीं सका और न ही उसे हॅसा सका जैसे वह पहले किया करता था।

महीने के हर पहले और **15**वें दिन वह मन्दिर जाता था और देवताओं से अपनी सफलता की प्रार्थना करता था। को आई भी उसके इस काम में सहायता करती थी वह मुस्कुराती मूर्तियों के सामने अगर बत्ती जलाती और रोती।

एक बार फिर युंग लो क्वान लू के कारखाने में बैठा हुआ था। एक बार फिर उसके दरबारी उसके चारों तरफ खड़े हुए थे। पर इस समय क्योंकि जाड़ा था उनको रेशमी पंखों की जरूरत नहीं थी।

बादशाह को पूरा विश्वास था कि इस बार क्वान यू अवश्य ही सफल होगा। उसने पिछली बार क्वान यू के साथ बहुत नर्मी से व्यवहार किया था। उसका विश्वास था कि पिछली बार की दया से कम से कम इस बार तो जनता को फायदा होगा।

एक बार उसने फिर इशारा किया। एक बार फिर सबकी गर्दनें सारस की गर्दनों की तरह उस क्रिया को देखने के लिये ऊपर को उठीं। पर अफसोस जब सॉचा हटाया गया तो यह घंटा भी पहले से कोई ज़्यादा अच्छा नहीं था। वास्तव में यह एक बहुत ही बुरी असफलता थी। घंटे मे दरार थी और देखने में वह बहुत भद्दा था क्योंकि सोना चॉदी और दूसरी धातुओं ने आपस में मिलने से इनकार कर दिया था।

क्वान यू बहुत ज़ोर से रोते हुए बादशाह के पैरों पर गिर पड़ा। उसके इस रोने ने सबके दिल हिला दिये। इस बार वह बादशाह के आगे तीन बार झुका नहीं क्योंकि उस भद्दे मिश्रण को देख कर उसकी बादशाह से ऑख मिलने की हिम्मत ही नहीं हुई।

आखिर जब उसका बादशाह की तरफ देखने का मौका आया तो उसे युंग लो का गुस्से से भरा चेहरा नजर आया। और तब उसने उनकी गुस्से से भरी आवाज सुनी जैसे वह उसे सपने में सुन रहा हो।

"ओ दुखी क्वान यू। क्या यह तुम हो जिस पर मैंने कितनी दया की है। तुमने दो बार मेरे विश्वास को धोखा दिया है। पहली

बार तो मुझे तुम्हारे लिये अफसोस था और मैं उस काम को भूल जाना चाहता था पर इस बार मैं तुम्हारे लिये दुखी नहीं हूँ बल्कि मुझे तुम्हारे ऊपर बहुत गुस्सा आ रहा है। मैंने जो कुछ तुमसे कहा है उसे तुम ध्यान में रखना।

मैं तुम्हें एक तीसरा मौका और देता हूँ। अगर इस बार तुमने घंटा ठीक से नहीं बनाया तो लाल पैन्सिल से मैं तुम्हारी और मिंग लिन जिसने तुम्हारी सिफारिश की थी दोनों के लिये सजा लिखूँगा।"

जब बादशाह चले गये उसके बहुत देर बाद तक भी क्वान लू अपने नौकरों से घिरा हुआ जमीन पर ही लेटा रहा। पर जितने लोगों ने उसको फिर से उठाने की कोशिश की उनमें सबसे ऊपर उसकी बेटी थी। पूरे हफ्ते वह ज़िन्दगी और मौत के बीच झूलता रहा। और फिर एक दिन ऐसा आया जो उसके पक्ष में था।

एक बार फिर से वह ठीक हो गया। एक बार फिर से वह अपने काम में लग गया। फिर भी सारा समय जब वह काम करता रहता तो उसका दिल भारी भारी सा रहता क्योंकि उसको लगता रहता कि वह जल्दी ही घने जंगल में जाने वाला है – पीले स्रोत[77] के क्षेत्र में जहाँ से कोई यात्री वापस नहीं लौटता। क्वान यू की बेटी को आई भी अपने पिता के लिये एक खतरे का एहसास कर रही थी।

[77] Yellow Spring – name of some place

एक दिन उसने अपने माँ से कहा — "अवश्य ही पिताजी के सिर पर से कोई रैवन उड़ गया है माँ। वह तो उस कहावत के समान हैं अन्धा आदमी अन्धे घोड़े पर आधी रात को एक गहरे गड्ढे की तरफ आये। उफ़, वह उसे कैसे पार करेंगे।"

यह बेटी अपने प्यारे पिता को बचाने के लिये कुछ भी कर सकती थी। दिन रात वह यही सोचती रहती कि वह अपने पिता को कैसे बचाये। पर किसी तरह भी वह किसी नतीजे पर न पहुँच सकी जिससे वह अपने प्यारे पिता को बचा सके।

तीसरी बार घंटा बनाने के दिन से एक दिन पहले को आई अपने पीतल में जड़े शीशे के सामने बैठी हुई थी और अपने लम्बे काले बालों की चोटी गूँथ रही थी कि अचानक एक छोटी सी चिड़िया खिड़की के अन्दर उड़ कर आयी और उसके सिर पर बैठ गयी।

तुरन्त ही उस लड़की ने कुछ फुसफुसाहट की आवाज सुनी जैसे कोई परी उससे कुछ कह रही हो "तुम हिचकिचाओ नहीं। तुम जाओ और मशहूर बाजीगर से सलाह लो जो आजकल शहर में आया हुआ है। तुम इस बाजीगर के लिये अपने जेड और दूसरे बहुमूल्य रत्न बेच दो क्योंकि यह आदमी बिना बहुत सारा पैसा लिये तुमसे बात भी नहीं करेगा।"

यह कह कर चिड़िया कमरे से बाहर उड़ गयी पर को आई को सब कुछ समझ में आ गया। उसने तुरन्त ही अपना एक भरोसे का

आदमी अपने रत्नों को दे कर उन्हें बेचने के लिये बाजार भेजा। साथ में उसने उससे यह कह दिया कि किसी भी हालत में वह उसकी माँ को यह बात न बताये।

उसके बाद जब उसके पास बहुत सारा पैसा आ गया तो वह उस बाजीगर से मिलने गयी जो उन साधुओं से भी अक्लमन्द और चतुर था जो ज़िन्दगी और मौत का ज्ञान रखते थे।

जब सफेद दाढ़ी वाले ने उसे बुलाया तब उसने उससे विनती की कि वह यह बताये कि वह अपने पिता की जान कैसे बचा सकती है क्योंकि अगर तीसरी बार भी उन्होंने घंटा न बनाया तो बादशाह ने उन्हें मौत की सजा देने के लिये कहा है।

ज्योतिषी ने उससे कुछ और सवाल पूछने के बाद अपने कछुए के खोल से बना चश्मा पहना और अपनी किताब में काफी देर तक कुछ ढूँढता रहा। उसने सितारों का काफी देर तक अध्ययन किया। फिर वह को आई की तरफ घूमा जो बड़ी बेचैनी से उसके जवाब का इन्तजार कर रही थी।

वह बोला — "तुम्हारे पिता की किस्मत में असफलता के सिवा और कुछ नहीं है क्योंकि जब कोई आदमी कोई असम्भव काम करने की सोचता है तो उसको अपनी किस्मत से कुछ और की आशा नहीं करनी चाहिये।

सोने में चाँदी नहीं मिल सकती न ही पीतल लोहे से मिल सकती है जब तक कि किसी कुँआरी कन्या का खून उस पिघली हुई

धातुओं में न मिलाये जायें। पर जिस लड़की का खून उनमें मिलाया जाये वह खुद भी शुद्ध और साफ होनी चाहिये।"

बड़ी निराशा से को आई ने ज्योतिषी का जवाब सुना। वह दुनियाँ और उसकी सुन्दरता को बहुत प्यार करती थी। वह अपनी चिड़ियों को बहुत प्यार करती थी और सो अपनी सहेलियों को भी। अपने पिता को भी इसके अलावा उसकी शादी भी होने वाली थी।

इसके अलावा कोई दूसरी लड़की क्वान यू के लिये अपनी जान भला क्यों देगी। वह अपने पिता को बहुत प्यार करती थी इसलिये उसे ही अपने पिता के लिये जान देनी पड़ेगी।

जब तीसरी कोशिश का समय आया और तीसरी बार युंग लो क्वान यू के कारखाने में अपने दरबारियों से घिरा अपने सिंहासन पर बैठा तो इस बार उसके चेहरे पर सन्तोष की भावना थी। दो बार उसने अपने नीचे काम करने के लिये माफ कर दिया था। अब इस बार उस पर कोई दया नहीं दिखायी जायेगी।

अगर अबकी बार घंटा अपने साँचे से ठीक से न निकला तो क्वान यू को कड़ी से कड़ी सजा दी जायेगी चाहे वह मौत की ही सजा क्यों न हो। इसी लिये युंग लो के चेहरे पर कुछ कठोरता का भाव था क्योंकि वह क्वान यू को बहुत प्यार करता था और उसे मरने के लिये नहीं भेजना चाहता था।

उधर क्वान यू ने खुद ने सफलता की आशा बहुत पहले ही छोड़ दी थी क्योंकि जबसे वह दोबारा असफल हुआ था तबसे आज

तक कुछ भी नहीं बदला था। उसने अपने धन्धे के सारे मामले सिलटा दिये थे। अपनी सम्पत्ति का काफी बड़ा हिस्सा अपनी प्यारी बेटी के नाम कर दिया था।

उसने ताबूत भी खरीद लिया था जिसमें उसका शरीर दफ़नाया जायेगा और उसे अपने घर के एक कमरे में सुरक्षित रूप से रखवा दिया था।

उसने एक पादरी को भी तय कर लिया था। कुछ संगीतज्ञों को भी चुन लिया जो उसके दफ़न पर उसके लिये संगीत बजाते। और एक आदमी को भी तय कर लिया था जो अन्तिम समय में उसका सिर काटेगा।

उसने उससे कह रखा था कि वह उसकी खाल की एक पर्त नहीं काटेगा क्योंकि जब वह आध्यात्मिक दुनियाँ में घुसेगा तब यह उसके लिये अच्छी किस्मत ले कर आयेगा बजाय इसके कि उसका सिर पूरी तरह से काट दिया जाये।

इस तरह हम कह सकते हैं कि क्वान यू पूरी तरह से मरने के लिये तैयार था। यहाँ तक कि तीसरी कोशिश की पहली रात को उसे एक सपना भी दिखायी दिया जिसमें उसने देखा कि वह मौत की सजा देने वाले के सामने झुक रहा है और उससे अपना समझौता याद दिला रहा है।

जितने लोग भी क्वान यू के कारखाने में उस समय जमा थे उनमें सबसे कम को आई ही उत्साहित थी। जहाँ वह अपनी माँ के

साथ खड़ी हुई थी सबसे छिप कर वह वहाँ से दीवार के साथ साथ चल कर उस टैंक के पास जा खड़ी हुई जिसमें घंटा बनाने के लिये सारी धातुऐं उबल रही थीं। अब वह उस इशारे का इन्तजार करने लगी जब उन पिघली हुई धातुओं को उस टैंक में से उँडेला जाने वाला था।

को आई ने बादशाह की तरफ देखा कि वह कब इशारा करते हैं। आखिर उसने बादशाह का हिलता हुआ सिर देखा वह तुरन्त ही अपनी साफ आवाज में चिल्लाती हुई कि "पिता जी केवल आपके लिये। यही एक तरीका था।" कूद कर उस पिघली हुई धातु के मिश्रण में गिर गयी।

पिघली हुए सफेद धातुओं के मिश्रण ने उसका प्यार से स्वागत किया और उसे पूरा का पूरा ऐसे निगल लिया जैसे वह पिघली हुई आग उसका मकबरा हो।

और क्वान यू। उसका क्या। वह पागल सा पिता। वह तो अपनी जान से भी ज़्यादा प्यारी को अपनी जान देने पर बिल्कुल ही पागल हो गया। उसकी अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये उसने अपनी जान जो दे दी थी।

वह उसको बचाने के लिये आगे बढ़ा पर वह उसका केवल एक छोटा सा रत्न जड़ा जूता ही पकड़ सका क्योंकि वह तो हमेशा के लिये उसमें अदृश्य हो चुकी थी – एक छोटा सा सुन्दर जूता जो उसे हमेशा के लिये उसके बलिदान की याद दिलाता रहता।

अपने इस गहरे दुख में जिसमें उसने अपने इस पल को छिपा रखा था वह खुद भी उसी पिघली हुई धातु की नदी में कूद जाता अगर उसके नौकरों ने उसे न पकड़ लिया होता जब तक कि बादशाह ने अपना इशारा दोबारा न किया होता और पिघली धातु सॉचे में न डाली जाती होती।

सबकी दुखी ऑखें उस पिघली धातु की नदी पर रुकी हुई थीं जो मिट्टी के सॉचे में जा कर गिरने वाली थी और जिसमें को आई का कोई पता नहीं था।

तो बच्चों। यह है पेकिंग के घंटे की वह समय के साथ धुँधली पड़ी कहानी जिसे कवियों ने कहानी कहने वालों ने और मॉओं ने लाखों बार कहा है क्योंकि तुमको यह मालूम होना चाहिये कि इस तीसरी बार घंटा बनाने में जब मिट्टी का सॉचा हटाया गया तो उस घंटे ने दिखाया कि वह दुनियॉ का सबसे सुन्दर घंटा था जो शायद ही कभी किसी ने देखा हो।

जब वह घंटा घंटाघर पर लटकाया गया तो वहॉ के लोग बहुत खुश हुए। चॉदी और सोना लोहा और पीतल उस लड़की के खून से आपस में बॅधे हुए थे और बजने पर वह दूसरे शहरों के घंटों से ही नहीं बल्कि दुनियॉ भर के घंटों से भी बहुत ज़्यादा मीठी आवाज निकाल रही थी।

और यह बड़ी अजीब सी बात थी कि उसकी गहरी आवाज में से उस लड़की के नाम की आवाज आ रही थी जिसने ज़िन्दा ही **10**

हजार साल पहले अपना बलिदान दिया था – को आई को आई। ताकि सब लोग उसके गुणों को याद रख सकें।

और यह केवल उन्हीं लोगों की समझ में आता है जो घंटा बजने के समय उसके पास खड़े होते हैं कि उसकी गहरायी में से एक फुसफुसाहट सी निकलती है – "सीह सीह।"[78] जो भी उसे सुनता है उसके मुँह से निकलता है "अफसोस। को आई अपने जूते के लिये रो रही है। बेचारी छोटी सी को आई।"

मेरे प्यारे छोटे बच्चों। अब यह कहानी यहीं खत्म होती है पर फिर भी अभी एक बात और बची है जिसे तुम्हें जानना ही चाहिये और उसे भूलना नहीं चाहिये। बादशाह के हुक्म से उस बड़े घंटे के ऊपर एक पुराने साहित्य की कहावत लिखी हुई थी जो घंटे के न बजने के समय में भी लोगों को नसीहत देती थी।

युंग लो ने दुख के मारे हुए पिता से कहा — "देखो। तुम्हारी सारी अक्लमन्दी की कहावतों में सारे साधुओं की मूल्यवान कहावतों में कोई भी कहावत ऐसी नहीं है जो मेरे बच्चों को प्यार का इतना मीठा सन्देश दे सके जैसा कि तुम्हारी बेटी ने दिया।

हालाँकि उसने तुम्हें बचाने के लिये अपनी जान दी लेकिन उसके गीत तो तुम्हारे मर जाने के बाद भी गाये जायेंगे। और तभी तक नहीं बल्कि जब घंटा नष्ट हो जायेगा तभी भी।

[78] Tsieh – Chinese word for slipper

20 एक डाक्टर कुत्ते की अजब कहानी[79]

बहुत दूर मध्य चीन में मनुष्यों के प्रान्त में एक छोटे से गॉव में एक बहुत ही भला अमीर आदमी रहता था। उसके केवल एक ही बच्ची थी यह बेटी अपने पिता को बहुत प्यारी थी।

यह मिस्टर मिन अपने जिले में अपनी अक्लमन्दी के लिये बहुत प्रसिद्ध था और क्योंकि उसके पास बहुत सारी जायदाद भी थी तो उसने अपनी हनीसकिल[80] को संतों की सीख सिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ रखी थी और जो कुछ उसने मॉगा वह उसे दिया।

वह उस फूल जैसी ही मीठी थी जिससे उसने अपना यह नाम लिया था। वह अपने पिता की हर बात बहुत ध्यान से सुनती थी और उसको बिना दूसरी बार कहे मानती भी थी।

उसका पिता उसके लिये अक्सर हर तरह की और हर शक्ल की पतंगें खरीदा करता था। मछलियों की चिड़ियों की तितलियों की छिपकलियों की बड़े बड़े ड्रैगनों की। उनमें से एक पतंग ऐसी भी थी जिसकी पूँछ 30 फीट से भी ज़्यादा लम्बी थी।

---

[79] The Strange Tale of Doctor Dog. A Chinese Folktale from the Book "A Chinese Wonder Book", by Norman Hinsdale Pitman, edited by Andrew Lang. NY : EP Dutton. 1922. Available at : https://www.gutenberg.org/cache/epub/18674/pg18674.txt

[80] Honeysuckle was the name of Mr Min's lovely daughter. Honeysuckle is a flower's name. It has a very lovely fragrance and comes in several colors. it grows on vines.

मिस्टर मिन को हनीसकिल के लिये पतंग उड़ानी बहुत अच्छी आती थी। वह तितली और चिड़ियों वाली पतंगें इतनी अच्छी उड़ाता था कि अगर उसे कोई पश्चिम का लड़का उड़ाते देख ले तो वह तो यही कहेगा कि यह कोई सच्ची तितली या चिड़िया उड़ रही है क्या। फिर वह पतंग की डोर में कोई छोटा सा पत्थर बाँधता और अपने हाथ इधर उधर हिलाता जिससे गुनगुनाने की सी आवाज निकलती।

उसे सुन कर हनीसकिल ख़ुशी से ताली बजाते हुए कहती — "पिता जी यह तो हवा के गाने की आवाज है वह हम दोनों के लिये पतंग के गीत गा रही है।"

अगर उसकी बच्ची ज़रा सी भी कभी शैतानी करती तो कभी कभी उसे सिखाने के लिये मिस्टर मिन बहुत सारे चीनी शब्द कागज पर लिख कर उसकी पतंगों की डोर से बाँध देता।

हनीसकिल अपने पिता से पूछती — "यह आप क्या कर रहे हैं पिता जी? ये अजीब से कागज क्या हैं?

"इस हर कागज पर वे पाप लिखे हुए हैं जो हमने किये हैं।"

"पाप क्या होता है पिता जी?"

मिस्टर मिन कहते — "पाप? जब हनीसकिल शैतानी करती है उसे पाप कहते हैं। तुम्हारी बूढ़ी आया तुम्हें डाँटने से डरती है और अगर तुम्हें एक अच्छी स्त्री के रूप में बड़ा होना है तो तुम्हारे पिता को तुम्हें सिखाना ही पड़ेगा कि क्या ठीक है।"

उसके बाद मिस्टर मिन पतंग को बहुत ऊँचा उड़ाते घरों की छतों के भी ऊपर ऊँचे ऊँचे पगोडा से भी ऊपर। जब उनकी सारी डोर खत्म हो जाती तब वह दो बहुत नुकीले पत्थर उसमें बाँधते और उन्हें हनीसकिल को पकड़ाते हुए कहते — "बेटी अब तुम इस डोर को काट दो तो हवा उन पापों को उड़ा कर ले जायेगी जो इन कागज के टुकड़ों पर लिखे हैं।"

हनीसकिल भोलेपन से कहती — "पर पिता जी यह पतंग कितनी सुन्दर है। क्या हम अपने पापों को थोड़ी देर के लिये और नहीं रख सकते?"

उसके सवाल पर मिस्टर मिन अपनी हँसी रोकते हुए कहते — "नहीं बेटी। अपने पापों को अपने पास रखना बुरी बात है। गुण खुशी की नींव है। जल्दी करो और डोर काट दो।"

अब हनीसकिल तो बहुत ही आज्ञाकारी थी कम से कम अपने पिता की सो वह तुरन्त ही डोर काट देती और फिर अपनी पतंग के उड़ जाने पर बच्चों की तरह से रोती।

वह बड़ी निराशा से देखती रहती कि हवा उसकी प्यारी पतंग को उड़ाये लिये जा रही है – दूर दूर और बहुत दूर। अपनी आँखों पर ज़ोर डाल कर वह उसे तब तक देखती रहती जब तक वह उसकी आँखों से बिल्कुल ओझल नहीं हो जाती।

तब मिस्टर मिन कहते — "अब तुम हॅसो और खुश हो जाओ क्योंकि अब तुम्हारे सारे पाप उड़ गये हैं पर ध्यान रखना कि अब तुम और पाप इकट्ठे मत करना।"

हनीसकिल को "पंच और जूडी"[81] शो देखना अच्छा लगता था क्योंकि यह पुराने ढंग का शो चीन के छोटे छोटे बच्चों को बहुत पसन्द आता था। शायद यह तुम्हारे दादा के पैदा होने से भी तीन हजार साल पहले का था।

यह भी कहा जाता है कि जब बादशाह मू ने पहली बार इन छोटी छोटी मूर्तियों को नाचते देखा तो वह यह देख कर बहुत गुस्सा हो गया कि उनमें से एक मूर्ति उसकी पत्नी की तरफ देख कर ऑखें मटका रही थी।

उसने इस शो के दिखाने वाले को मौत के घाट उतारने का हुक्म दिया था पर फिर बड़ी मुश्किल से वह यह विनती कर के अपनी ज़िन्दगी वापस पा सका था कि वे पुतलियॉ ज़िन्दा नहीं थीं केवल कपड़े और मिट्टी की बनी थीं।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हनीसकिल इस पंच और जूडी शो को बहुत पसन्द करती थी अगर भगवान के बेटे ने खुद भी इससे धोखा न खाया होता कि वे सचमुच के खून और मॉस के बने हुए लोग थे।

---

[81] Punch and Judy

पर अब हमें अपनी कहानी पर जल्दी ही आ जाना चाहिये वरना तो हमारे कुछ पढ़ने वाले पूछने लगेंगे "इस कहानी में डाक्टर कुत्ता कहाँ हैं? क्या तुम इस कहानी के हीरो को नहीं ला रहे?"

एक दिन हनीसकिल एक छायादार जगह में बैठी हुई थी जहाँ से एक बहुत छोटा सा मछलियों वाला तालाब दिखायी देता था। अचानक उसके पेट में बहुत ज़ोर का दर्द उठा। दर्द की वजह से उसने अपने एक नौकर को भेज कर अपने पिता को बुलवाया और वह खुद बेहोश हो गयी।

उन्होंने तुरन्त ही अपने परिवार के डाक्टर को बुलवाया। पिता अपनी बेटी को तुरन्त ही बिस्तर पर लिटाने के लिये ले गया। हालाँकि वह अपने बेहोशी से थोड़ा सा ठीक हो चुकी थी पर उसका वह तेज़ दर्द अभी भी वैसा ही था। वह बेचारी लड़की तो दर्द के मारे बस मरने वाली ही हो रही थी।

अब जब वह होशियार डाक्टर घर आया और उसने अपने बड़े बड़े चश्मे में से उसकी तरफ देखा तो वह उसके दर्द की वजह नहीं बता सका।

खैर अपने कुछ पश्चिमी डाक्टरों की तरह से उसने इस बारे में अपनी अज्ञानता नहीं जतायी बल्कि उसे पीने के लिये बहुत सारा गर्म पानी बता दिया और उसके बाद हिरन के सींग के पाउडर और कछुए की सूखी खाल के पाउडर को मिला कर खाने के लिये बता दिया।

बेचारी हनीसकिल तीन दिन तक ऐसी ही दुखी हालत में पड़ी रही। सो न पाने की वजह से पल पल पर वह और ज़्यादा कमजोर होती जा रही थी। जिले का हर डाक्टर बुलाया गया। दो डाक्टर चांगशा[82] से आये जो वहाँ के एक मशहूर शहर से आये थे।

पर सब बेकार रहा। यह एक ऐसा रोग था जो डाक्टरों के वश में नहीं था। यहाँ तक कि बहुत अक्लमन्द डाक्टर भी कुछ नहीं कर सके।

निराश पिता के रखे गये इनाम को पाने के लिये इन डाक्टरों ने चीनी ऐनसाइक्लोपीडिया का हर पृष्ठ छान मारा पर उन्हें इस रोग की कोई दवा नजर नहीं आयी।

एक विचार यह भी आया कि इंगलैंड के एक खास डाक्टर को बुलाया जाये जो एक दूर के शहर में रहता था और जिसे रोगों और इलाज की अच्छी जानकारी थी। वह शैतानी रोगों का इलाज भी करता था। पर वहाँ के शहर के मजिस्ट्रेट ने मिस्टर मिन को ऐसा करने की इजाज़त नहीं दी क्योंकि इससे वहाँ की जनता में डर फैल सकता था।

तब मिस्टर मिन ने अपनी बेटी की बीमारी के लक्षण बताते हुए यह घोषणा जारी की कि जो कोई उसकी बेटी का इलाज कर के उसे ठीक करेगा और उसकी खुशियाँ वापस लायेगा वह उसके साथ

[82] Changsha – name of a place

अपनी बेटी की शादी कर देगा और साथ में एक अच्छा खासा दहेज भी देगा।

यह सोचते हुए कि जितना उसके हाथ में था उतना उसने कर दिया वह उसके पलंग के पास बैठ गया और इन्तजार करने लगा।

उसकी इस घोषणा के जवाब में अपनी अपनी होशियारी आजमाने के लिये राज्य के हर कोने से हनीसकिल को देखने के लिये कई लोग आये – डाक्टर, बूढ़े और जवान। जब उन्होंने हनीसकिल को और उसे दहेज में दिये जाने चाँदी के जूतों के बहुत बड़े ढेर को देख लिया तो वे अपनी पूरी ताकत के साथ उसकी बीमारी का इलाज करने में जुट गये।

कुछ तो उसकी सुन्दरता से प्रभावित थे और कुछ उसके सम्मान से जबकि कुछ उसके पिता के दिये जाने वाले दहेज से। पर दुख होता है बेचारी हनीसकिल के लिये कि उनमें से कोई भी हनीसकिल का इलाज नहीं कर सका।

एक दिन जब वह अपनी बीमारी से कुछ अच्छा महसूस कर रही थी उसने अपने पिता को बुलाया और अपने छोटे छोटे हाथों से उनका हाथ पकड़ कर बोली — "आपके प्यार के लिये क्या यह अच्छा नहीं होता कि मैं जंगल में अपनी इस मुश्किल लड़ाई को खत्म करती। या फिर जैसा कि दादी कहती थीं "पश्चिमी आकाश में ऊँचे उड़ जाओ।"

आपके लिये क्योंकि मैं आपकी अकेली बच्चा हूँ खास कर के जब आपके कोई बेटा नहीं है मैं ज़िन्दगी से कितना लड़ी हूँ पर अब मुझे लगता है कि अगली बार जो दर्द उठेगा तो वह तो बस मेरी जान ले कर ही जायेगा। ओह पिता जी मैं मरना नहीं चाहती।"

इधर हनीसकिल रो रही थी जैसे बस उसका दिल ही टूट जायेगा। उधर उसका पिता भी रो रहा था क्योंकि जितना वह सह रही थी उतना ही ज़्यादा वह उसे प्यार करता था।

तभी उसका चेहरा पीला पड़ने लगा। हनीसकिल चिल्लायी — "पिता जी मेरा दर्द वापस आ रहा है। अब मैं बहुत देर ज़िन्दा नहीं रहूँगी। नमस्ते पिता जी।"

यहाँ आ कर उसकी आवाज टूट गयी और एक बहुत ज़ोर की सिसकी के साथ वह उसके पलंग के पास से चला गया और बाहर जा कर एक बैन्च पर बैठ गया। उसका सिर उसकी छाती पर लटका हुआ था। उसकी आँखों से बड़े बड़े नमकीन आँसू उसकी लम्बी सफेद दाढ़ी पर गिर रहे थे।

जब मिस्टर मिन ऐसे दुखी बैठे हुए थे कि उन्होंने कुत्ते की एक हल्की सी आवाज सुनी। उन्होंने अपना सिर उठा कर ऊपर देखा तो देखा कि उनके सामने एक पहाड़ी कुत्ता खड़ा हुआ था जो न्यूफाउंडलैंड के साइज़ का था।

उस कुत्ते ने सीधे मिस्टर मिन की आँखों में ऐसे देखा जैसे कोई आदमी दुखी नजर से देखता है कि मिस्टर मिन को उससे पूछना ही

पड़ गया — "तुम यहाँ क्यों आये हो? क्या मेरी बेटी को ठीक करने?"

इसके जवाब में कुत्ता अपनी पूँछ को बहुत तेज़ी से हिलाते हुए तीन बार भौंका और फिर उस कमरे के खुले दरवाजे की तरफ चला गया जिसमें वह लड़की लेटी हुई थी। इस समय तक मिस्टर मिन हर तरह का इलाज करने को तैयार थे सो उन्होंने उसे अन्दर जाने दिया और खुद भी उसके पीछे पीछे चले गये।

उन्होंने देखा कि कुत्ते ने अपने अगले पैरों के पंजे उसके पलंग के किनारे पर रखे और हनीसकिल के शरीर को कुछ देर तक देखता रहा।

फिर एक पल के लिये उसने अपने कान उसके दिल पर रखे। फिर खाँस कर उसने अपने मुँह से एक छोटा सा पत्थर उस लड़की के हाथ पर रख दिया। उसके बाद उसने अपने दाँये पंजे से उसका वह हाथ उसके मुँह तक किया ताकि वह उसे निगल सके।

हनीसकिल ने अपना चेहरा घुमाया तो उसके पिता जी ने भी उससे कहा कि वह कुत्ते की बात मान ले क्योंकि इस डाक्टर कुत्ते को पहाड़ों की परियों ने उसे ठीक करने के लिये भेजा है जिन्होंने उसकी बीमारी के बारे में सुना और जो तुममें ज़िन्दगी वापस लाने की इच्छा रखती हैं।

सो बिना कोई देर किये उस लड़की ने जो बहुत ही ऊँचे बुखार से जली जा रही थी अपना हाथ उठाया और वह छोटा सा टोटका निगल लिया।

और देखो कैसे आश्चर्य की बात हुई कि जैसे ही उसने वह टोटका निगला तो एक जादू सा हुआ। उसके चेहरे पर लाल रंग की एक लहर दौड़ी उसका दर्द चला गया और वह ठीक हो कर अपने बिस्तर से उठ गयी। अपने पिता की गर्दन के चारों तरफ अपनी बाँहें डाल कर वह खुशी से चिल्ला पड़ी — "मैं ठीक हो गयी पिता जी। इस बड़े डाक्टर का बहुत बहुत धन्यवाद।"

वह कुलीन कुत्ता हनीसकिल के आँसू भरे शब्द सुन कर खुशी से तीन बार भौंका। फिर उसने नीचे झुक कर हनीसकिल के हाथ पर अपनी नाक रखी। मिस्टर मिन का दिल अपनी बेटी के इस अकस्मात ठीक होना देख कर भर आया।

वह उस अजनबी डाक्टर की तरफ घूमा और बोला — "ओ अजनबी जनाब। अगर आप अपनी इस शक्ल में न होते, यह तो हमें पता नहीं कि ऐसा आपने क्यों किया, तो मैंने आपको जो मैंने निश्चित किया था उससे चौगुना पैसा देता।

अब जैसा भी है तो मुझे लगता है आपको तो चाँदी की जरूरत नहीं है पर जब तक हम ज़िन्दा हैं जो कुछ हमारा है वह आपका भी है।

इसके अलावा मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप हमारे घर आते रहियेगा और इसे अपने बुढ़ापे के लिये अपना ही घर समझियेगा। संक्षेप में आप हमारे घर में एक मेहमान की तरह से या फिर हमारे परिवार के एक सदस्य की तरह से रहते रहिये।" यह सुन कर कुत्ता फिर से तीन बार भौंका जैसे उसने इसे स्वीकार कर लिया हो।

उस दिन के बाद से पिता और बेटी समान रूप से उस कुत्ते को मानने लगे। बहुत सारे नौकरो को भी यह कह दिया गया कि वे उसकी छोटी से छोटी इच्छा को पूरा करें चाहे वह उन्हें कितनी ही बेकार की क्यों न लगे। इसके अलावा उसे मँहगा से मँहगा खाना खिलायें। उन्हें चाहे जो करना पड़े वे उसे खुश रखने के लिये वही करें।

रोज वह हनीसकिल के साथ जाता जब वह बागीचे से फूल चुन रही होती। उसके दरवाजे के बाहर लेटा रहता जब वह सो रही होती। उसके साथ उसके गार्ड की तरह से जाता जब उसके नौकर उसे सीडान कुर्सी में बिठा कर शहर में ले जाते। अब वे हर समय के साथी हो गये थे। अगर कोई अजनबी उन्हें देखता तो सोचता कि वे बचपन के साथी हैं।

एक दिन जब वे अपने पिता के कम्पाउंड से बाहर से एक यात्रा से वापस आ रहे थे तो उसी पल जब हनीसकिल अपनी कुर्सी से उतर रही थी बिना किसी से भी कुछ कहे वह बड़ा जानवर दासों के

पास से गुजरा अपनी सुन्दर मालकिन को अपने मुँह से पकड़ा और उसे पहाड़ों की तरफ ले चला। कोई कुछ कर नहीं सका।

जब तक सब लोगों को सावधान किया गया तब तक अँधेरा फैल गया था। उस रात आसमान में बादल थे सो कुछ दिखायी भी नहीं दे रहा था। सो कुत्ते और हनीसकिल दोनों का ही पता नहीं चल सका।

एक बार फिर पिता ने अपनी बेटी को ढूँढने में कोई कोशिश नहीं छोड़ी। बड़े बड़े इनाम घोषित किये गये। बहुत सारे लकड़हारे पहाड़ों में उसे ढूँढने गये पर अफसोस लड़की का कहीं कोई पता नहीं चला।

अभागे पिता ने फिर उसकी खोज छोड़ दी और अपने आपको कब्र में जाने के लिये तैयार करने लगा। अब उसके लिये उसकी ज़िन्दगी में कुछ नहीं बचा था जिसके उसे कोई चिन्ता होती। अब उसके पास सिवाय अपनी बेटी के बारे में सोचने के और कुछ रह ही नहीं गया था। हनीसकिल हमेशा के लिये चली गयी थी।

अब उसे बस एक मशहूर कवि की लाइनें याद आ रही थी जो बहुत निराश हो चुका था —

मेरे सफेद हुए बाल एक लम्बी रस्सी बनायेंगे
फिर भी मेरे दुख की गहरायी को नाप नहीं पायेंगे

कई लम्बे साल बीत गये, बूढ़े के लिये वे दुख भरे साल, अपनी बेटी के दर्द के साल।

एक अक्टूबर के एक सुन्दर दिन वह उसी जगह बैठा हुआ था जहाँ वह अक्सर अपनी बेटी के साथ बैठा करता था। उसका सिर उसकी छाती तक नीचे लटका हुआ था। उसके माथे पर दुख की लाइनें पड़ी हुई थीं।

कि तभी हवा से पास के पेड़ की पत्तियों की सरसराहट की आवाज ने उसका ध्यान खींच लिया। लो उसके ठीक सामने डाक्टर कुत्ता खड़े थे और उसकी पीठ पर उसके उलझे बालों को पकड़े उसकी हनीसकिल थी – उसकी बहुत सालों की खोयी हुई बेटी। उसके पास बहुत सुन्दर तीन बेटे खड़े थे जितने सुन्दर बेटे उसने पहले कभी नहीं देखे थे।

उसे देखते ही उसने उसे गले लगा लिया और चिल्लाया — "ओह मेरी प्यारी बेटी। इतने सालों से तुम कहाँ थीं? जिस दिन से तुम मुझसे अकस्मात छीन ली गयीं तो क्या उस दिन से तुम भी दुखी थीं? क्या तुम्हारी ज़िन्दगी भी दुखी थी?"

उसने बड़ी नम्रता से उसके माथे को अपनी कोमल उँगलियों से छूते हुए जवाब दिया — "मैं दुखी तो थी पर केवल आपके दुखी होने को सोच कर। केवल यह सोच कर कि मैं हर रोज आपको देखना कितना पसन्द करती थी। केवल यह सोच कर कि मैं आपको कैसे बताऊँ कि मैं अपने पति के साथ कितना खुश थी।

क्योंकि पिता जी। यह कोई केवल जानवर नहीं है जो आपके पास खड़ा है। यह डाक्टर कुत्ता जिसने मेरा इलाज किया और इस तरह से आपके वायदे के अनुसार इसका मेरे ऊपर अधिकार हुआ। यह कोई कुत्ता नहीं है बल्कि एक बहुत बड़ा जादूगर है। यह अपनी मर्जी से हजारों बार अपनी शक्ल बदल सकता है।

पिछली बार इसने एक पहाड़ी जानवर की शक्ल में यहाँ आने का विचार किया ताकि कोई इसके दूर बने महल में आ न सके और उसका भेद न पा सके।"

लड़खड़ा कर एक नयी नजर से कुत्ते को देखते हुए बूढ़ा बोला — "तो यह तुम्हारा पति है?"

"जी पिता जी। मेरा दयालु और कुलीन पति। मेरे तीन बेटों का पिता। ये हैं आपके तीन पोते जिन्हें हम आपसे मिलाने लाये हैं।"

"और तुम रहती कहाँ हो?"

"उन बड़े पहाड़ों में एक गुफा में जिसकी दीवारें और फर्श क्रिस्टल के हैं। जिनमें चमकते हुए जवाहरात जड़े हुए हैं। जिसमें रखी कुर्सियाँ और मेजें सब जवाहरातों से जड़ी हुई हैं। जिसके कमरे हजारों हीरों की चमक से दमकते हैं।

ओह वह जगह तो भगवान के बेटे की जगह से भी अच्छी है पिता जी। हम वहाँ जंगली हिरनों का और पहाड़ी बकरों का माँस खाते हैं और पहाड़ों की सबसे साफ नदियों में रहने वाली मछलियाँ

खाते हैं। हम वहाँ सोने के प्यालों में बिना पहले उबाले पानी पीते हैं क्योंकि वहाँ का पानी बहुत शुद्ध है। हम वहाँ उस खुशबूदार हवा में साँस लेते हैं जो पाइन के जंगलों से हो कर आती है।

हम केवल एक दूसरे से और अपने बच्चों से प्यार करने के लिये ही ज़िन्दा हैं। पिता जी हम बहुत खुश हैं। अब आप हमारे साथ चलिये और उसी पहाड़ में रहिये। भगवान करे वहाँ आप बहुत दिन ज़िन्दा रहें।"

बूढ़े ने अपनी बेटी को एक बार फिर से गले लगाया और बच्चों के साथ खेला जो अपने उस नाना की खोज से बहुत खुश थे जिसका उनको पता ही नहीं था।

कहते हैं कि डाक्टर कुत्ता और उसकी सुन्दर हनीसकिल से ही आदमियों की जानी पहचानी "युस" जाति की उत्पत्ति हुई है जो आज भी हूनान और कैन्टन क्षेत्र[83] के पहाड़ों में रहते हैं।

यह कहानी हमने यहाँ इस वजह से तो नहीं कही है कि हमें "युस" जाति की उत्पत्ति बतानी थी पर हमने सोचा कि शायद लोग उस कुत्ते का भेद जानना चाहें जिसने एक लड़की का इलाज किया और उसे अपनी दुलहिन के रूप में जीत लिया था।

[83] Hunan and Canton regions

21 लोमड़ों से दोस्ती[84]

एक बार की बात है कि एक आदमी के पास बहुत बड़ा भूसे का ढेर था – इतना बड़ा जितनी एक पहाड़ी। उसमें से उसके नौकर जितना उनको जरूरत होती थी उतना भूसा ले जाते थे। इससे उसमें एक तरफ को एक काफी बड़ा गड्ढा सा बन गया था।

एक लोमड़े ने इसे देखा तो वहाँ उसने उसे अपना घर बना लिया। कभी कभी वह एक बूढ़े के रूप रख कर वह अपने मकान मालिक से मिल आया करता था।

एक दिन लोमड़े ने अपने मकान मालिक को अपने घर बुलाया। पहले तो मकान मालिक ने मना कर दिया पर लोमड़े की जिद पर उसने उसके घर आना मान लिया।

और लो जब वह उसके घर में घुसा तो उसने देखा कि उसका घर तो बहुत बड़ा था। उस घर में कई कमरे थे। जब वे वहाँ आराम से बैठ गये तो खुशबूदार चाय पी और बढ़िया शराब पी।

लेकिन वह जगह कुछ धुँधली धुँधली सी थी। न तो वहाँ रात ही थी न वहाँ दिन ही था। धीरे धीरे मेहमानदारी खत्म हुई तो मेहमान ने जाने की इजाज़त माँगी।

[84] Friendship With Foxes – a folktale from China, Asia. From the Book "Myths and Legends of China" by ETC Werner. London, George E Harrap. 1922.
Taken from the Web Site : http://www.gutenberg.org/files/15250/15250-h/15250-h.htm#d0e5705

जब वह वहाँ से चल दिया तो वह घर वे सुन्दर कमरे उनमें रखी चीज़ें सब गायब हो गयीं। बूढ़े को शाम को चले जाने की और सुबह सुबह की सूरज की पहली किरन निकलने के समय वापस आने की आदत थी।

क्योंकि उस बूढ़े का कोई पीछा नहीं कर सकता था तो घर के मालिक ने उससे पूछा कि रात को वह कहाँ गया था। वह बोला कि उसको उसके किसी दोस्त ने शराब पीने के लिये बुलाया था वहीं गया था। मालिक ने उससे विनती की किसी दिन वह उसको भी वहाँ अपने साथ ले चले। बूढ़े ने उसको बड़े बेमन से मान लिया।

सो उसने मालिक का हाथ पकड़ा और हवा के पंखों पर सवार हो कर चल दिया। जितनी देर में एक बर्तन में बाजरा पकता है उतनी देर में वे लोग वहाँ पहुँच गये। वे एक रैस्टौरैन्ट में घुसे जहाँ बहुत सारे लोग शराब पी रहे थे और बहुत शोर मचा रहे थे।

बूढ़ा मकान मालिक को ऊपर गैलरी में ले गया वहाँ से वे नीचे बैठे लोगों को खाते पीते देख सकते थे। वह खुद नीचे चला गया। वहाँ से सारी मेजों से उसने किसी को अपने आपको दिखाये बिना ही अच्छे अच्छे खाने पीने उठा लिये।

कुछ देर बाद ही एक आदमी लाल रंग के कपड़े पहन कर सामने आया और कुछ और खाने ले कर आया। उनको देखते ही मकान मालिक ने बूढ़े से विनती की कि वह उसको उन खानों में से

कुछ खाना उसको ला दे। तो बूढ़ा बोला — “ओह वह बहुत बड़ा आदमी है। मैं उसके पास नहीं जा सकता।”

इस पर मकान मालिक ने सोचा “इस तरह से तो इस लोमड़े के साथ में मैं खाने का जो मुख्य हिस्सा है वह तो खा ही नहीं पाऊँगा। इसलिये आगे से मैं भी बड़ा आदमी बनूँगा।”

जैसे ही उसने अपने मन में यह सोचा कि उसका अपने शरीर पर से काबू खत्म हो गया और वह ऊपर से खाना खाते हुए लोगों के बीच नीचे गिर पड़ा।

ये लोग इस आदमी के अचानक गिरने से चौंक गये। उसने खुद ने ऊपर देखा तो देख कर आश्चर्य में पड़ गया। वहॉ ऊपर तो कोई गैलरी नहीं थी। वहॉ पर तो केवल एक शहतीर[85] था जिसके ऊपर वह बैठा हुआ था।

अब उसने अपने सारे हालात को फिर से सोचा तो उसने देखा कि वह तो अपने घर से बहुत दूर था – यू ताई[86] में, 1000 ली[87] दूर। उसका तो घर वापस जाने का ही काफी खर्चा था।

[85] Translated for the word “Beam”. Beam is a long wooden log fixed to he ceiling to support the roof of the house. See its picture above.

[86] Yu-t-ai

[87] Li – a Chinese measurement of distance. 1 Li = 0.3 mile, so 1000 Li = approx. 333 miles

22 शादी की लौटरी[88]

एक मजदूर था मा शीन जुंग[89]। जब वह बेचारा केवल 20 साल का ही था तो उसकी पत्नी चल बसी। वह इतना गरीब था कि दूसरी शादी भी नहीं कर सकता था।

एक बार जब वह अपने खेतों में हल चला रहा था तो उसने देखा कि बहुत सुन्दर लड़की सड़क छोड़ कर बीच खेत से चल कर उसकी तरफ आ रही थी। उसका चेहरा बहुत सजा हुआ था और उसकी शक्ल इतनी अच्छी लग रही थी कि मा को लगा कि वह रास्ता भूल गयी है।

वह उससे मजाक करने वाला ही था कि वह चिल्ला कर बोली — "तुम अपने घर जाओ। मैं भी तुम्हारे पीछे पीछे आती हूँ।"

मा को यह अजीब सी बात सुन कर आश्चर्य हुआ पर उसने कसम खायी कि वह अपना वायदा नहीं तोड़ेगी। सो मा वहाँ से चला गया और उससे कहता गया कि उसका दरवाजा उत्तर की तरफ खुलता है।

आधी रात को वह उसके घर आयी तो मा ने देखा कि उसका चेहरा और हाथ बहुत बारीक बालों से ढके थे।

---

[88] Marriage Lottery – a folktale from China, Asia. Taken from the Book "Myths and Legends of China" by ETC Werner. London, George E Harrap. 1922. Available from the Web Site : http://www.gutenberg.org/files/15250/15250-h/15250-h.htm#d0e5705

[89] Ma Tien-jung – name of the labor

इससे उसको यकीन हो गया कि वह लोमड़ी थी। उसने इस बात को मना भी नहीं किया सो मा ने उससे कहा — "अगर तुम वाकई वह अद्भुत सुन्दर जानवर हो तो तुम मुझे वह सब कुछ दे सकती हो जो मैं चाहता हूँ। मैं तुम्हारा बहुत आभारी रहूँगा अगर तुम मुझे शुरू शुरू में कुछ पैसे दो जिससे मेरी थोड़ी सी गरीबी दूर हो सके।"

नौजवान स्त्री बोली — "मैं तुम्हें दूँगी।"

और अगली शाम जब वह फिर उसके पास आयी तो मा ने तुरन्त ही उससे पूछा — "मेरा पैसा कहाँ है?"

वह बोली — "अरे मैं तो बिल्कुल ही भूल गयी।"

जब वह वहाँ से वापस जा रही थी मा ने उसे याद दिलाया कि वह क्या चाहता था पर अगली शाम उसने फिर से वही बहाना बना दिया और वायदा किया कि वह उसको पैसा अगले दिन ला कर देगी।

अगले दिन उसने अपनी आस्तीन में से दो चाँदी के टुकड़े निकाले जो **5** या **6** औंस भारी थे। उसकी चाँदी बहुत ही बढ़िया किस्म की थी और उनके किनारे ऊपर की तरफ मुड़े हुए थे।

मा उनको देख कर बहुत खुश हुआ और उसने उनको एक आलमारी में सँभाल कर रख दिया।

कुछ महीने बाद मा को पैसे की जरूरत पड़ी तो उसने चाँदी के वे टुकड़े निकाले और उनको बाजार में बेचने के लिये ले गया।

जब उसने उनको सुनार को दिखाया तो उसने कहा कि वे तो केवल टीन के बने हुए थे। उसने उसमें से बड़ी आसानी से अपने दॉतों से एक टुकड़ा काट कर उसे दिखाया।

मा को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ पर उसने उससे कहा कुछ नहीं। घर आ कर उसने वे टुकड़े ऐसे के ऐसे ही रख दिये। अगले दिन शाम को जब वह आयी तो उसे उसने उसे बहुत बुरा भला कहा।

वह बोली — "खरा सोना तुम्हारी खराब किस्मत में नहीं था।"

उसके बाद सब कुछ खत्म हो गया। पर मा बोला — "मैंने हमेशा यही सुना है कि लोमड़ा लड़कियॉ[90] बहुत सुन्दर होती हैं। ऐसा कैसे है कि तुम नहीं हो।"

नौजवान स्त्री ने जवाब दिया — "ओह। हम अपने साथ वाले के अनुसार अपने आपको बदल सकते हैं। तुम्हारी किस्मत में तो एक औंस चॉदी भी अपनी कहने के लिये नहीं है तो फिर तुम एक राजकुमारी का क्या करोगे? मेरी सुन्दरता किसी बड़े आदमी के लिये तो ठीक नहीं भी हो सकती पर तुम जैसे लोगों के लिये तो यह बहुत है।"

उसके बाद फिर कुछ महीने बीत गये। एक दिन फिर वह नौजवान स्त्री वहॉ आयी और उसको तीन औंस चॉदी देते हुए बोली — "तुम अक्सर मुझसे पैसा मॉगा करते थे पर तुम्हारी बुरी किस्मत

[90] Translated for the words "Fox Girls"

की वजह से मैं कभी तुम्हें पैसा नहीं दे सकी। पर अब तुम्हारी शादी होने वाली है सो मैं तुम्हें एक दुलहिन की कीमत दे रही हूँ। इसे तुम मुझसे अलग होने की भेंट भी समझना।"

मा ने कहा कि उसकी तो अभी सगाई भी नहीं हुई है। इस पर उस नौजवान स्त्री ने कहा — "कुछ ही दिनों में एक बिचौलिया[91] तुम्हारी शादी तय कराने के लिये आयेगा।"

मा ने पूछा कि वह लड़की कैसी होगी तो नौजवान स्त्री ने कहा — "जैसी तुम चाहते हो, बहुत सुन्दर। वह सचमुच में बहुत सुन्दर होगी।"

मा बोला — "मुझे तो विश्वास नहीं होता क्योंकि किसी भी तरह से तीन औंस चाँदी किसी भी तरह की दुलहिन को पाने के लिये काफी नहीं है।"

नौजवान लड़की ने उसे समझाया — "शादियाँ चाँद[92] में बनती हैं। दुनियाँ के लोगों का उससे कोई मतलब नहीं है।"

मा ने पूछा — "और तुम इस तरह क्यों जा रही हो।"

वह बोली — "क्योंकि शाम को इस तरह हमारा मिलना ठीक नहीं है। मुझे तुम्हारे लिये कोई दूसरी पत्नी ढूँढनी चाहिये और तुम्हारे साथ अपना यह रिश्ता खत्म करना चाहिये।"

---

[91] Translated for the word "Go-between". He is the person who adjusts two parties for some contract. In India this man is very common, it seems in China also the things work like this.

[92] Wherein rebacaaOilayaa ba sides an old gentleman who ties together with a red cord the feet those destined to become man and wife. There is no escape, no matter what distance may separate the affianced apart.

जब सुबह हो गयी तो उसने मा को एक चुटकी पीले रंग का पाउडर दिया और कहा — "हमारे अलग हो जाने के बाद अगर तुम कभी बीमार पड़ो तो यह तुम्हारा इलाज करेगा।" यह कह कर वह वहाँ से चली गयी।

अगले दिन ही एक बिचौलिया वहाँ आया और उसने उससे शादी की बात की तो मा ने उससे तुरन्त पूछा कि उसकी पत्नी दिखने में कैसी है तो उसने जवाब दिया कि वह दिखने में काफी अच्छी लगती है।

उससे उसकी कीमत **4–5** औंस चाँदी तय हुई। मा को इतना पैसा देने में कोई परेशानी नहीं हुई पर उसने कहा कि वह एक नजर लड़की को देखना[93] चाहेगा।

बिचौलिया बोला — "वह एक सम्मानित घर की लड़की है इसलिये वह कभी भी अपने आपको दिखाना नहीं चाहेगी।"

खैर आखिर में यह तय किया गया कि वे दोनों साथ साथ उसके घर जायें और वहाँ जा कर मौके का इन्तजार करें। सो वे दोनों उसके घर गये। मा घर के बाहर ही रहा जबकि बिचौलिया उसके घर के अन्दर चला गया। कुछ देर बाद ही वह बाहर आया और मा से कहा कि अन्दर सब कुछ ठीक ठाक था।

---

[93] Seeing the girl before the marriage is highly improper, but can be winked at in large majority of Chinese betrothals.

उसने कहा — “मेरा एक रिश्तेदार उसी कम्पाउन्ड में रहता है। मैंने उस लड़की अभी अभी एक कमरे में बैठे देखा है। हम लोग इस तरह से अन्दर जायेंगे जैसे हम दोनों मेरे रिश्तेदार के घर जा रहे हैं। उस बीच में तुम उसको एक नजर देख लेना।”

मा राजी हो गया। इसी इरादे के अनुसार दोनों कमरे में से गुजरे तो मा ने देखा कि लड़की सिर आगे को झुकाये कमरे में बैठी हुई थी और कोई उसकी पीठ खुजला रहा था।

जैसा कि बिचौलिये ने कहा था वह वैसी ही लग रही थी पर जब वे पैसे के बारे में बात करने लगे तो उस लड़की ने अपने लिये कुछ कपड़े खरीदने के लिये केवल एक दो औंस चाँदी ही माँगी।

मा को लगा कि यह तो बहुत थोड़ा सा ही पैसा है इसलिये अपनी तरफ से उसने बिचौलिये को एक भेंट दी। यह सब मिला कर मा ने अपनी लोमड़ी दोस्त के तीन औंस चाँदी ही खर्च की।

एक अच्छा सा दिन तय कर लिया गया और वह लड़की उसके घर आ गयी। और लो वह लड़की तो कुबड़ी थी और उसकी छाती कबूतर जैसी थीं। छोटी सी गर्दन थी कछुए जैसी। पैर उसके 10 इंच लम्बे थे। उसके दिमाग में उसकी लोमड़ी दोस्त की कही बात घूम गयी।

23 दयालु लड़की[94]

चिंग लिंग[95] नाम की एक जगह पर एक कू[96] नाम का आदमी रहता था जो काबिल तो बहुत था पर गरीब भी बहुत था। उसकी एक बूढ़ी माँ थी जिसकी वजह से उसको घर छोड़ने में भी बहुत मुश्किल थी। इसलिये वह लिखता था चित्रकारी करता था[97] और उससे जो पैसा कमाता था वह अपनी माँ को दे देता था।

ऐसा करते करते वह **25** साल का हो गया था और उसकी अभी तक शादी नहीं हुई थी।

उसके घर के सामने एक मकान था जिसमें बहुत दिनों से कोई रहता नहीं था कि एक दिन एक बुढ़िया और एक नौजवान लड़की उसमें रहने के लिये आ गयीं पर उनके साथ कोई आदमी नहीं था। कू ने इस बात को जानने की कोई कोशिश भी नहीं की कि वे कौन थीं और कहाँ से आयी थीं।

कुछ दिन बाद ही इत्तफाक से एक दिन जब कू अपने घर में घुस रहा था तो उसने एक नौजवान लड़की को अपने घर के दरवाजे

---

[94] Magnanimous Girl – a folktale from China, Asia. Taken from the Book "Myths and Legends of China" by ETC Werner. London, George E Harrap. 1922. Available at the Web Site : http://www.gutenberg.org/files/15250/15250-h/15250-h.htm#d0e5705

[95] Ching-Ling is a name of a place,

[96] Ku – a name of a man

[97] The usual occupation of poor scholars who are ashamed of entering into trade, or being doctors, or fortune tellers. Besides painting pictures and fans, and illustrating books, these men write fancy scrolls in various ornamental styles which are so much prized by the Chinese.

से बाहर निकलते देखा। वह लड़की कोई 18 या 19 साल की रही होगी। देखने में वह होशियार लग रही थी और किसी अच्छे घर से आती दिखती थी।

कुल मिला कर वह एक ऐसी लड़की थी जिस पर किसी की ऑख मुश्किल से ठहरती थी। जब उसने मिस्टर कू को देखा तो वह वहॉ से भागी नहीं बल्कि सीधी खड़ी रही।

जब वह घर में आ गया तो उसकी मॉ ने कहा — "वह सामने वाले घर में रहने वाली लड़की थी जो मेरा टेप[98] और कैंची लेने आयी थी। उसने मुझे बताया कि उसके घर में केवल वह और उसकी बूढ़ी मॉ हैं। उसको देखने से ऐसा नहीं लगा कि वे किसी नीची जाति के हैं।

मैंने उससे पूछा कि उसकी अभी शादी क्यों नहीं हुई तो बोली कि उसकी मॉ बूढ़ी है। मुझे कल उनके घर जाना चाहिये और जा कर मालूम करना चाहिये कि वे लोग कैसे हैं। अगर उनको बहुत ज़्यादा की जरूरत न हो तो तुम उनकी सहायता कर दिया करो।"

सो अगले दिन कू की मॉ उन लोगों के घर गयी तो उसे पता चला कि उस लड़की की मॉ को सुनायी नहीं देता। इसके अलावा वे बहुत गरीब भी दिखायी दे रहे थे। उनके घर में तो एक दिन का भी खाना नहीं था।

---

[98] Yardstick to measure the length

कू की माँ ने पूछा कि वे लोग अपना घर चलाने के लिये क्या करते थे तो लड़की की माँ ने कहा कि वे उस लड़की के हाथों की दस उँगलियों पर ज़िन्दा थे।

तब कू की माँ ने उसको बातों बातों में कहा कि वे दोनों परिवार मिल कर एक हो जाते हैं। ऐसा लगा जैसे वह बुढ़िया तो इस बात पर तैयार हो गयी हो पर लड़की से सलाह लेने पर लगा कि वह तैयार नहीं थी।

मिसेज़ कू अपने घर वापस लौट आयी और अपने बेटे से बोली "शायद वह सोचती है कि हम लोग बहुत गरीब हैं। वह न हँसती है न बोलती है। वह एक बहुत ही अच्छी सुन्दर लड़की है जैसे खालिस बर्फ। मुझे तो वह कोई मामूली लड़की नहीं लगती।"

उस दिन यह बात वहीं खत्म हो गयी कि एक दिन कू अपने पढ़ने के कमरे में बैठा हुआ कि उसके घर में एक भला आदमी आया। उसने कहा कि वह किसी पड़ोस के गाँव से आया है और कू से अपनी तस्वीर बनवाना चाहता है।

जल्दी ही दोनों नौजवान आपस में दोस्त हो गये और अक्सर मिलने लगे। एक दिन उस नौजवान ने पड़ोसन लड़की को देख लिया तो उसने कू से पूछा "यह लड़की कौन है?"

कू ने उसे बताया कि वह कौन है तो दूसरा नौजवान बोला — "यह तो वाकई सुन्दर है पर अपनी शक्ल से कुछ जिद्दी सी लगती है।"

कू अन्दर गया तो उसकी माँ ने उसे बताया कि लड़की उससे कुछ चावल माँगने आयी थी क्योंकि सारा दिन उन्होंने कुछ खाया नहीं था। उसकी माँ फिर बोली — "वह एक अच्छी बेटी है और मुझे उसके लिये बहुत दुख होता है। हमको उनकी कुछ सहायता करनी चाहिये।"

यह सुन कर कू ने अपने कन्धे पर कुछ चावल रखा और जा कर उनका दरवाजा खटखटाया और कहा कि वह चावल उसकी माँ ने भिजवाया है।

लड़की ने उससे चावल तो ले लिया पर वह उससे बोली कुछ नहीं पर उसके बाद से वह कू की माँ के पास आने लगी और उसके घर के कामों में उसका हाथ बँटाने लगी। अब वह वहाँ इस तरह से रहती जैसे वह उसकी बहू हो।

कू इस बात के लिये उसका बहुत कर्जदार था। जब भी उसके पास कभी भी कुछ भी कुछ अच्छा होता तो वह उसे उसकी माँ के घर भेज देता। हालाँकि लड़की ने कभी उसको इसके लिये अपने आपसे धन्यवाद नहीं दिया।

काफी दिनों तक इस तरह चलता रहा कि एक दिन कू की माँ की टाँग पर फोड़ा हो गया। फोड़े में दर्द बहुत था सो वह बेचारी रात दिन रोती रहती।

लड़की ने उस अपाहिज की बहुत सेवा की। वह उसके पास ही खड़ी रहती। उसकी दवाओं का ख्याल वह कुछ इस तरह से रखती

कि एक दिन वह बोली — "काश मेरे कोई ऐसी बहू होती जैसी तुम हो और मेरे आखिरी दम तक मेरी देखभाल करती।"

लड़की ने उसे तसल्ली दी — "आपका बेटा तो मुझसे भी ज़्यादा वफादार बेटा है। मेरा क्या मैं तो एक गरीब विधवा की अकेली बेटी हूँ।"

"पर यह जरूरी तो नहीं है कि एक वफादार बेटा अच्छा सेवा करने वाला भी हो। इसके अलावा अब मेरी ज़िन्दगी तो खत्म होने वाली है जब मेरा शरीर कोहरे और ओस को दे दिया जायेगा। मुझे अपने पुरखों की पूजा भी तो करनी है और फिर अपना वंश भी तो आगे चलाना है।"

जब वह यह सब कह रही थी कि तभी कू वहाँ आ गया। उसकी माँ ने रोते हुए कहा — "बेटा मैं इस लड़की की बहुत ज़्यादा कर्जदार हूँ। इसकी अच्छाई का बदला चुकाना भूलना नहीं।"

कू बहुत नीचे तक झुक गया पर वह लड़की बोली — "सर, जब आप मेरी माँ पर इतने मेहरबान थे तब मैंने तो आपको कोई धन्यवाद नहीं दिया। तब यह धन्यवाद मुझे क्यों?"

यह सुन कर कू के दिल में उसके लिये प्यार और बढ़ गया पर अपने लिये उसके ठंडे व्यवहार को वह ज़रा सा भी नहीं हिला सका। एक दिन वह उसका हाथ पकड़ने में सफल हो गया। इस पर उसने उससे कहा कि वह आगे से कभी ऐसा न करे। उसके बाद उसने उसको न तो देखा और न ही उसके बारे में कुछ सुना।

उस लड़की में उस अजनबी नौजवान के लिये जो कू के घर आता जाता था बहुत ही ज़्यादा नफरत सी पैदा हो गयी थी। एक शाम जब वह कू से बैठा हुआ बातें कर रहा था वह लड़की वहाँ आयी।

पर कुछ ही देर बात करने के बाद उसके कुछ कहने पर वह बहुत नाराज हो गयी और अपने कपड़ों में से एक फुट लम्बा चमकता हुआ एक चाकू निकाल लिया। यह देख कर नौजवान डर के मारे वहाँ से भागा और वह लड़की उसके पीछे भागी पर वह तो कहीं गायब हो गया था।

तब उसने अपना चाकू ऊपर हवा में उछाल दिया। "व्हिश।" उस चाकू से इन्द्रधनुष जैसी एक किरन सी निकली और कोई चीज़ आ कर झप से नीचे गिर गयी। कू को रोशनी दिखायी दी तो वह उसको देखने के लिये उठा कि वह क्या चीज़ थी। लो वहाँ तो एक सफेद लोमड़ी पड़ी हुई थी – उसका सिर एक तरफ और धड़ दूसरी तरफ।

लड़की चिल्लायी — "देखो वह तुम्हारा दोस्त है। मुझे पहले ही मालूम था कि वह मुझे अभी या देर से उसको मारने पर मजबूर करेगा।"

कू ने उसको अपने घर के अन्दर खींच लिया — "हम कल तक इन्तजार करते हैं। कल इस बात पर बात करेंगे। तब तक हम लोग शान्त भी हो जायेंगे।"

अगले दिन वह लड़की कू के घर आयी तो कू ने उससे पूछा कि उसका यह जादू[99] कहॉ से आया। तो उसने कू से कहा कि ऐसी चीज़ों के बार में उसको चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। इसके अलावा उसने उससे यह भी कहा कि वह उसको भेद ही रखे तो अच्छा है नहीं तो उसकी खुशियों पर भी असर पड़ सकता है।

उसके बाद कू ने उससे विनती की कि वह उससे शादी कर ले। उसका जवाब उसने यह दिया कि वह तो पहले से ही उसकी मॉ के पास उनकी बहू की तरह से रह रही है और अब उसको और आगे बढ़ने की कोई जरूरत नहीं है।

कू ने पूछा — "क्या यह इसलिये कि मैं बहुत गरीब हूँ?"

लड़की बोली — "मैं भी कोई अमीर नहीं हूँ। पर सच्चाई तो यह है कि अच्छा है हम अलग अलग ही रहें।"

उसके बाद उसने उससे विदा ली और चली गयी। अगली शाम जब कू उसके पास फिर से यह कहने के लिये गया कि वह उससे शादी कर ले उसने देखा कि वह तो वहॉ थी ही नहीं। उसको फिर कभी नहीं देखा गया।

यह लोक कथा यह नहीं बताती कि क्या वह लड़की भी कोई लोमड़ी थी। इसके अलावा उसके घर में तो उसकी मॉ भी थी तो वह कहॉ गयी आदि आदि।

[99] Translated for the words "Black Art"

24 भला साथी[100]

एक बार की बात है कि शी नाम का एक आदमी था जो बहुत अमीर तो नहीं था पर उसको शराब बहुत अच्छी लगती थी। और इतनी अच्छी लगती थी कि बिना तीन पैग पिये वह रात को ठीक से सो नहीं सकता था। इसलिये उसके बिस्तर के पास ही शराब की बोतल रखी रहती।

एक रात उसकी आँख खुली और उसने करवट बदली तो उसे लगा कि उसके साथ उसके बिस्तर में कोई मौजूद था पर बाद में यह सोचते हुए कि उसके अपने कपड़े ही फिसल गये होंगे उनको महसूस करने के लिये अपना हाथ बाहर निकाला तो उसके हाथ ने कुछ रेशमी सी चीज़ जैसे कोई बिल्ली महसूस की।

उसने रोशनी की तो उसने देखा कि वह तो एक लोमड़ा था। वह तो ऐसी बेहोशी की नींद सो रहा था जैसे कुत्ता सोता है। फिर उसने अपनी शराब की बोतल की तरफ देखा तो उसने देखा कि उसकी तो बोतल भी खाली पड़ी थी।

वह हँसते हुए बोला — "ओह मेरे भले का साथी।"

[100] Boon Companion – a folktale from China, Asia. Taken from the Book "Myths and Legends of China" by ETC Werner. London, George E Harrap. 1922. Available at the Web Site : http://www.gutenberg.org/files/15250/15250-h/15250-h.htm#d0e5705

उसने उसको जगाना ठीक नहीं समझा। बल्कि उसने उसको चादर ओढ़ा दी और उसके ऊपर हाथ रख कर फिर से सो गया। रोशनी उसने जली छोड़ दी ताकि अगर वह अपना रूप बदले तो उसे पता चल जाये।

आधी रात के समय उस लोमड़े ने ॲगड़ाई ली तो शी ने उससे पूछा — "क्या तुम्हें रात को नीद ठीक से आयी?"

फिर उसने अपने कपड़े उघाड़े तो देखा कि एक बहुत ही शानदार नौजवान एक विद्वान की पोशाक पहने खड़ा हुआ है। इतने में वह नौजवान कूद कर खड़ा हो गया उसने नीचे तक सिर झुका कर अपने मेजबान को अपना सिर न काटने के लिये धन्यवाद दिया।

शी बोला — "ओह मुझे तो खुद ही शराब बुरी नहीं लगती बल्कि लोगों का कहना है कि मैं शराब बहुत पीता हूॅ। अगर तुम्हें कोई ऐतराज न हो तो हम लोग शराब की बोतल और गिलास की तरह के साथी हो जायें।"

सो वे लोग लेट गये और फिर से सो गये। शी ने नौजवान से कहा कि वह उससे अक्सर मिलता रहे और उन लोगों को आपस में एक दूसरे के ऊपर विश्वास भी रखना चाहिये।

लोमड़ा इस सबके लिये राजी हो गया पर जब शी सुबह को जागा तो उसने देखा कि उसके बिस्तर का साथी तो उसके जागने से पहले ही गायब हो चुका था।

इसलिये उसने उसके आने की खुशी में बहुत बढ़िया शराब का एक गिलास बनाया। रात हुई तो वह फिर से उसके पास आया। दोनों ने साथ साथ मिल कर शराब पी फिर लोमड़े ने उसे बहुत सारे चुटकुले सुनाये।

शी बोला कि उसको दुख है कि उससे उसकी जान पहचान पहले क्यों नहीं हुई। नौजवान फिर बोला कि उसे नहीं मालूम कि वह उसने जो शराब उसके लिये बनायी और पिलायी उसका बदला उसे वह कैसे चुकाये।

शी बोला “अरे यह एक पिन्ट शराब क्या चीज़ थी। इसकी तो बात करने की भी जरूरत नहीं है।”

लोमड़ा बोला — “तुम तो एक गरीब विद्यार्थी हो और पैसा कमाना आसान नहीं है। मैं देखता हूँ अगर मैं तुम्हारे लिये कुछ अच्छी शराब ढूँढ सकता हूँ या नहीं।”

अगले दिन जब वह शी के घर आया तो उसने शी से कहा — “यहाँ से दक्षिण पूर्व की ओर दो मील नीचे की तरफ तुमको सड़क पर चाँदी के दो ढेर पड़े मिलेंगे। उससे तुम खाने के लिये कुछ खरीद सकते हो। कल सुबह तुम जल्दी ही उधर चले जाना और उन्हें ले आना।”

सो अगले दिन सुबह को शी जल्दी जल्दी तैयार हुआ और चाँदी लाने के लिये चल दिया। वहाँ पहुँचा तो उसको वहाँ चाँदी के

दो ढेर मिल गये। उनसे उसने अपनी शाम की शराब के साथ खाने के लिये कुछ खाना खरीद लिया।

शाम को जब लोमड़ा शी के घर आया तो उसने शी से कहा कि उसके घर के पीछे वाले हिस्से में एक तिजोरी है जिसको उसे खोल लेना चाहिये। जब उसने उसे खोला तो उसमें उसे करीब **100** स्ट्रिंग[101] नकद मिले।

शी तो उसे देख कर खुशी से चिल्ला पड़ा। अब तो मेरे पास इतना पैसा है कि मुझे और शराब खरीदने के लिये पैसे की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।

लोमड़ा बोला — "गड्ढे में पानी तो नपा तुला ही होता है न। मुझे तुम्हारे लिये कुछ और करना चाहिये।"

कुछ दिन बाद लोमड़े ने शी से कहा — "देखो आजकल बाजार में कूटू[102] बहुत सस्ता है। हमको इस दिशा में कुछ सोचना चाहिये।"

सो शी ने **40** टन कूटू खरीद लिया। इससे उसकी बड़ी हँसी हुई। पर धीरे धीरे अकाल की सी हालत हो गयी और सब तरह के अनाज और दालें खराब हो गयीं। केवल कूटू ही उगा। इससे शी ने उस कूटू को **1000** फ़ी सदी फायदे पर बेचा।

---

[101] About 10 Sterling Pounds

[102] Translated for the word "Buckwheat". In India it is normally eaten during fasting days. See its picture above.

इससे उसकी सम्पत्ति बढ़ने लगी। उस पैसे से उसने **200** एकड़ जमीन खरीद ली जिस पर लोमड़े की सलाह पर उसने उसमें बहुत सारा अनाज जैसे मक्का बाजरा गेहूँ आदि बोये।

लोमड़ा शी की पत्नी को अपनी बहिन समझता था और उसके बच्चों को अपने बच्चों की तरह से प्यार करता था। पर बाद में जब शी मर गया तब उसने उसके घर आना छोड़ दिया।

25 अलकैमिस्ट[103]

एक बार की बात है कि चॉग एन[104] जगह में चिया जू लुंग[105] नाम का एक आदमी रहता था। वह एक बहुत बड़ा विद्वान था।

एक दिन उसने एक बड़ा सभ्य सा दिखायी देने वाला अजनबी देखा। उसने उसके बारे में पूछताछ की तो पता चला कि वह कोई मिस्टर चेन था जो बड़ी मुश्किल में रह रहा था।

चिया उसके घर गया और अपना कार्ड अन्दर भिजवाया पर वह उससे मिल न सका। वह उस समय घर से बाहर गया हुआ था। ऐसा तीन बार हुआ। आखिर चिया ने किसी आदमी को कह कर रखा कि वह उसके घर की निगरानी करे और उसे बताये कि कि मिस्टर चेन कब घर पर था।

इसके बाद भी चेन अपने मेहमान को बुलाने के लिये नहीं आया। तब चिया को ही उसके घर के अन्दर जाना पड़ा और उसको बाहर लाना पड़ा।

दोनों में बातचीत शुरू हुई और जल्दी ही एक दूसरे के पहचान वाले हो गये। दोनों ने एक दूसरे को मोह लिया।

---

[103] Alchemist – a folktale from China, Asia. Taken from the Book "Myths and Legends of China" by ETC Werner. London, George E Harrap. 1922. Available at the Web Site : http://www.gutenberg.org/files/15250/15250-h/15250-h.htm#d0e5705

[104] Chang-an – name of a place

[105] Chia Tzu Lung

चिया ने एक नौकर को शराब खरीदने के लिये पास की शराब की दूकान पर भेजा। मिस्टर चेन एक भला साथी साबित हुआ और जब शराब करीब करीब खत्म हो गयी तो वह एक बक्से की तरफ गया उसमें से कुछ शराब के प्याले निकाले और एक बहुत सुन्दर जेड का बड़ा सा प्याला निकाला।

उसने एक छोटे प्याले से बड़े वाले प्याले मे एक प्याला शराब पलटी तो वह बड़ा वाला प्याला तुरन्त ही ऊपर तक भर गया। तब उन्होंने उस बड़े प्याले से अपने आप ही ले ले कर शराब पी। पर वे उसमें से कितनी भी शराब निकालते मगर उस प्याले की शराब तो खत्म होती नजर नहीं आती।

चिया तो यह देख कर दंग रहा गया। उसने मिस्टर चेन से विनती की कि वह इसका राज़ उसे बता दे।

मिस्टर चेन बोले — "आह। मैं तुमसे मिलने के लिये इसी लिये बचता रहा क्योंकि तुममें एक बहुत बड़ी बुराई है और वह यह कि तुम बहुत बड़े लालची हो। यह कला जो मैं इस्तेमाल करता हूँ यह केवल अमर लोगों को ही मालूम है। तो इसे मैं तुम्हें कैसे बता सकता हूँ।"

चिया फिर बोला — "यह तुम मेरे साथ गलत कर रहे हो कि तुम मुझे लालची कह रहे हो। तो गरीब लोग तो हमेशा से ही लालची होते हैं।"

मिस्टर चेन हॅसे और उस दिन के लिये उससे विदा ली पर उस दिन के बाद वे हमेशा साथ ही रहे। सारा काम वे एक साथ करते थे। चिया को जब भी पैसे की जरूरत होती तो मिस्टर चेन अपना काला पत्थर लाते कुछ जादू पढ़ते और किसी भी टाइल या ईंट से उसे रगड़ते तो वह चॉदी में बदल जाती।

यह चॉदी वह चिया को दे देते और वह बस उतनी ही होती जितनी कि चिया को जरूरत होती – न तो कम न ज़्यादा। और अगर कभी चिया और मॉगता तो मिस्टर चेन उसको उसके लालचीपने पर एक भाषण दे देते।

आखिर एक दिन चिया ने उस पत्थर को लेने का प्लान बनाया। एक दिन जब मिस्टर चेन शराब पी कर धुत पड़े सो रहे थे तो उसने उसे उनके कपड़ों में से निकालने की कोशिश की। पर मिस्टर चेन को तुरन्त ही पता चल गया। वे बोले कि उस समय से उनकी दोस्ती खत्म और वह वह जगह छोड़ कर चले गये।

इस घटना के एक साल बाद चिया एक दिन नदी के किनारे घूम रहा था कि वहॉ उसने एक बहुत सुन्दर पत्थर देखा। यह पत्थर वैसा ही था जैसा कि मिस्टर चिया के पास था। उसने उसको एकदम पहचान लिया और उसे उठा कर उसको अपने घर ले गया।

कुछ दिन बीत गये कि अचानक मिस्टर चेन चिया के घर आये और चिया को बताया कि उस पत्थर में इतनी ताकत थी कि वह किसी भी चीज़ को सोने में बदल सकता था। वह उनको एक ताओ

पुजारी ने बहुत पहले कभी दिया था जब वह उस पुजारी के शिष्य थे। अफसोस फिर मुझसे वह खो गया पर दैवीय ताकत ने मुझे बता दिया कि वह वहाँ है तो अगर तुम उसको मुझे ला कर दे दोगे तो मैं तुम्हारी मेहरबानियों का बदला चुका दूँगा।"

चिया बोला — "तुम्हें दैवीय ताकत ने ठीक बताया है। वह पत्थर मेरे पास है। अगर तुमको याद हो तो गरीब कुआन चुंग[106] ने अपने दोस्त पाओ शू[107] की सम्पत्ति बाँटी थी।"

मिस्टर चेन को इशारा मिल गया था। यह सुन कर वह बोले — "मैं तुम्हें उसके लिये 100 औंस चाँदी दूँगा।"

चिया बोला — "ठीक है यह तो अच्छा प्रस्ताव है।" और उसने उनसे कहा कि वह उसको जितनी जल्दी से जल्दी हो सके वह जादू सिखा दे जिसको पढ़ कर वह उससे खुद सोना बना सके।"

पर मिस्टर चेन को डर लग रहा था। इस पर चिया बोला — "तुम तो खुद अमर हो। तुमको तो पता होना चाहिये कि मैं एक दोस्त को कभी धोखा नहीं दूँगा।"

सो मिस्टर चेन को वह जादू उसे बताना पड़ा। तब चिया उसे एक बहुत बड़े कपड़े धोने वाले पत्थर पर आजमाने के लिये ले गया। जब वह उसको उस पत्थर पर आजमाने जा ही रहा था जो

---

[106] Kuan Ching

[107] Pao Shu – and Kuan Chung were two statesmen during the 7th century BC.

वहीं पास में ही पड़ा हुआ था तो मिस्टर चेन ने उसका हाथ पकड़ लिया और विनती की कि वह इतना बड़ा काम न करे।

तब चिया ने एक ईंट उठायी और उसको उस कपड़े धोने के पत्थर पर रखा और मिस्टर चेन से कहा — "मुझे लगता है कि यह छोटा सा टुकड़ा तो कोई ज़्यादा नहीं है।"

सो मिस्टर चेन ने उसके हाथ पर से अपनी पकड़ ढीली कर ली और चिया को वह करने दिया जो वह करना चाहता था। बस चिया ने उस आधी ईंट को तो अनदेखा कर दिया और जल्दी से वह काला पत्थर जादू के शब्द पढ़ कर कपड़े धोने वाले पत्थर पर मल दिया।

जब मिस्टर चेन ने चिया को यह करते देखा तो वह तो पीले पड़ गये और उससे वह काला पत्थर छीनने के लिये उसकी तरफ दौड़े। पर तब तक तो बहुत देर हो चुकी थी। वह कपड़े धोने वाला पत्थर तो खालिस ठोस चॉदी का बन चुका था। चिया ने चुपचाप वह पत्थर मिस्टर चेन को वापस दे दिया।

मिस्टर चेन ने करीब करीब रोते हुए कहा "उफ़ अब क्या करें? अगर धरती के किसी आदमी को इतनी सारी सम्पत्ति अचानक ही दे दी जाये तो उसके लिये भगवान मुझे जरूर ही सजा देगा। ओह काश तुम मुझे बचा सकते। तुम ऐसा करो कि **100** ताबूत[108] और **100** सूट बनवा कर दान में दे दो।"

[108] Translated for the word "Coffin". See its picture above.

चिया बोला — "दोस्त। पैसा पाने का मेरा उद्देश्य कंजूस की तरह उसको इकट्ठा कर के रखना नहीं था।"

मिस्टर चेन को यह सुन कर बड़ी तसल्ली सी हुई। अगले तीन सालों में चिया ने उस पैसे से खूब व्यापार किया। उसने मिस्टर चेन से किया गया अपना वायदा निभाया।

तीन साल के बाद मिस्टर चेन फिर से चिया के पास आये और चिया का हाथ पकड़ कर उससे कहा — "ओ मेरे अच्छे दोस्त तुम वाकई विश्वास करने लायक हो।

जब हम लोग अलग हुए थे तब "खुशी की आत्मा"[109] ने मुझे भगवान के सामने बहुत बेइज़्ज़त किया था और मेरा नाम देवदूतों[110] की लिस्ट से निकाल दिया गया था पर क्योंकि अब तुमने मेरी विनती मान ली है तो भगवान ने मेरी वह सजा माफ कर दी है। जैसे तुमने शुरू किया था अब तुम वैसे ही बिना रुके करते रहो।"

चिया ने मिस्टर चेन से पूछा कि स्वर्ग में उसका क्या काम था। यानी वह वहाँ क्या करता था।

मिस्टर चेन बोले — "मैं तो वहाँ केवल एक लोमड़ा था जो अपनी पापरहित ज़िन्दगी की वजह से सत्य को साफ तरीके से पहचान सका था जो अमरता की तरफ ले जाता है।"

---

[109] Spirit of Happiness

[110] Translated for the word "Angels"

उसके बाद शराब मँगवायी गयी। दोनों दोस्तों ने उसे आनन्द ले कर एक साथ बैठ कर पिया जैसे पहले पिया करते थे।

चिया जब तक **90** साल का भी हो गया तब तक भी वह लोमड़ा उसके घर आता रहा।

List of Tales of "Folktales of China-1"

1. The Magic Peer Tree
2. The Magic Pillow
3. The Tiger's Teacher
4. The New Shoes
5. Tikki Tikki Tembo
6. A Chinese Fairy Tale
7. Ching, Chang and the Piece of Gold
8. Dorothy and the Seed of Apple
9. A Monk and a Student
10. A Greedy Man and a Large Grain of Rice
11. The Monkey's Drum
12. Lady of the Moon
13. Ow and Ouch
14. The Nightingale
15. Numg Gwama
16. The Story of the Cowherd and the Weaver Girl
17. The Island of the Sun
18. A Dreadful Boar
19. The Great Bell
20. The Strange Tale of Doctor Dog
21. Friendship With Foxes
22. Marriage Lottery
23. Magninamous Girl
24. Boon Companion
25. Alchemist

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2021

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाऐं जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022